

कर्मसाहित्ये निष्णाताः प्रेरका मार्गदर्शकाः संशोधकाश्च
सिद्धान्तमहोदधय आचार्य भगवन्तः (ग्रन्थ ३२)

श्रीमद्विजयप्रेमसूरीश्वराः
गणिवर्य श्रीवीरशेखरविजयरचितं
सत्ताविहाणं

तत्र

मूलपयडिसत्ता

तथा

तत्र

स्वोपज्ञ-हीरसौभाग्यभाष्यम्

तथा

स्वोपज्ञहीरसौभाग्यभाष्यसंवल्लितां

मूलपयडिसत्ता

परिशिष्टद्वयोपेता



भारतीय प्राच्यतत्व प्रकाशन समिति पिंडवाडा

॥ श्रीशङ्खेश्वरपार्श्वनाथाय नमः ॥

॥ श्री आत्म-कमल-वीर-दान-प्रेम-होरसूरीश्वरसद्गुरुभ्यो नमः ।
भारतीय प्राच्य तत्त्व प्रकाशन समिति पिण्डवाडा संचालिताया
आचार्यदेवश्रीमद्विजयप्रेमसूरीश्वरकर्मसाहित्यजैनग्रन्थमालाया

द्वात्रिंशो (३२) ग्रन्थः

कर्मसाहित्ये निष्णाताः प्रेरका मार्गदर्शकाः संशोधकाश्च

सिद्धान्तमहोदधय आचार्यभगवन्तः

श्रीमद्विजयप्रेमसूरीश्वराः

गणिवर्यश्रीवीरशेखरविजयरचितं

सत्ताविहाशं

तत्र

मूलपयडिसत्ता

तथा

तत्र

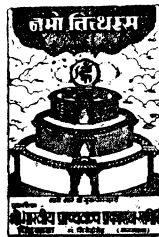
स्वोपज्ञ-हीरसौभाग्यभाष्यम्

तथा

स्वोपज्ञहोरसौभाग्यभाष्यसंवलित

मूलपयडिसत्ता

परिशिष्टद्वयोपेता



प्रकाशिका—भारतीय-प्राच्य-तत्त्व-प्रकाशन-समिति, पिण्डवाडा ।

प्रथम आवृत्ति:-
प्रति ५००

राजसंस्करण-१५) रु०

वीर संवत् २५१३
विक्रम संवत् २०४३

✱ प्राप्तिस्थान ✱

भारतीय-प्राच्यतत्त्व-प्रकाशन-समिति

/० रमणलाल लालचंद शाह

१३५/१३७ झवेरी बाजार, बम्बई २

•

भारतीय-प्राच्यतत्त्व-प्रकाशन-समिति

C/o शा. समरथमल रायचंदजी

पिंडवाडा (राज०)

स्टे. सिरोही रोड (W. R.)

•

भारतीय-प्राच्यतत्त्व-प्रकाशन-समिति

शा. रमणलाल वजेचन्द,

C/o दिलीपकुमार रमणलाल

मस्कती मार्केट,

अहमदाबाद २.

•

मुद्रक—

ज्ञानोदय प्रिंटिंग प्रेस, पिंडवाडा

स्टे.-सिरोहीरोड (W. R.)



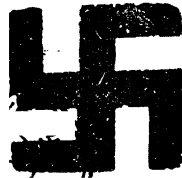
मूलग्रन्थकृद् भाष्यग्रन्थकृतसम्पादकश्च

॥

प्रवचनकौशल्याधार-सिद्धान्तमहोदधि-सुविशालगच्छाधिपति-
परमशासनप्रभावक-कर्मसाहित्यनिष्णात-परमपूज्य-स्वर्गता-
ऽऽचार्यदेवेशश्रीमद्विजयप्रेमसुरीश्वरविनीताऽन्तेवासि-
निःस्पृहशिरोमणि-गीतार्थमूर्धन्य-परम-पूज्या-ऽऽ
चार्यदेव-श्रीमद्विजयहीरसूरीश्वरशिष्य-
गणिवर्यश्रीललितशेखरविजयशिष्य-
गणिवर्यश्रीराजशेखरविजय-

शिष्यः

गणिवर्यश्रीवीरशेखरविजयः



First Edition } copies 500 }	DELUXE EDITION RS. 15 {	A.D. 1987
---------------------------------	-------------------------	-----------

/// ● ● ● ///

AVAILABLE FROM

/// ● ● ///

1. Bharatiya Prachya Tattva Prakashana Samiti,
C/o. Shah Ramanlal Lalchand,
135/137 Zaveri Bazaar
BOMBAY - 400 002
(INDIA)
 2. Bharatiya Prachya Tattva Prakashana Samiti
C/o. Shah Samarathmal Raychandji,
PINDWARA, 307022 (Raj.)
(INDIA)
 3. Bharatiya Prachya Tattva Prakashana Samiti
Shah Ramanlal Vajechand,
C/o Dilipkumar Ramanlal,
Maskati Market,
AHMEDABAD-380002
(INDIA)
- Printed by :-
Gyanodaya Printing Press
PINDWARA. (Raj.)
St. Sirohi Road, (W.R.)
(INDIA)

Acharyadeva-Shrimad-Vijaya-Premasurishwarji
Karma-Sahitya-Granthmala

GRANTH NO. 32
SATTA VIHANAM
MOOL PAYADI SATTA
AND
HEER SOABHAGYA BHASHYA
AND
SATTA VIHANAM
MOOL PAYADI SATTA
Along With HEER SOABHAGYA BHASHIYA
WITH TWO APPENDICES
By
GANIVARYA SHRI
VEERSHEKHAR VIJAYA MAHARAJA
卐
Inspired and Guided by
His Holiness Acharya Shrimad Vijaya
PREMASURISHWARJI MAHARAJA
the leading authority of the day
on Karma Philosophy.

Published by -
Bharatiya Prachya Tattva
Prakashana Samiti, Pindwara (INDIA)

❁ प्रकाशकीय निवेदन ❁

हमें यह निवेदन करते हुए अपरिमित हर्ष की अनुभूति हो रही है कि सन् १९६६ में अहमदाबाद में हमारी भारतीय प्राच्य-तत्त्व प्रकाशन समिति द्वारा सर्व प्रथम तत्प्रकाशित कर्म साहित्य के आद्य दो ग्रन्थरत्नों का विशाल कुंकुमपत्रिका, अनेकविध पत्रिकाओं और पुस्तिकाओं आदि के द्वारा अत्यन्त विराट्काय एवं भव्य समारोह में विमोचन किया गया था। उस अवसर पर दोनों ग्रन्थरत्नों को गजराज पर विराजमान कर, विराट मानव समुदाय के साथ, अनेकानेक साजों से अलंकृत बड़ा भारी जुलूस निकाला गया था। सिद्धराज जयसिंह ने सिद्धहेम व्याकरण का भव्य जुलूस निकाला था, उसके बाद सम्भवतः यही सर्वप्रथम साहित्य-प्रकाशन का ऐसा भव्य जुलूस होना चाहिये। इन प्रकाशनों के उपलक्ष में प्रकाश हाई स्कूल में विशाल पैमाने पर प्राचीन तथा अर्वाचीन जैन साहित्य की विविध सामग्री की पृथक्-पृथक् विषयान्तर्गत एक भव्य एवं विराट् प्रदर्शनिका भी आयोजित की गयी थी एवं प्रबल जनग्रह के कारण प्रदर्शनिका की अवधि दो तीन दिनों के लिए बढानी पडी थी। जुलूस के उपरान्त प्रकाश हाई स्कूल के विशाल प्रांगण में सुशोभित मंडप

में चतुर्विध संघ की प्रचुर उपस्थिति में नानाविध कार्यक्रमों के साथ ग्रन्थरत्नों का विमोचन किया गया, जिससे सामान्य जनता एवं बुद्धिजीवी लोग प्रचुररूपेण जैन साहित्य की ओर आकृष्ट हुए, जैन साहित्य के दर्शन से भी लोग प्रभावित हुए तथा उक्त समिति के सदस्यों में भी अपूर्व उत्साह, ओज व उमंग का संचरण हुआ ।

अथक प्रयासों के परिणामस्वरूप स्वर्गीय परम पूज्य आचार्य भगवन्त श्रीमद् विजयप्रेमसूरीश्वर महाराज साहब से प्रेरित कर्मसाहित्य के २५ ग्रन्थ आज तक तैयार हो गये हैं तथा और भी तैयार हो रहे हैं । इनके अतिरिक्त अन्य भी अर्वाचीन एवं प्राचीन छोटे बड़े लगभग २५ से ३० ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं । बन्धविधान महाशास्त्र के सभी भाग मुद्रित होने से सम्पूर्ण बन्धविधान सटीक मुद्रित हो चुका है एवं आज आपके कर कमलों में 'मूलप्रकृतिसत्ता' तथा 'हीरसौभाग्यभाष्यम्' तथा 'हीरसौभाग्यभाष्य-संवलित मूलप्रकृतिसत्ता' का मुद्रण समर्पित कर रहे हैं ।

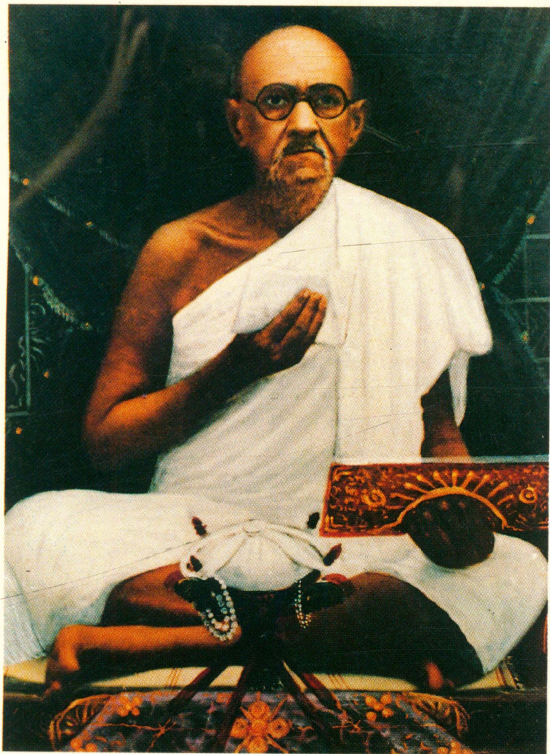
इसके साथ ही सत्ताविधान महाग्रन्थ के 'भाष्यचूर्णिवृत्तियुता मूलप्रकृतिसत्ता' और उनका 'पूर्वार्धः', 'उत्तरार्धः' तथा भाष्यतृतीयांशः 'चूर्णियुता मूलप्रकृतिसत्ता' 'भाष्ययुता मूलप्रकृतिसत्ता' 'मूलप्रकृतिसत्ता' 'कर्म-प्रकृतिकीर्तनम्' 'मार्गणाः' 'जीवभेदप्रकरणम्' 'काय-स्थितिभवेतिप्रकरणम्' 'द्रव्यपरिमाणम्(१)' 'द्रव्य-

परिमाणम् (१)' 'द्रव्यपरिमाणम् (२)' 'क्षेत्रस्पर्शना-
प्रकरणम्' 'भवस्थितिः (१)' 'भवस्थितिः (२)'
'प्रकरणानि' आदि का भी मुद्रण हम आपके कर कमलों में
प्रस्तुत कर रहे हैं ।

इससे पूर्व भी हमारी संस्था द्वारा 'प्राचीनाः चत्वारः
कर्मग्रन्थाः' 'सप्ततिका नामनो लुप्तो कर्मग्रन्थ' '१ थो
५ कर्मग्रन्थ' आदि छोटे बड़े ग्रन्थ भी प्रकाशित हुए हैं ।

आज तक इस समिति द्वारा प्रकाशित किये गये
समस्त ग्रन्थरत्नों की आधार शिला दिवंगत परम पूज्य
आचार्य भगवन्त श्रीमद् विजय प्रेमसूरीश्वर महाराज
साहब हैं, जिनकी सतत सत्प्रेरणा, मार्गदर्शन, प्रस्तुत
साहित्य का उद्धार करने की अदम्य उत्कंठा और कालो-
चित अथक परिश्रम से ही प्रस्तुत ग्रन्थरत्नों का जन्म हुआ
हे तथा इन्हीं महापुरुष के शुभाशीर्वाद से हम ग्रन्थरत्नों के
प्रकाशन के महत्कार्य में उत्तरोत्तर साफल्य की ओर पदार्पण
कर रहे हैं । इन्हीं महात्मा ने हमारी संस्था को कर्मसाहित्य
के इन ग्रन्थरत्नों के प्रकाशन का लाभ देकर अनुगृहीत
किया । अतः हम इनके ऋणी हैं और इस ऋण से कभी
भी उन्मृष्ट नहीं हो सकते । अतः ऐसे परमोपकारी महा-
विभूति आचार्य भगवन्त श्रीमद् विजयप्रेमसूरीश्वर
महाराज साहब का हम नतमस्तक कोटि-कोटि वन्दन करते
हुए, इनके प्रति अवर्ण्य आभार प्रदर्शित कर रहे हैं ।

सकलागम रहस्यवेदि सूरिपुरन्दर
बहुश्रुत गीतार्थ — परज्योतिर्विद् परमगुरुदेव



परम पूज्य आचार्य देवेश श्रीमद्
विजय दान सूरेश्वरजी महाराजा

प्रस्तुत ग्रन्थरत्न के प्रणेता परम पूज्य गणिवर्य श्री-वीरशेखरविजय महाराज साहब का हम सवन्दन आभार मानते हैं। आपके अथक, अविरत, अविरल, एवं सतत परिश्रम के फलस्वरूप ही हम इस ग्रन्थरत्न को पाठकों के करकमलों में समर्पित करने में सक्षम रहे हैं।

मुद्रण करने में संस्था के निजी ज्ञानोदय प्रिन्टिंग प्रेस के मेनेजर श्रीयुत शंकरदास एवं उनके अन्य कर्मचारी गण भी धन्यवाद के पात्र हैं।

इसके अतिरिक्त जिस किमी ने भी जिस किसी भी तरह से प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से ग्रन्थ-प्रकाशन में सहायता की हो, उन सभी महानुभावों के प्रति हम अपना हार्दिक आभार प्रदर्शित करते हैं।

द्रव्यसहायक-शा. तेजमल जवेरचन्दजी सुपुत्र हरखचन्द (पिंढवाडा निवासी) ने श्रुतभक्ति से अनुप्रेरित एवं अनुप्राणित होकर इस ग्रन्थरत्न के मुद्रण में द्रव्यराशि के सम्यक् सहयोग से यथोचित योगदान किया है, अतः हम इनके प्रति ऋणी एवं आभारी हैं।

नजदीक भविष्य में और प्रकाशन की आशा में

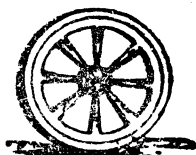
भवदीय—

- (i) पिंडवाडा
स्टे. सिरौहीरोड (राजस्थान) शा. समरथमल रायचन्दजी (मंत्री)
- (ii) १३५/१३७ जौहरी
बाजार बम्बई-२ शा. लालचन्द छगनलालजी (मंत्री)

भारतीय-प्राच्य-तत्त्व प्रकाशन समिति

❀ समिति का ट्रस्टी मंडल ❀

- (१) शेठ रमणलाल दलसुखभाई (प्रमुख) खंभात
- (२) शा. खूबचंद अचलदासजी पिंडवाडा
- (३) शा. समरथमल रायचन्दजी मंत्री पिंडवाडा
- (४) शा. लालचंद छगनलालजी मंत्री पिंडवाडा
- (५) शेठ रमणलाल वजेचन्द अहमदाबाद ।
- (६) शा. हिम्मतमल रुगनाथजी बेडा
- (७) शेठ जेठालाल चुनीलाल घीवाले बम्बई
- (८) शा. जयचन्द भबुतमलजी पिंडवाडा



विषयानुक्रमणिका

अथ मूलपयडिसत्ता १-२०

विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
मङ्गलाचरणम्	१	परस्थानात्पबहुत्वम्	१२-१४
सत्ताभेदाः	१	२ स्थानाधिकारः	१४-१८
ओघा-ऽऽदेशनिरूपण-		१ सत्पदद्वारम्	
प्रतिज्ञा	१	२ स्वामित्वद्वारम्	
पञ्चाधिकाराः १-२०		३ साद्याद्वारम्	
१ प्रकृत्यधिकारः	१-१४	४ कालद्वारम्	
१ सत्पदद्वारम्	२	५ अन्तरद्वारम्	
२ स्वामित्वद्वारम्	२-३	६ मङ्गलविचयद्वारम्	
३ साद्याद्वारम्	३	७ भागद्वारम्	
४ कालद्वारम्	३-४	८ परिमाणद्वारम्	
५ अन्तरद्वारम्	४	९ क्षेत्रद्वारम्	
६ सन्निकर्षद्वारम्	४-५	१० स्पर्शनाद्वारम्	
७ मङ्गलविचयद्वारम्	६	११ कालद्वारम्	
८ भागद्वारम्	६-७	१२ अन्तरद्वारम्	
९ परिमाणद्वारम्	७-८	१३ भावद्वारम्	
१० क्षेत्रद्वारम्	८-९	१४ अल्पबहुत्वद्वारम्	
११ स्पर्शनाद्वारम्	९-१०	३ भूयस्काराधिकारः	१८-१९
१२ कालद्वारम्	१०-११	४ पदनिक्षेपाधिकारः	१९-२०
१३ अन्तरद्वारम्	११-१२	५ वृद्धयधिकारः	२०
१४ भावद्वारम्	१२		
१५ अल्पबहुत्वद्वारम्	१२-१४		
स्वस्थानात्पबहुत्वम्	१२		

अथ हीरसौभाग्यभाष्यम् २१-४८

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
हीरसौभाग्यभाष्यसङ्गला-	
चरणम्	२१
१ कर्मप्रकृतयः	२१-२३
२ मार्गणाः	२३-२५
३ जीवभेदाः	२५-२६
४ कायस्थितिः	२६-३०
भङ्गानयनकरणगाथा	३०
भङ्गानयनकरणान्तरगाथा	३१
५ द्रव्यपरिमाणम् (१)	३१-३६
ओघतो परिमाणम्	३१
ओघतो-उत्पन्नबहुत्वम्	३१
आदेशतः परिमाणम्	३२-३३
आदेशतो-उत्पन्नबहुत्वम्	३३-३६
६ द्रव्यपरिमाणम् (२)	३६-४६
ओघतो गुणस्थानकादि-	
स्थितद्रव्यपरिमाणम्	३६
ओघतो गुणस्थानकादि-	
प्रवेशक-निर्गमकद्रव्यपरिमाणम्	३६
आदेशतो द्रव्यपरिमाणम्	

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
	३६-४४
आदेशतः सामान्यद्रव्य-	
परिमाणम्	३६-३६
आदेशतो गुणस्थानकस्य	
द्रव्यपरिमाणम्	३६-४०
आदेशतो गुणस्थानकादि-	
प्रवेशक-निर्गमद्रव्यपरि-	
माणम्	४०-४१
आदेशतो मार्गणाप्रवेशक-	
निर्गमद्रव्यपरिमाणम्	४१-४२
	४१-४२
आदेशतो गुणस्थानापेक्षया	
मार्गणाप्रवेशक-निर्गमक-	
द्रव्यपरिमाणम्	४२-४४
ओघत उत्पद्यमान-म्रियमाण-	
द्रव्यपरिमाणम्	४४
आदेशत उत्पद्यमान-म्रियमाण-	
द्रव्यपरिमाणम्	४४-४६
७ क्षेत्रम्	४६
८ स्पर्शना	४६-४८

अथ हौरसौभाग्यभाष्यसंवलितः

मूलपयडिसत्ता ४६-९५

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
मूलग्रन्थमङ्गलाचरणम्	४६
सत्ताभेदाः	४६
हौरसौभाग्यभाष्यमङ्गलाचरणम्	४९
१ कर्मप्रकृतयः	४६-५२
ओघादेशप्ररूपणप्रतिज्ञा	५२
२ मार्गणाः	५२-५३
पञ्चाधिकाराः	५३
१ प्रकृत्यधिकारः	५३-८९
१ सत्पदद्वारम्	५३-५४
३ जीवभेदाः	५४-५६
२ स्वामित्वद्वारम्	५६
३ साद्यादिद्वारम्	५६-५७
४ कायस्थितिः	५७-६१
४ कालद्वारम्	६१-६२
५ अन्तरद्वारम्	६२
६ सन्निकर्षद्वारम्	६२-६३
७ भङ्गविचयद्वारम्	६३-६४
भङ्गानयनकरणद्वयम्	६४
८ भागद्वारम्	६४-६५
५ द्रव्यपरिमाणम् (१)	६५-७०
ओघतः परिमाणम्	६५
ओघतोऽपत्पबहुत्वम्	६५-६६
आदेशतः परिमाणम्	६६-६७

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
आदेशतोऽपत्पबहुत्वम्	६७-७०
६ द्रव्यपरिमाणम् (२)	७०-८०
ओघतो गुणस्थानकादिस्थित- द्रव्यपरिमाणम्	७०
ओघतो गुणस्थानकादि- प्रवेशकनिर्गमकद्रव्य- परिमाणम्	७०-७१
आदेशतो द्रव्यपरिमाणम्	७१-७६
आदेशतः सामान्यद्रव्य- परिमाणम्	७१-७४
आदेशतो गुणस्थानकस्थ- द्रव्यपरिमाणम्	७४-७५
आदेशतो गुणस्थानकादि- प्रवेशकनिर्गमकद्रव्य- परिमाणम्	७५
आदेशतो मार्गणाप्रवेशक- निर्गमकद्रव्यपरिमाणम्	७५-७६
आदेशतो गुणस्थानापेक्षया मार्गणाप्रवेशक-निर्गमक- द्रव्यपरिमाणम्	७७-७६
उत्पद्यमान-त्रियमाण- द्रव्यपरिमाणम्	७७-७६
ओघत उत्पद्यमान-त्रियमाण- द्रव्यपरिमाणम्	७९

वषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
आदेशत उत्पद्यमान-त्रियमाण-		७ भागद्वारम्	९१
द्रव्यपरिमाणम्	७६-८८	८ परिमाणद्वारम्	९१
६ परिमाणद्वारम्	८०-८१	९ क्षेत्रद्वारम्	९१
७ क्षेत्रम्	८१	१० स्पर्शनाद्वारम्	९१
१० क्षेत्रद्वारम्	८२	११ कालद्वारम्	६१-६२
८ स्पर्शना	८२-८४	१२ अन्तरद्वारम्	६२
११ स्पर्शनाद्वारम्	८४-८५	१३ भावद्वारम्	९२
१२ कालद्वारम्	८५-८६	१४ अल्पबहुत्वद्वारम्	६२-६३
१३ अन्तरद्वारम्	८६-८७	३ भूयस्काराधिकारः	९३-६४
१४ भावद्वारम्	८७	४ पदनिक्षेपाधिकारः	९४-६५
१५ अल्पबहुत्वद्वारम्	८७-८९	५ वृद्धयधिकारः	६५
स्वस्थानाल्पबहुत्वम्	८७	परिशिष्टद्वयम्	१-१०
परस्थानाल्पबहुत्वम्	८७-८८	प्रथमपरिशिष्टे मूलगाथाद्यांशाः	१-४
२ स्थानाधिकारः	८९१३-	द्वितीयपरिशिष्टे भाष्यगाथा-	५-१०
१ सत्पदद्वारम्	८६	शुद्धिपत्रकम्	११
२ स्वामित्वद्वारम्	८६-८७		
३ साक्षादिद्वारम्	९०		
४ कालद्वारम्	९०		
५ अन्तरद्वारम्	९०		
६ भङ्गविचयद्वारम्	६०-६१		



गणिवर्यश्रीवीरशेखरविजयरचितं

सत्ताविहारं

(सत्ताविधानं)

तत्थ

मूलपयीडिसत्ता

(मूलप्रकृतिसत्ता)

तथा

तत्र

स्वोपज्ञ—

हीरसौभाग्यभाष्यम्

तथा

स्वोपज्ञ—

हीरसौभाग्यभाष्यसंवलित

मूलपयीडिसत्ता

(मूलप्रकृतिसत्ता)

तथा

परिशिष्टद्वयम्

-:श्रध्याञ्जलि :-

जिन्होंने' भवरूपी कूपसे संयमरूपी रज्जु द्वारा बाहर निकाला । और प्रव्रज्यादिन से लेकर बारह साल तक निजी निश्चा में रख कर ग्रहण शिक्षा और आसे-वन शिक्षा के साथ साथ ही संस्कृत-प्राकृतव्याकरण न्याय दर्शन तर्क काव्य कोश छन्द अलङ्कार प्रकरण आगम छेदादि विविधविषयक शास्त्रों के परिशीलन द्वारा सुधारस पीलाया ।

जिन्होंनेकी सतत सत्प्रेरणा और कृपादृष्टिसे ही महोगंभीर और अतिभगीरथ ऐसे कर्मसाहित्य के नव निर्माण में और सम्पादन में तथा प्राचीन कर्मसाहित्य के सम्पादन आदि में आज लगातार २७ साल तक प्रयत्नशील रहा हूं ।

उन कर्मसाहित्य के सूत्रधार सिद्धान्तमहोदधि सच्चारित्रचूडामणि परमशासनप्रभावक सुनिशालगच्छाधिपति परमाराध्यपाद स्वर्गीय-

आचार्य भगवंत-

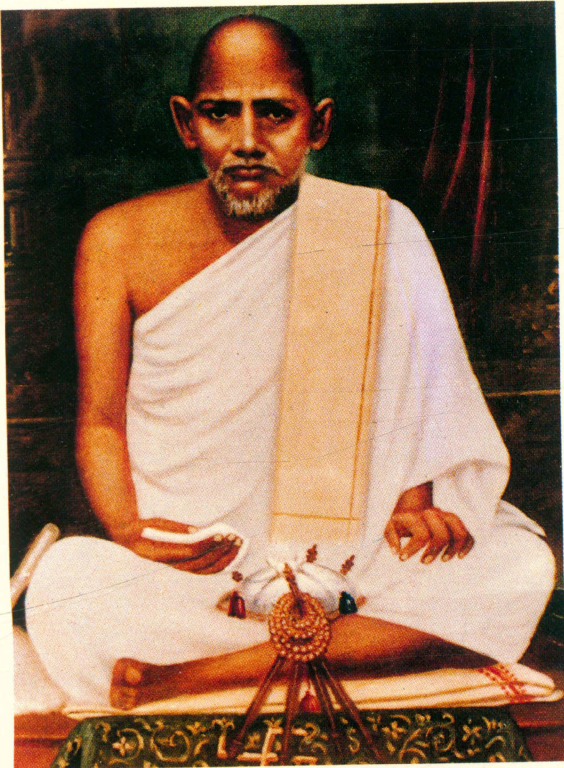
श्रीमद् विजयप्रेमसूरीश्वरजी महाराज

की परम पवित्र स्मृति में



भवदीय कृपेककाङ्क्षी
मुनिवीरशेखरविजय गणी

कर्म साहित्य ग्रंथोना प्रेरक, मार्गदर्शक अने संशोधक
सिद्धान्त महोदधि सुविशाल गच्छाधिपति
कर्मशास्त्र रहस्यवेदी शासन शिरछत्र



स्व. परम पूज्य आचार्य देव श्रीमद्
विजय प्रेम सूर्यश्वरजी महाराजा

નિઃસ્પૃહ શિરોમણિ ગીતાર્થ મૂર્ધન્ય
ગચ્છહિત ચિંતક



સ્વઃ પરમ પૂજ્ય આચાર્યદેવ શ્રીમદ્
જય હીર સૂરીશ્વરજી મહારાજ

॥ श्री शङ्खेश्वरपार्वनाथाय नमः ॥
॥ श्री आत्म-कमल-वीर-दान-प्रेम-हीरसूरीश्वरसद्गुरुभ्यां नमः ॥

मुनिश्रीवीरशेखरविजयरचितं

सत्ताविहाणं

(सत्ताविधानं)

तत्थ

मूलपयडिसत्ता

(मूलप्रकृतिसत्ता)



सत्ताविहाणमुक्कं, सिरिवीरं णमिअ सपरसेयत्थं ।
जहसुत्तं वोच्छं गुरु-किवाअ सत्ताविहाणमिणं ॥१॥
तत्थ चउविहा सत्ता, शेया पयडिठिरसपएसत्तो ।
एक्केका उण दुविहा, मूलुत्तरपयडिभेअत्तो ॥२॥
इह खलु ओहेण तहा, आएसेण जहसंभवं सत्तं ।
वोच्छिहिमु मग्गणासुं, चउसत्तरिउत्तरसयम्मि ॥३॥
मूलपयडिसत्ताए, णायच्चा पयडि-ठाण-भूगारा ।
पयणिक्खेवो वड्डी, पण अहिगारा जहाकमसो ॥४॥
तेसु पयडिआईसुं, अहिगारेसुं हवन्ति दाराणि ।
पणरस चउदस तेरस, तिण्ण य तेरस जहाकमसो ॥५॥

२] सुनिश्रीवीरशेखरविजयचरितं [मूलपयडिसत्तामूलगाथा

अह विण्णोयाणि पयडि-अहिगारम्मि पढमम्मि संतपयं ।
सामित्तसाइआईं, कालंतरसणियासा य ॥६॥
भंगविचयो उ भागो, परिमाणं खेत्तफोसणा कालो ।
अंतरभावप्पवहू, पणरस दाराणि जहकमसो ॥७॥
अट्टण्ह वि कम्माणं, सत्ताऽसत्ताऽत्थि केवलदुगम्मि ।
सत्ताऽत्थि अघाईणं, सेसदुसत्तरिसयेऽट्टण्हं ॥८॥
तिणरदुपंचिदियतम-तिमणवयणकायुरालियदुगेसुं ।
कम्मम्मि संजमे तह, अहखाये सुकभवियआहारे ॥९॥ (गीतिः)
घाईणऽत्थि असत्ता, दुमणवयणजोगणाणचउगेसुं ।
णयणोयरोहिदंसण-सण्णीसुं अत्थि मोहस्स ॥१०॥
गयवेए अकसाये, सम्मत्तम्मि खइए अणाहारे ।
अट्टण्ह वि कम्माणं, केवलजुगले अघाईणं ॥११॥
मोहस्सुवसंतंता, सामी संतस्स खीणमोहंता ।
घाईण अजोगंता-ऽण्णोसिमसंतस्स सच्चहिं सेसा ॥१२॥ (गीतिः)
घाईणं ओघव्व ति-णरदुपणिंदितसत्तिमणवयणोसुं ।
कायोरालियसंजम-ऽहखायसुकभवियेसु आहारे ॥१३॥ (गीतिः)
सव्वे वि अघाईणं, दुमणवयणणाणचउगसण्णीसुं ।
दंसणतिगे य सव्वे, सत्तण्होघव्व मोहस्स ॥१४॥
सव्वे वि अघाईणं, चउण्ह ओरालमीसकम्मेसुं ।
मिच्छो सासणसम्मा, चउण्ह घाईण विण्णोया ॥१५॥

अट्टण्होघव्व भवे, अवेअअकसायसम्मखइएसुं ।
 केवलदुगे सजोगिअ-जोगी णेया अघाईणं ॥१६॥
 घाईण मिच्छसासण-सम्मत्ती होइरे अणाहारे ।
 सेसाण सिद्धवज्जा, अण्ह अट्टण्ह सव्वे वि ॥१७॥
 अट्टण्ह वि कम्माणं, सत्ता णेया अणाइधुवअधुवा ।
 साइधुवाऽत्थि असत्ता, अट्टण्होघव्व अणयणे सत्ता ॥१८॥ (गी०)
 चउहा दुअणाणाजय-मिच्छेसुं अभविये अणाइधुवा ।
 भविये अणाइअधुवा, सेसासुं साइअधुवाऽत्थि ॥१९॥
 साइधुवाऽत्थि असत्ता, अवेअअकसायकेवलदुगेसुं ।
 सम्मत्तखाइएसुं, सप्पाउग्गाण पयडीणं ॥२०॥
 घाईण अणाहारे, साइद्धुवअद्धुवा अघाईणं ।
 साइधुवाऽत्थि असत्ता, सेसासुं साइसंताऽत्थि ॥२१॥
 सत्ताअ अत्थि दुविहो, अणाइणंतो अणाइसंतो य ।
 कालो अट्टण्ह भवे, साइअणंतो असत्ताए ॥२२॥
 गयवेए अकसाये, अहखाये य समयोऽत्थि अट्टण्हं ।
 कालो संतस्स लहू, घाईण गुरु मुहुत्तंतो ॥२३॥
 देसूणपुव्वकोडी, अघाइचउगस्स केवलदुगे से ।
 भिन्नमुहुत्तं हस्सो, भवे गुरु पुव्वकोडंतो ॥२४॥
 सम्मत्तखाइएसुं, अट्टण्ह लहू भवे मुहुत्तंतो ।
 जेट्ठोऽत्थि कमाऽब्भहिया, उदही छासद्धितेत्तीसा ॥२५॥

४] मुनिश्रीवीरशेखरविजयरचितं [मूलपयडिसत्तामूलगाथा

अट्टण्ह अणाहारे, लहू खणोऽण्णो तिखणअजोगिमितो ।
घाइइयराण कमसो-ऽण्णह दुविहो सलहुजेट्ठिई ॥२६॥
सव्वासु मग्गणासुं, शेयो सत्ताअ घाइइयरेमिं ।
लहुगुरुकालो लहुगुरु-छउमत्थभवत्थकायठिई ॥२७॥
तिमणुयदुपणिंदियतस-संजमअहखायसुकभवियेसुं ।
आहारे घाईणं, भिन्नमुहुत्तं लहू असत्ताए ॥२८॥ (गीतिः)
देसूणपुव्वकोडी, जेट्ठो तिमणवयकायउरलेसुं ।
घाईण लहू समयो, शेयो जेट्ठो मुहुत्तंतो ॥२९॥
मोहस्स लहू समयो, दुमणवयेसुं गुरू मुहुत्तंतो ।
घाईण उरलमीसे, लहू खणो दुसमया जेट्ठो ॥३०॥
घाईण कम्मणे खलु, समया तिण्णि दुविहो मुहुत्तंतो ।
णाणचउगदंसणतिग-सण्णीसु हवेज्ज मोहस्स ॥३१॥
अट्टण्ह साइणंतो, अवेअअकसायसम्मखइएसुं ।
तहऽणाहारे शेयो, केवलजुगले अघाईणं ॥३२॥
अट्टण्ह वि कम्माणं, संतअसंताण अंतरं णत्थि ।
एमेव मुणेयव्वं, सप्पाउग्गाण सव्वासुं ॥३३॥
छण्ह णियमाऽज्जसंते, सत्ताऽत्थि सिआ चउत्थकम्मस्स ।
दुइअचरमाण एवं, णियमाऽण्णेसिं तुरिअसंते ॥३४॥
णियमिगअघाइसंते, तिअघाईणं सिआऽण्णचउगस्स । (गीतिः)
घाइतिगस्स असत्ता-ऽज्जअसंतम्मि णियमा सिआऽण्णेसिं ॥३५॥

दुइअचरमाण एवं, तुरिअअसंते सिआऽण्णसत्तण्हं ।
 एगअघाइअसंते, णियमा सेसाण सत्तण्हं ॥३६॥
 संतस्स सण्णियासो, अट्ठण्होघव्व अत्थि तिणरेसुं ।
 दुपणिदितसेसुं तह, तिमणवयणकायजोगेसुं ॥३७॥
 ओरालिये अवेए, अकसाये संजमे अहक्खाये ।
 सुक्काए भविये तह, सम्मे खइअम्मि आहारे ॥३८॥
 दुमणवयणचउणाणति-दंसणसण्णीसु मोहसत्ताए ।
 अण्णेसिं णियमाऽण्णिग-संते छण्ह तुरिअस्स सिआ ॥३९॥
 णियमेगघाइसंते, सत्तण्हऽण्णाण उरलमीसम्मि ।
 कम्माणाहारेसुं, अघाइचउगस्स ओघव्व ॥४०॥
 सेसासु एगसंते, णियमाऽण्णेसिं भवे असंतस्स ।
 अट्ठण्होघव्व भवे, अवेअकमायसम्मखइएसुं ॥४१॥ (गीतिः)
 तिमणुयदुपणिदियतस-तिमणवयणकायउरलजोगेसुं ।
 संजमअहक्खायेसुं, सुक्काभवियेसु आहारे ॥४२॥
 मोहअसंते तिण्हं, सिआ असत्ता हवेज्ज घाईणं ।
 सेमिगघाइअसंते, सेसतिघाईण णियमाऽत्थि ॥४३॥
 णियमिगघाइअसंते, घाइतिगम्सुरलमीसकम्मेसुं ।
 एमेव केवलदुगे, अघाइचउगस्सऽणाहारे ॥४४॥
 णियमिगघाइअसंते-ऽण्णतिघाईणं सिआ अघाईणं ।
 एगअघाइअसंते, णियमाऽण्णेसिं ण सेसासुं ॥४५॥

६] मुनिश्रीवीरशेखरविजयरचितं [मूलपथडिसत्तामूलगाथा

अट्टण्ह संतकम्मा, असंतकम्मा हवेज्ज नियमाओ ।
अट्टण्ह संतकम्मा, अपज्जणरविउवमीसेसुं ॥४६॥
आहारदुगे छेए, परिहारे सुहमउवसमेसु तहा ।
सासायणमीसेसुं, भजणीआ खलु मुण्येव्वा ॥४७॥
गयवेए अकसाये, अहखायेऽत्थि णियमा अघाईणं । (गीतिः)
अधुवाऽण्णेसिं केवल-दुगे चउण्ह णियमाऽण्हऽट्टण्हं ॥४८॥
णियमा असंतकम्मा, अवेअकसायसम्मखइएसुं ।
तहऽणाहारेऽट्टण्हं, केवलजुगले अघाईणं ॥४९॥
तिमणुयदुपणिंदियतस-तिमणवयणकायउरलजोगेसुं ।
संजमअहखायेसुं, सुक्काभविसेसु आहारे ॥५०॥
णियमा घाईण उरल-मीसे कम्मे हवन्ति भजणीआ ।
दुमणवयणचउणाणति-दंसणसण्णीसु मोहस्स ॥५१॥
अट्टण्ह संतकम्मा, अणंतभागा हवेज्ज अवसेसा ।
सव्वह असंतकम्मा, एवं गेया अणाहारे ॥५२॥
णरदुपणिंदितमतिमण-वयसुक्कासु हविरे असंखंसा ।
घाईण संतकम्मा, अघाइचउगस्स णो भागो ॥५३॥
घाईणं संखंसा, अत्थि दुणरसंजमेसु णऽण्णेसिं ।
मोहस्स संखभागा, मणणाणे णत्थि सेसाणं ॥५४॥
दुमणवयणजोगेमुं, तहा तिणाणोहिचक्खुसण्णीसुं ।
मोहस्स असंखंसा, हवेज भागो ण सत्तण्हं ॥५५॥

काये ओरालदुगे, कम्मणजोगभविघेसु आहारे ।
 घाईण अणंतंसा, भागो ण भवे अघाईणं ॥५६॥
 अट्टण्ह अणंतंसो, अवेअकसायसम्मखइएसुं ।
 केवलदुगम्मि णेया, अणंतभागो अघाईणं ॥५७॥
 घाईण अहक्खाये, संखंमो अणयणे अणंतंसा ।
 मोहम्म ण अण्णेसिं, दोसु वि सेसासु णऽट्टण्हं ॥५८॥
 इह मग्गणाऽहिकाउं, अट्टण्हं संतकम्मइयरेसिं ।
 उत्तो भागो वुच्चइ, पडुच्च उण सव्वजीवा मिं ॥५९॥
 तिरिये तह एगिंदिय-णिगोअवणकायजोगणपुमेसुं ।
 दुअणाणाजयअणयण-भविमिच्छेसुं असणिम्मि ॥६०॥
 अट्टण्ह संतकम्मा, अणंतभागा असंखभागोऽत्थि ।
 वायरसव्वेगिंदिय-णिगोअकम्मणअणाहारे ॥६१॥
 णेया असंखभागा, सुहुमेगिंदियणिगोअआहारे ।
 पज्जसुहुमएगिंदिय-णिगोअउरलेसु संखंसा ॥६२॥
 सुहुमापज्जेगिंदिय-णिगोउरलमीसगेसु संखंमो ।
 तिकसायेसुं हीणो, चउभागो साहिओ लोहे ॥६३॥
 किण्हाएऽत्थि तिभागो-ऽब्भहियो ऊणो य णीलकाउसुं । (गीतिः)
 सेसासु अणंतंसो, असंतकम्माऽत्थि जाण जहि तहि सिं ॥६४॥
 अट्टण्ह संतकम्मा, असंतकम्मा य होइरेऽणंता ।
 तिरिये सव्वेगिंदिय-णिगोअवणकायजोगेसुं ॥६५॥

८] मुनिश्रीवीरशेखरविजयरचितं [मूलपयडिसत्तामूलगाथा

उरलदुगकम्मणणपुम कसायचउगदुअणाणअजएसुं ।
अणयणतिअसुहलेसा-भविyeयरमिच्छअमणेसुं ॥६६॥
आहारेऽणाहारे, य अणंताऽट्ठण्ह संतकम्माऽत्थि ।
दुमणुयसव्वत्थेसुं, आहारदुगम्मि गयवेए ॥६७॥
अकसाये मणणाणे, संजमसामइअछेअसुहमेसुं ।
परिहारे अहखाये, संखा केवलदुगे अघाईणं ॥६८॥(गीतिः)
अट्ठण्ह असंखाऽण्ह, असंतकम्मा अवेअकसाये ।
केवलदुगसम्मखइअ-ऽणाहारेसुं अणंताऽत्थि ॥६९॥
दुमणवयणचउणाणति-दंसणसण्णीसु अत्थि मोहस्स ।
संखेज्जा सेसासुं, बावीसाअ चउघाईणं ॥७०॥
अट्ठण्ह सव्वलोए-ऽत्थि संतकम्मेयरा ऽत्थि घाईणं ।
केवलिखेत्ते लोगा-ऽसंखियभागे अघाईणं ॥७१॥
सयलजगे तिरिसव्वे-गिंदिणिगोअवणसेससुहमेसुं ।
पुहवाईसु चउसु मिं, बायर-बायरअपज्जेसुं ॥७२॥
पत्तेअवणम्मि तहा, तदपज्जत्तम्मि कायजोगे य ।
उरलदुगकम्मणणपुम-कसायचउगदुअणाणेसुं ॥७३॥
अजए अचक्खुतिअसुह-लेसाभविYियरमिच्छअमणेसुं ।
तह आहारियरेसुं, अट्ठण्हं संतकम्माऽत्थि ॥७४॥
लोगासंखियभागे, तिमणुयदुपणिदितसअवेएसुं । (गीतिः)
अकसायसंजमेसुं, अहखाये सुक्कसम्मखइएसुं ॥७५॥

घाईण अघाईणं, केवलखेत्तम्मि केवलदुगे वि ।
 अट्टण्ह उणलोए, बायरपज्जत्तवाउम्मि ॥७६॥
 लोगासंखियभागे, अण्णह घाईण जगअसंखंसे ।
 णेया असंतकम्मा, तिमणवयउरलदुगेसु आहारे ॥७७॥ (गीतिः)
 दुमणवयणचउणाणति-दंसणसण्णीसु मोहणीयस्स ।
 लोगासंखियभागे, असंतकम्मा मुणेयव्वा ॥७८॥
 लोगासंखंसेसुं, समत्तलोए व कम्मणे णेया ।
 घाईणोघव्व भवे, सप्पाउग्गाण सेसासुं ॥७९॥
 अट्टण्ह सव्वलोगो, परिपुट्ठो होइ संतकम्मेहिं ।
 इयरेहि वि घाईण अ-घाईणं जगअसंखंसी ॥८०॥
 णिरयचरमणिरयेसुं, चउआणयपट्ठुडिदेवसुक्कासुं ।
 भागा छ अत्थि फुसिआ, अट्टण्हं संतकम्मेहिं ॥८१॥
 णवरि अघाईण सयल-लोगो सुक्काअ होइ परिपुट्ठो ।
 लोगासंखियभागो-ऽज्जणिरयगेविज्जणवगेसुं ॥८२॥
 पंचसु अणुत्तरेसुं, आहारगदुगविउव्वमीसेसुं ।
 मणणाणसमइएसुं, छेए परिहारसुहमेसुं ॥८३॥
 दुइआइणिरयपणगे, विउवे देसम्मि सासणे कमसी ।
 इगदुत्तिचउपण तेरह, पण बारह फोसिआ भागा ॥८४॥
 णव भागाऽत्थि फरिसिआ, सुगईमाणंततेउलेसासुं ।
 सेससुरतिणाणावहि-पम्हुवसममीसवेअगेसु अड ॥८५॥ (गीतिः)

१०] मुनिश्रीवीरशेखरविजयरचितं [मूलपयडिसत्तामूलगाथा

घाईणं गयवेए, अकसाये संजमे अहक्खाये ।
लोगासंखियभागो, अड भागा सम्मखइएसुं ॥८६॥
छसु वि फुसिअमखिलजगं, अघाइचउगस्स केवलदुगे वि ।
सेसासु सव्वलोगो, अट्ठण्हं फोसिओ णेयो ॥८७॥
लोगासंखियभागो, तिमणवयउरलदुगेसु आहारे ।
छुहिओ भवे चउण्हं, घाईण असंतक्कमेहिं ॥८८॥
दुमणवयणचउणाणति-दंसणसण्णीसु जगअमंखंसो ।
मोहस्सोघव्व भवे, सप्पाउग्गाण वीमाए ॥८९॥
अट्ठण्ह भवे कालो, सव्वद्धा मंतक्कम्मइयरेमिं ।
असमत्तणरम्मि लह्, खुड्डभवो संतक्कम्माणं ॥९०॥
मिन्नमुहुत्तं विक्कियमीसे मीसुवसमेसु समयोऽत्थि ।
सासाणे होइ पलिअ-असंखभागो उ पंचसु वि जेट्ठो ॥९१॥
होइ लह् आहारे, सुहमे समयो गुरू मुहुत्तंतो ।
आहारमीसजोगे, दुहा अवेअअकसायेसुं ॥९२॥
अहक्खाये घाईणं, समयो हस्सो गुरू मुहुत्तंतो ।
होइ चउअघाईणं, सव्वद्धा केवलदुगे वि ॥९३॥
अद्दतइअमयवासा, छेए अट्ठण्ह होअइ जहण्णो ।
जेट्ठो हवेज अयरा, पण्णासं लक्खकांडीओ ॥९४॥
पग्गिहारम्मि जहण्णो, वीसद्धपुहुत्तमत्थि उक्कोसं ।
उणा दुपुव्वकोडी, हवेज्ज सेसासु सव्वद्धा ॥९५॥

मोहस्स लहु समयो, असंतकम्माण मणवयदुगे-ऽण्णो ।
 भिन्नमुहुत्तं दुविहो, चउणाणतिदंसणेसु सण्णिम्मि ॥१६॥ (गीतिः)
 समयो घाईण उरल-मीसे हस्सोऽत्थि तिसमया कम्मे । (गीतिः)
 दोसु गुरु संखखणा, सगकम्माण इयरासु सव्वद्धा ॥१७॥
 अट्ठण्ह अंतरं खलु, हवेज णो संतकम्मइयरेसिं ।
 अट्ठण्ह अपज्जणरे, सासणमीसेसु संतकम्माणं ॥१८॥ (गीतिः)
 समयो हस्सं जेट्ठं, असंखभागो हवेज पल्लस्स ।
 समयो विउच्चमीसे, लहुं गुरुं बारह मुहुत्ता ॥१९॥
 आहारदुगे समयो, लहुं गुरुं होइ हायणपुहुत्तं ।
 घाईण लहुमवेए, अकसाये तह अहक्खाये ॥२०॥
 समयो गुरुं छमासा. परमद्धपुहुत्तमत्थि दोसु गुरुं । (गीतिः)
 मोहस्स तासु तीसु वि, केवलजुगले य णो अघाईणं ॥२०१॥
 छेए परिहारे लहु-मट्ठण्ह कमा सहस्सवासाणि । (गीतिः)
 तेवट्ठी चुलसीई, गुरुमयराऽट्ठार कोडिकोडीओ ॥२०२॥
 सुहमम्मि लहुं समयो, गुरुं छमासाऽत्थि उवसमे समयो ।
 लहुमण्णं सत्त दिणा, ण सेसगुणसट्ठिजुत्तसये ॥२०३॥
 दुमणवयणचउणाणति-दंसणसण्णीसु लहु चउत्थस्स । (गीतिः)
 घाईण उरलमीसे, कम्मे समयो असंतकम्माणं ॥२०४॥
 दुमणवयणाणदंसण-सण्णीसु गुरुं हवेज्ज छम्मासा ।
 वासपुहुत्तमुरालिय-मीसे कम्ममणणाणोसुं ॥२०५॥

१२] मुनिश्रीवीरशेखरविजयरचितं [मूलपत्रादिसत्तामूढगाथा

ओहिदुगे अहियसमा, होइ परे विति हायणपुहुत्तं ।
सप्पाउग्गाण भवे, ण चेव सेससगवीसाए ॥१०६॥
मावेणोदइएणं, सत्ताऽट्ठण्ह खइएण उ असत्ता ।
एवं सत्ता-ऽसत्ता सप्पाउग्गाण सव्वासुं ॥१०७॥
अट्ठण्ह अणंतगुणाऽत्थि संतकम्मा असंतकम्माओ ।
एमेव अणाहारे-ऽट्ठण्हं मोहस्स य अणयणे । १०८॥
कायउरलदुगकम्मण-भवियाहारेसु अत्थि घाईणं ।
णरदुपणिंदितसतिमण-वयसुक्कासुं असंखगुणा ॥१०९॥
एवं मोहस्स दुमण-वयणतिणाणोहिचक्खुमण्णीसुं । (गीतिः)
संखगुणा घाईण दु-णरविर्ईसु तुरिअस्स मणणाणे ॥११०॥
गयवेए अकसाये, सम्मे खइए य अट्ठपयडीणं ।
णेया असंतकम्माऽणंतगुणा संतकम्माओ ॥१११॥
एमेव अघाईणं, हवेज्ज केवलदुगम्मि घाईणं ।
संखगुणाऽहक्खाये, सेमासुं णत्थि अप्पबहू ॥११२॥
थोवा असंतकम्मा, अघाइचउगस्स तो विसेसहिया ।
तिण्हं घाईण तओ, मोहस्स तओ अणंतगुणा ॥११३॥
तस्स चिअ संतकम्मा, तत्तो णेया विसेसहिया । (उपगीतिः)
तिण्हं घाईण तओ, अत्थि चउण्हं अघाईणं ॥११४॥
णरदुपणिंदितसतिमण-वयसुक्कासुं असंतकम्माऽप्पा ।
घाईण तिण्ह ताओ, विसेसअहियाऽत्थि मोहस्स ॥११५॥

तो तस्स संतकम्मा, असंखियगुणा तओ विसेसहिया ।
 तिण्हं घाईण तओ, अघाईचउगस्स विण्णेया ॥११६॥
 मणुयव्वऽप्पावहुगं, विण्णेयं दुणरसंजमेसु परं ।
 मोहस्स संतकम्मा, संखेज्जगुणा मुण्येव्वा ॥११७॥
 काये ओराले तह, भविया—ऽऽहारेसु होइ मणुयव्व ।
 परमत्थि संतकम्मा, अणंतगुणिआ चउत्थस्स ॥११८॥
 मोहस्स हवेज्ज दुमण-वयणतिणाणोहिचक्खुसणीसुं ।
 थोवा असंतकम्मा, तत्तो णेया असंखगुणा ॥११९॥
 तस्स चिअ संतकम्मा, तओ विसेसाहियाऽत्थि सत्तण्हं ।
 मोहस्स संतकम्मा, अहखायेऽप्पा तओ णेया ॥१२०॥
 घाईणं संखगुणा, तत्तो तेसिं असंतकम्मा तो । (गीतिः)
 मोहस्स विसेसहिया, तओ अघाईण संतकम्माऽत्थि ॥१२१॥
 थोवा असंतकम्मा, घाईणं उरलमीसकम्मेसुं ।
 तो ताण संतकम्मा-ऽणंतगुणा तो विसेसहिया ॥१२२॥
 हुन्ति चउअघाईणं, एवमणाहारगम्मि होइ परं ।
 घाईण अघाईओ, असंतकम्मा विसेसहिया ॥१२३॥
 गयवेए अकसाये, थोवा मोहस्स संतकम्मा तो ।
 घाईण विसेसहिया, तओ अघाईण संखगुणा ॥१२४॥
 तत्तो असंतकम्मा, सिमणंतगुणा तओ विसेसहिया ।
 घाईण तिण्ह तत्तो, विण्णेया मोहनीयस्स ॥१२५॥

१४] मुनिश्रीवीरशेखरविजयरचितं [मूलपयडिसत्तामूलगाथा

मणणाणाचक्खुसुं, दुमणोजोगव्व णवरि णायव्वा ।
मोहस्स संतकम्मा, कमसो संखगुणऽणंतगुणा ॥१२६॥
गयवेअव्व हवेज्जा, सम्मत्तम्मि खइअम्मि अप्पबहू ।
परमत्थि संतकम्मा, विसेसअहिया अघाईणं ॥१२७॥
थोवाऽत्थि संतकम्मा, अघाइचउगस्स केवलदुगम्मि ।
ताउ अणंतगुणा से, असंतकम्मा ण सेसासुं ॥१२८॥
बीए खलु अहिगारे, सत्ताठाणम्मि हुन्ति संतपयं ।
सामित्तसाइआई, कालंतरमेगजीवस्स ॥१२९॥
भंगविचयो उ भागो, परिमाणं खेत्तफोसणा कालो ।
अंतरभावऽप्पबहू, चउदस दाराणि जहकमसो ॥१३०॥
अत्थि अड सत्त चउरो, तिसंतठाणाणि मूलपयडीणं ।
एमेव खलु तिमणुयदु-पणिंदितसतिमणवयणेसुं ॥१३१॥
कायुरलअवेएसुं, अकसाये संजमे अहक्खाये ।
सुकभवियसम्मेसुं, खइआहारेसु णेयाणि ॥१३२॥
दुमणवयणचउणाणति-दंसणसण्णीसु अट्ट सत्तऽत्थि ।
अड चउरो अत्थि उरल-मीसे कम्मे अणाहारे ॥१३३॥
चत्तारि केवलदुगे, अड सेसासु अडसंतठाणस्स । (गीतिः)
ओहेणाएसेण वि, सामित्ताईसु मोहसंतव्व ॥१३४॥
णवरं भागदुआरे, संखंसो अट्टसंतठाणस्स । (गीतिः)
गयवेए अकसाये, असंखभागाऽत्थि सम्मखइएसुं ॥१३५॥

अत्थि सजोगिअजोगी, चउठाणस्सऽत्थि सत्तठाणस्स ।
 खीणकमायो सव्वह, सगठाणस्सऽत्थि ओघव्व ॥१३६॥
 तिमणवयकायुरलदुग-कम्मणसुक्कासु आहारे । (उपगीतिः)
 चउठाणस्स सजोगी, सत्तरमऽण्णासु ओघव्व ॥१३७॥
 साइअधुवाणि सग-चउ-सत्ताठाणाणि अत्थि एमेव ।
 सव्वासुं णेयाइं, सण्णाउग्गाणि ठाणाणि ॥१३८॥
 कालो भिन्नमुहुत्तं, सगठाणस्स दुविहो तह जहण्णो ।
 चउठाणस्सुक्कोसो, देसूणा पुव्वकोडी उ ॥१३९॥
 समयोऽत्थि लहू पणमण-वयकायुरलेसु सत्तठाणस्स ।
 जेट्ठो भिन्नमुहुत्तं, दुविहो सेमासु ओघव्व ॥१४०॥
 चउठाणस्स जहण्णो, समयो तिमणवयकायुरलेसुं । (गीतिः)
 कालो भिन्नमुहुत्तं, जेट्ठो समयो लहू उरलमीसे ॥१४१॥
 जेट्ठो दुखणा कम्मे, दुहा तिसमया लहू अणाहारे ।
 जेट्ठो भिन्नमुहुत्तं, दुविहो ओघव्व सेमासुं ॥१४२॥
 अंतरमत्थि ण सगचउ-सत्ताठाणाण एवमेव भवे ।
 सगचउठाणाण कमा, छत्तीसाअ गुणतीसाए ॥१४३॥
 णियमाऽत्थि संतकम्मा, चउठाणस्स खलु सत्तठाणस्स ।
 भजणीआ भजणीआ, छत्तीसाअ सगठाणस्स ॥१४४॥
 भजणीआ ओरालिय-मीसे कम्मे तहा अणाहारे ।
 चउठाणस्स हवेज्जा, णियमा-ऽण्णासुं छवीसाए ॥१४५॥

१६] मुनिश्रीवीरक्षेत्रविजयरचितं [मूलपयदिसत्तामूलगाथा

गेया अणंतभागो, सगचउठाणाण संतकम्मेवं ।
कायउरलदुगकम्मअ- चक्खुभवाहारइयरेसुं ॥१४६॥
सप्पाउग्गाण दुणर- मणपज्जवसंजमेसु संखंसो ।
गयवेए अकसाये, अहखाये सत्तठाणस्स ॥१४७॥
संखंसो संखंसा, चउठाणस्सऽत्थि केवलदुगे णो ।
गेया असंखभागो, सप्पाउग्गाण सेसासुं ॥१४८॥
संखाऽत्थि संतकम्मा, सगचउठाणाण एवमखिलासु ।
लोगासंखंसे सग-ठाणस्सेवं छतीसाए ॥१४९॥
चउठाणस्स हवेज्जा, केवलखेत्तम्मि संतकम्मा उ ।
तिमणवयुरलदुगेसुं, आहारे जगअसंखंसे ॥१५०॥
गेया लोगासंखिय-भागेसुं अहव सव्वलोगम्मि ।
कम्माणाहारेसुं, ओघव्व हवेज्ज सेसासुं ॥१५१॥
लोगासंखियभागो, सगठाणस्सऽत्थि संतकम्मेहिं ।
फुसिओ एवं सव्वह, चउठाणस्स य सयललोगो ॥१५२॥
लोगासंखियभागो, तिमणवयउरलदुगेसु आहारे ।
चउठाणस्स फरिसिओ, हवेज्ज अण्णह अखिललोगो ॥१५३॥
कालो भिन्नमुहुत्तं, दुविहो सत्तण्ह संतकम्माणं ।
एवं सव्वासु णवरि, लहू खणो बारजोगेसुं ॥१५४॥
सव्वद्धा चउठाण-स्सेवं सव्वह परं उरलमीसे ।
कम्मे घाइअसंत-व्व दुहिगजीवव्व-ऽणाहारे ॥१५५॥ (गीतिः)

सगठाणस्स उ समयो, लहुपंतरमत्थि संतकम्माणं ।
 छम्मासा होइ गुरुं, चउठाणस्समंतरं णत्थि ॥१५६॥
 सव्वासु लहुं समयो, सगठाणस्सऽत्थि संतकम्माणं ।
 जेट्ठं वासपुहुत्तं, माणुस्सी-तुरिअणाणेषुं ॥१५७॥
 ओहिदुगे बोद्धव्वं, वासपुहुत्तमहवा अहियवासो ।
 छम्मासा सेसासुं, बत्तीसाए मुण्येव्वं ॥१५८॥
 तीसु खणो चउठाणस्स लहुमुरलमीसकम्मणेषु गुरुं ।
 वासपुहुत्तं मासा, छ अणाहारे ण सेसासुं ॥१५९॥
 भावेणोदइएणं, सगचउठाणाण अत्थि सत्तेवं ।
 सगचउठाणाण कमा, छत्तीसाअ गुणतीसाए ॥१६०॥
 थोवाऽत्थि संतकम्मा, सगठाणस्स खलु ताउ संखगुणा ।
 चउठाणस्सऽत्थि ताओ, अडठाणस्स य अणंतगुणा ॥१६१॥
 मणुयदुपणिंदियतसत्ति-मणवयसुक्कासु सम्मखइएसुं ।
 सगचउअडठाणाणं, कमाऽप्पसंखियअसंखगुणा ॥१६२॥
 दुमणुस्ससंजमेसुं, णरव्व परमत्थि अडुठाणस्स ।
 संखगुणोघव्व भवे, कायुरलभवीसु आहारे ॥१६३॥
 सगठाणस्स खलु दुमण-वयणतिणाणोहिचक्खुसण्णीसुं ।
 थोवा ताओ णैया, असंखियगुणाऽडुठाणस्स ॥१६४॥
 चउठाणस्स उरालिय-मीसे कम्मे तहा अणाहारे ।
 थोवा हवन्ति ताओ, अडठाणस्स य अणंतगुणा ॥१६५॥

१८] मुनिश्रीवीरशेखविजयरचितं [मूलपयडिसत्तामूलगाथा

सगठाणस्स अवेए, अडठाणस्स अकसायअहखाये ।
थोवा ताओ कमसो, संखगुणाऽण्णचउठाणाणं ॥१६६॥
सगठाणा मणणाणे, संखगुणा अणयणे अणंतगुणा ।
होअन्ति संतकम्मा, अडठाणस्स ण उ सेसासुं ॥१६७॥
तइए भूओगारे, अहिगारम्मि हविरे दुआराइं ।
तेरस संतपयं तह, सामी कालंतराईं च ॥१६८॥
भंगविचयो य भागो, परिमाणं खेतफोमणाउ तहा ।
कालो अंतरभावा, अप्पाचहुगं जहाकमसो ॥१६९॥
मूलपयडीण सत्ता, अप्पयराऽवट्ठिआऽत्थि तिणरेसुं ।
दुपणिदियतसपणमण-वयकायउरल्लववेअअकसाये ॥१७०॥
णाणचउगदंसणतिग-संजमअहखायसुक्कभविसम्मै । (गीतिः)
खाइअसण्णाहारे, ओघव्व अवट्ठिआ च्च सेसासुं ॥१७१॥
सामित्ताईसु तइअ-संतव्व अवट्ठिआअ होइ परं । (गीतिः)
तइअम्मि कालदारे, ओहे मविए य साइसंतो वि ॥१७२॥
भिन्नमुहुत्तं हस्सो, जेट्ठो देसूणपुव्वकोडी सो ।
दुविहो भिन्नमुहुत्तम-णयणे समयो लहू काये ॥१७३॥
तुरिए अंतरदारे, ओहे छत्तीसतिमणुयाईसुं ।
जहि अप्पयरा तहि खलु, भवे दुविहमंतरं समयो ॥१७४॥
संखंसा गयवेए, अकसायम्मि अहखायगे जत्थ । (गीतिः)
तेत्तीसाएऽप्पयरा-ऽण्णह अडठाणव्व तत्थ णऽण्णासुं ॥१७५॥

अप्पयराए खीणस-जोगी दुमणवयणणाणचउगेसुं ।
 दंसणतिगसण्णीसुं, खयमोहोघव्व सेसासुं ॥१७६॥
 ओहेणाएसेण वि, अप्पयराअ दुविहो खणो कालो ।
 दुविहमवि अंतरं खलु, मिन्नमुहुत्तं मुणेयव्वं ॥१७७॥
 पणमणवयकायउरल-चउणाणतिदंसणेसु सण्णिम्मि ।
 णंतरमोघव्वऽण्ह, सगठाणव्व पणदारेसुं ॥१७८॥
 ओहाएसेहि लहु, कालो समयोऽत्थि संखसमयाऽण्हो ।
 सगठाणव्व हवेज्जा, अंतरमावऽक्खदारदुगे ॥१७९॥
 ओहेणाएसेण वि, छत्तीसाए अवट्ठिआएऽत्थि ।
 भागप्पमाणगुणिआ, अप्पयराओ ण सेसासुं ॥१८०॥
 तुरिए पयणिकखेवे, अहगारे तिण्णि हुन्ति दाराइं ।
 संतपयं सामित्तं, अप्पावहुगं ति जहकमसो ॥१८१॥
 मूलपयडीण संते, दुविहा हाणी दुहा अवट्ठाणं ।
 जासुं छत्तीसाए, अप्पयरा तासु एमेव ॥१८२॥
 पढमसमये सजोगी, गुरुहाणि कुणइ गुरुमवट्ठाणं ।
 दुइअसमये सजोगी, दुमणवयणणाणचउगेसुं ॥१८३॥
 दंसणतिगसण्णीसुं, गुरुहाणि खीणमोहपढमखणे । (गीतिः)
 तयणंतरमवट्ठाणं, ओघव्व गुरुदुपयाण सेसासुं ॥१८४॥
 लहुहाणिमज्जसमये, खीणकसायो लहुं अवट्ठाणं ।
 दुइअसमयम्मि सो चिअ, दुपयाणेमेव सव्वासुं ॥१८५॥

२०] मुनिश्रीवीरशेखरविजयरचितं] मूलपयडिस तामूलगाथा

हाणि-अवट्टाणाइं, गुरुणि दोण्णि वि समाणि णेयाणि ।
तुल्लाणि दो लहूणि वि, एमेव भवे छतीसाए ॥१८६॥
वडूए णेयाइं, अहिगारे पंचमे दुआराइं ।
तेरस संतपयं तह, सामी कालंतराइं च ॥१८७॥
भंगविचयो य भागो, परिमाणं खेत्तफोसणाउ तहा ।
कालो अंतरभावा, अप्पावहुगं जहाकमसो ॥१८८॥
संखेज्जभागहाणी, अवाट्टिआ तह कमाऽस्थि वडूए ।
भूगारे जहविहिअं, अप्पयराऽवट्टिआ सत्ता ॥१८९॥

॥ इति सत्ताविधानग्रन्थे मूलप्रकृतिसत्ता समाप्ता ॥

इति
मुनिश्रीवीरशेखरविजयरचितं
सत्ताविधानं
(सत्ताविधानं)
तत्थ
मूलपयडिसत्ता
(मूलप्रकृतिसत्ता)
समाप्ता

॥ श्री शङ्खेश्वरपार्श्वनाथाय नमः ॥
॥ श्रीआत्म-कमल-वीर-दान-प्रेम-हीरसूरीश्वरसद्गुरुभ्यो नमः ॥

मुनिश्रीवीरशेखरविजयरचितं

सत्ताविहारणं

(सत्ताविधानं)

तत्थ

मूलपयडिसत्ता

(मूलप्रकृतिसत्ता)

तत्र

हीरसौभाग्यभाष्यम्

पणमिय सिरिणवखण्डा-पासपहुं गुरुकिवाअ जहसुत्तं ।
भासेमि सुबोहत्थं, भामं त्रिमयीकरणरूवं ॥१॥ (ही.भा.)
णाणस्स दंसणस्स य, आवरण वेअमोहआऊणि ।
णामं गोअं विग्धं, एआ मूलपयडी अट्ट ॥२॥ (ही.भा.)
तेमि उत्तरपयडी, कमसो पंच णव दोणिण अडवीसं । (ही.भा.)
चउरो तिजुअमयं दो, पणऽत्थि सव्वा-ऽडवणणसयं ॥३॥
मइसुअऽवहिमणकेवल-णाणावरणं ति पंचहा पढमं ।
णयरेयरोहिक्केवल-दंसणआवरणगं शेयं ॥४॥ (ही.भा.)
णिहा णिहाणिहा, पयला पयलपयला य थीणद्धी ।
एवं नवहा बीअं, सायमसायं दुहा तइअं ॥५॥ (ही.भा.)

होएज्ज मोहणीयं, दुविहं दंसण-चरित्तमेआओ ।
 दंसणमोहो तिविहो, सम्मं मीसं च मिच्छत्तं ॥६॥ (ही.भा.)
 दुविहो चरित्तमोहो, सोलकसायणवणोकसायेहिं ।
 तहि कोहमाणमाया-लोहक्खा चउविहकसाया ॥७॥ (ही.भा.)
 चउहा पत्तेगमणअ-पच्चक्खाणियरसंजलणभेआ । (गीतिः)
 हुन्ति णवणोकसाया, हस्सरई अरइसोगभयकुच्छा ॥८॥ (ही.भा.)
 थीपुरिसणपुमवेआ, इह होइ चउत्थमट्टवीसविहं ।
 णरयतिरिणरसुराउग-भेएहिं पंचमं चउहा ॥९॥ (ही.भा.)
 गइजाइतणुउदंगा, बंधणसंधायणाणि संघयणं ।
 संठाणवण्णगंधरसफासअणुपुव्विविहयगई ॥१०॥ (ही.भा.)
 पिंडपयडित्ति चउदस, तह अगुरुलहूवघायपरघाया ।
 उस्सासआयवुज्जोअनिमिणतित्थमड पत्तेया ॥११॥ (ही.भा.)
 तसबायरपज्जत्तं, पत्तेअथिरं सुहं च सुभगं च ।
 सुस्सरआइज्जाणि य, जसकित्ती होइ तसदसगं ॥१२॥
 थावरदसगं थावर-सुहमअपज्जत्तगाणि साहारं । (ही.भा.)
 अथिरअसुहदुभगाणि य, दुस्सरऽणाइज्जअजसं ति ॥१३॥
 पिंडपयडीण चउपण-पणत्तिगपणरसपंचछगछक्कं ।
 पणदुपणऽट्टुचउदुगं, पणसयरी उत्तरा भेआ ॥१४॥ (ही.भा.)
 णिरयतिरिणरसुरगई, इगबिअतिगचउपणिदिजार्हो ।
 उरलविउव्वाहारग-तेअगकम्मणसरीरा य ॥१५॥ (ही.भा.)

हीरसौभाग्यभाष्यम्] सत्ताविहाणं तत्थ मूलपयडिसत्ता [२३

पढमतितरणुवंगा, होजा उरलाइगाण सजुआण ।
पणबंधणाणि हुन्ते, कम्मणजुत्ताण चत्तारो ॥१६॥ (ही.भा.)
तिणिण य तेअजुआणं, तेअसकम्मणजुआण तिणिण त्ति ।
पण्णरहबंधणाइं, तणुव्व संघायणाणि पण ॥१७॥ (ही.भा.)
संघयणं छद्धा वज्जरिसहणारायरिसहणारायं ।
णारायद्धणरायं, कीलियछेवट्टगाणि त्ति ॥१८॥ (ही.भा.)
समचउरंमं णिग्गोहसाइकुज्जाणि वामणं हुंडं ।
संठाणा वण्णा किण्हनीललोहिअहलिहसिआ ॥१९॥ (ही.भा.)
सुरहिदुरही रसा पण, तित्तकडुकसायअंबिला महुरो ।
फासा गुरुलहुमिउखर-सीउण्हसिणिद्धरुक्खट्टा ॥२०॥ (ही.भा.)
णिरयतिरिक्खमणुससुर अणुपुव्वी होज्ज सुहअसुहखगई ।
छट्ठं तिजुअसयविहं, णीउच्चं सत्तमं दुविहं ॥२१॥ (ही.भा.)
तह दाणलाहभोगो-वभोगविरियंतरायगं चरमं ।
पंचविहं इइ एआ, सव्वा अडवण्णजुत्तसयं ॥२२॥ (ही.भा.)
सत्तं पडुच्च एआ, णेया बंधम्मि वीसजुत्तसयं ।
उत्तरपयडी उदए, बावीसाहियसयं जम्हा ॥२३॥ (ही.भा.)
ससरीरन्तरभूया, बंधणसंघायणा उ बंधुदए ।
वण्णाइचऊ गेज्झा, बंधे णो सम्ममीसाइं ॥२४॥ (ही.भा.)
गइइंदियाणि कायो, जोओ वेओ कसायणाणाणि ।
संजमदंसणलेसा, भवसम्मं सण्णिआहारा ॥२५॥ (ही.भा.)

२४] मुनिश्रीबीरशेखरविजयरचितं [हीरसौभाग्यभाष्यम्

इह मूलमगगणा सिं, भेआ हुन्ति सगचत्तगुणवीसा ।

बायालऽट्टारसचउ-पणअडऽडचउछदुसगदुदुगं ॥२६॥ (ही.भा.)

णिरयो भूभेआ सग-णिरया तिरियो पणिंदितिरियो से ।

जोणिमई पज्जियरा, एमेव चउव्विहा मणुमा ॥२७॥ (ही.भा.)

देवभवणवइवंतर-जोइसपढमाइवारकप्पभवा ।

पढमाई गेविज्जा, णव पंच अणुत्तरा णेया ॥२८॥ (ही.भा.)

एगिंदियो तहा से, सुहमियरा होंति ताण पज्जियरा ।

बितिचउपणिंदिया सिं, पज्जत्ता तह अपज्जत्ता ॥२९॥ (ही.भा.)

एगिंदियव्व पुढवी-दगगिवाऊ हवन्ति सत्तविहा ।

वणकाया होइ दुहा, पत्तेअणिगोअभेअत्तो ॥३०॥ (ही.भा.)

पत्तेअवणो तस्स य, पज्जत्तो तह भवे अपज्जत्तो । (गीतिः)

सत्तविहोऽत्थि णिगोओ, पुहविव्व तसो पणिंदियव्व तिहा ॥३१॥

मणवयणा सिं भेआ, चउगे सच्चियरमीसववहारा ।

कायो भेआ सगुरल-विउवाहारदुगकम्मा से ॥३२॥ (ही.भा.)

थीपुमणपुमअवेआ, य कोहमयमायलोहअकसाया । (गीतिः)

मइसुअवहिमणकेवल-णाणं मइसुअणाणविभंगा ॥३३॥ (ही.)

संजमसामइआई, छेओ परिहारसुहुमअहखाया ।

देसअजयाणि णयणे-यरोहिकेवलदर्सणाणि ॥३४॥ (ही.भा.)

किणहा नीला काऊ, असुहियरा तेउपम्हसुक्काओ ।

भविया-ऽभविया सम्मं, खाइयवेअगउवसमा या ॥३५॥ (ही.भा.)

हीरसौभाग्यभाष्यम्] सत्ताविहाणं तत्थ मूलपयडिसत्ता [२३

सासायणं च मीसं, मिच्छं सण्णी तह असण्णी । (ही.भा.)
आहाराणाहारा, इह उत्तरमग्गणा णेया ॥३६॥ (उपगीतिः)
जीवा णेया मिच्छा-दिट्ठी सासाणमीसदिट्ठी य ।
अविरयसम्मादिट्ठी, देसपमत्ताऽपमत्तजई ॥३७॥ (ही.भा.)
तहऽपुण्वकरणवत्ती, अणियट्ठी सुद्धमसंपराया य ।
उवसंतखीणमोहा, य सजोगिअजोगिणो सिद्धा ॥३८॥ (ही.भा.)
सव्वणिरयभेएसुं, सुरगेविज्जंतदेवविउवेसुं ।
अजयासुहलेसासुं, मिच्छाई होन्ति सम्मंता । ३९॥ (ही.भा.)
मिच्छाई देमविरय-अंता तिरियत्तिपणिंदितिरियेसुं । (गीतिः)
मिच्छादिट्ठीया चिय, असमत्तपणिंदितिरियमणुसेसुं ॥४०॥
(ही.भा.)

सव्वेसुं एगिंदिय-विगलिंदियपंचकायभेएसुं ।
असमत्तपणिंदियतस-अभवियमिच्छत्तअमणेसुं ॥४१॥ (ही.भा.)
मिच्छाअजोगंता, तिमणुसदुपणिंदिदुतसभवियेसुं ।
सम्मादिट्ठीया चिअ, पण-ऽणुत्तरदेवभेएसुं ॥४२॥ (ही.भा.)
तिमणवयणकायेसुं, ओरालम्मि सुइलाअ आहारे ।
मिच्छादिट्ठिप्पभिई, होअन्ति सजोगिपज्जंता ॥४३॥ (ही.भा.)
दुमणवयणजोगेसुं, णयणेयरदरिमणेसु सण्णिम्मि ।
मिच्छादिट्ठीयाई, णायव्वा खीणमोहंता ॥४४॥ (ही.भा.)
मिच्छत्ती सासाणा,, सम्मादिट्ठी सजोगिकेवल्लिणो ।
ओरालमीसजोगे, कम्मणजोगे य होअन्ति ॥४५॥ (ही.भा.)

विक्रयमीमे हुन्ते, मिच्छा सासायणा य सम्मत्ती ।
 णेया पमत्तजइणो, आहाराहारमीसेसुं ॥४६॥ (ही.भा.)
 वेअकसायतिगे खलु, मिच्छत्ताइअणियट्टिपज्जंता ।
 अणियट्टिवायराई, सिद्धंता अत्थि गयवेए ॥४७॥ (ही.भा.)
 मिच्छाई सुहुमंता, हवन्ति लोहम्मि हुन्ति अकमाए ।
 उवसंतखीणमोहा, य सजोगिअजोगिणो सिद्धा ॥४८॥ (ही.भा.)
 णाणतिगे ओहिम्म य, सम्माई होन्ति खीणमोहंता ।
 होअन्ति पमत्ताई, मणणाणे खीणमोहंता ॥४९॥ (ही.भा.)
 केवलदुगे सजोगी अजोगिमिद्धा अत्थि मिच्छमासाणा । (गीतिः)
 अणणाणतिगे हुन्ति अ जोगंता मंजमे पमत्ताई ॥५०॥ (ही.भा.)
 अणियट्टिवायराई, समइअछेएसु अप्पमत्तंता ।
 परिहारे देसजई, देसे सुहमा उ सुहुमम्मि ॥५१॥ (ही.भा.)
 उवसंतखीणमोहा, सहजोगअजोगिणो अहक्खाए ।
 तेउपउमासु णेया, मिच्छाई अप्पमत्तंता ॥५२॥ (ही.भा.)
 सम्माई सिद्धंता, सम्मे खइए य अप्पमत्तंता ।
 वेअगसम्मे णेया, उवमंत्तंता उवममम्मि ॥५३॥ (ही.भा.)
 सासाणे सासाणा, मीसे मीसा तहा अणाहारे ।
 मिच्छा सासणसम्मा, सहजोगअजोगिणो सिद्धा ॥५४॥ (ही.)
 कायठिई उक्कोसा, णिरयसुराणं विभंगणाणस्स ।
 किण्ढाए सुक्काए, तेत्तीसा सागरा णेया ॥५५॥ (ही.भा.)

हीरसौभाग्यभाष्यम्] सत्ताविहाणं तत्थमूलपयडिसत्ता [२७

पढमाइगणिरयाणं, कमसो एगो य तिणिण सत्त दस ।
सत्तरह य बावीसा, तेत्तीसा सागरा णेया ॥५६॥ (ही.भा.)
णेया उ अमंखेज्जा, परिअट्टा पुग्गलाण तिरियस्स ।
एगिंदियहरिआणं, कायणपुंसग असण्णीणं ॥५७॥ (ही.भा.)
तिपणिंदियतिरियाणं, तिणराणं च पलिओवमा तिणिण ।
अब्भहिया पुब्बाणं, कोडिपुहुत्तेण णायव्वा ॥५८॥ (ही.भा.)
सव्वापज्जत्ताणं, समत्तवायरणिगोअकायस्स ।
पज्जत्तगसुहुमाणं, पणमणवयउरलमीसाणं ॥५९॥ (ही.भा.)
वेउव्वदुगस्स तहा, आहारदुगस्स चउकसायाणं ।
सुहुमुवसममीमाणं, भिन्नमुहुत्तं मुणेयव्वा ॥६०॥ (ही.भा.)
भवणस्स साहियुदही, पल्लं वंतरसुरस्स विण्णेया ।
पलिओवममब्भहियं, जोइसदेवस्स णायव्वा ॥६१॥ (ही.भा.)
सोहम्मार्हण कमा, अयरा दो साहिया दुवे सत्त ।
अब्भहिया सत्त य दस, चउदस सत्तरह णायव्वा ॥६२॥ (ही.)
एत्तो एगेगहिया, णायव्वा जाव एगतीसुदही ।
उवरिमगेविज्जस्म उ, तेत्तीसा-गुत्तराण भवे ॥६३॥ (ही.भा.)
अंगुलअसंखभागो, बायरएगिंदियस्स सुहमाणं ।
तह पुहवाइचउण्हं, णेया लोणा असंखेज्जा ॥६४॥ (ही.भा.)
बायरपज्जेगिंदिय - भूदगपत्तेअवाउविगलाणं । (गीतिः)
संखेज्जसहस्ससमा, समत्तवेइंदियस्स संखसमा ॥६५॥ (ही.भा.)

पञ्जत्तगतेइंदिय-बायरतेऊण होइ संखेज्जा ।
 दिवसा संखियमासा, समत्तचउइंदियस्स भवे ॥६६॥ (ही.भा.)
 पंचिदियचक्खूणऽहि-युद्धि-सहस्सं तस्स तं दुगुणं ।
 पञ्जपणिंदितसपुरिस-सणीणायरसयपुहुत्तं ॥६७॥ (ही.भा.)
 अद्धतइअपरिअट्ठा, भवे णिगोअस्स होइ कम्मठिई ।
 बायरपुहवाइचउग णिगोअपत्तेअहरिआणं ॥६८॥ (ही.भा.)
 बावीससहस्सममा, देसूणोरालियस्स विण्णेया ।
 कम्मस्स तिणिण समया, पल्लमयपुहुत्तमित्थीए ॥६९॥ (ही.भा.)
 गयवेअकमायाणं, स इअणंता य स इमंता य ।
 दुविहा हवेज्ज दुइआ, भिन्नमुहुत्तं भवे जेट्ठा ॥७०॥ (ही.भा.)
 दुइआ चेव हवेज्जा, छउमत्थस्स य तहा भवत्थस्स ।
 णवरि भवत्थस्स गुरू, कोडी पुव्वाण देसूणा ॥७१॥ (ही.भा.)
 साहियछसट्ठिजलही, तिणाणओहीण वेअगस्स भवे ।
 दुविहा अणाइणंता, अणाइसंता अचक्खुस्स ॥७२॥ (ही.भा.)
 मणणाणसंजमाणं, समइअल्लेअपरिहारदेमाणं ।
 देसूणा पुव्वाणं, कोडी एगा सुण्येव्वा ॥७३॥ (ही.भा.)
 केवलदुग-खइआणं, साइअणंता लहू भवत्थस्स ।
 भिन्नमुहुत्तं केवल-दुगस्स जेट्ठूणपुव्वकोडी उ ॥७४॥ (ही.भा.)
 खइअस्स भवत्थस्स य, छउमत्थस्स य लहू मुहुत्तंतो ।
 तेत्तीससागराइं, अब्महियाइं भवे जेट्ठा ॥७५॥ (ही.भा.)

हीरसौभाग्यभाष्यम्] सत्ताविहाणं तत्थ सूतपयडिसत्ता [२६

दुअणाणा-ऽजयमिच्छाणऽणाइणंता अणाइसंता य ।

साइमपज्जवसाणा, तइआ हीणद्धपरियट्ठो ॥७६॥ (ही.भा.)

देसूणपुण्वकोडी, अहखायस्स हवए भवत्थस्स ।

एसा गुरुकायठिई, छउमत्थस्स उ मुहुत्तंतो ॥७७॥ (ही.भा.)

णीलाइचउण्ह कमा, अयरा दस तिण्ण दोणिण अट्टार ।

भवियस्स-ऽणाइसंता, अणाइणंता अभवियस्स ॥७८॥ (ही.भा.)

सम्माणाहाराणं, साइअणंता य साइसंता य ।

सम्मस्सुदहिछमट्ठी, अहियाऽण्णस्स समया तिणिण ॥७९॥ (ही.भा.)

सम्मस्स भवत्थस्स उ, तह छउमत्थस्स साइसंता च ।

एवमणाहारे पर-मन्तमुहुत्तं गुरू भवत्थस्स ॥८०॥ (गीतिः) (ही.भा.)

सासायणस्स गेया, आवलिआओ छ जेट्टकायठिई ।

आहारगस्स हवए, अंगुलभागो असंखयमो ॥८१॥ (ही.भा.)

केइ उण बिति हवए, संखसहस्सवरिसा समत्ताणं ।

बेइंदियतेइंदिय-चउइंदियबायरऽग्गीणं ॥८२॥ (ही.भा.)

दो सागरा सहस्सा, समत्ततसचक्खुदंसणाण भवे ।

सत्तरह सत्त अयरा, होइ कमा नीलकाऊणं ॥८३॥ (ही.भा.)

कायठिई णायव्वा, जहण्णगा दससहस्सवासाणि ।

णिरयपढमणिरयाणं, देवभवणवंतराणं च ॥८४॥ (ही.भा.)

दुइआइगणिरयाणं, सा पढमाइणिरयाण जा जेट्टा ।

सुद्धभवो तिरियतिरिय-पणिदिमणुयतदपज्जाणं ॥८५॥ (ही.भा.)

पञ्जत्तमे अवज्जिअ-सेसिंदियकायमे असण्णीणं ।
 अमणस्स जाणियव्वा, आहारस्स तिसमयहीणो ॥८६॥ (ही.भा.)
 भिन्नमुहुत्तं तु सयल-पञ्जत्तगजोणिणीण कायस्स ।
 मीसदुजोगपुमाणं, तिकसायाणं मइसुआणं ॥८७॥ (ही.भा.)
 अण्णाणदुगस्स तहा, देसाजयचक्खुसव्वलेसाणं ।
 सम्मत्तवेअगाणं, उवसममीसाण मिच्छस्स ॥८८॥ (ही.भा.)
 पलियस्स अट्ठभागो, जोइसिअस्स पलिओवमं शेया ।
 सोहम्मसुरस्स भवे, ईसाणस्सऽब्भहियपल्लं ॥८९॥ (ही.भा.)
 दोणिण हवेज्जा जलही, सणंकुमारस्स दोणिण अब्भहिया ।
 माहेंदस्स हवेज्जा, सत्त भवे बम्भदेवस्स ॥९०॥ (ही.भा.)
 लंतगदेवाईणं, सा बम्भसुगइगाण जा जेट्ठा । (गीतिः)
 सव्वत्थकेवलजुगल-अचक्खुभविअभविखाइआणं णो ॥९१॥
 (ही.भा.)
 समयोऽत्थि पणमणवयण उरलदुगाहारविउवक्कमाणं ।
 इत्थीणपुंसगाणं, अवेअलोहाक्कसायाणं ॥९२॥ (ही.भा.)
 मण्णाणोहिदुगविभंगसंजमसमइअछेअसुहुमाणं ।
 परिहाराहक्खायग-सासणऽणाहारगाणं च ॥९३॥ (ही.भा.)
 अण्णे तिकसायाणं, समयो मण्णाणओहिजुगलाणं ।
 संजमपरिहाराणं, भिन्नमुहुत्तं ति कायठिई ॥९४॥ (ही.भा.)
 मयणीअपयस्स दुवे, भंगेगाणेभजीवभेआओ ।
 तेचिअ तिगुणा दुजुआ, पयपयवट्ठीअ कायव्वा ॥९५॥ (ही.भा.)

हीरसौभाग्यभाष्यम्] सत्ताविहाण तत्थ मूत्तपयडिसत्ता [३१

शेया अधुवपयसमा, ठविअ तिसंखा परोप्परऽऽमत्था ।
भंगा धुवमहिआणं, ते धुवगहिआण एगूणा ॥६६॥ (ही.भा.)
मज्झिमणंताणंतग-माणा मिच्छेवमजयपमुहावि ।
पल्लासंखसो चउ सासाणाइगुणठाणगया ॥९७॥ (ही.भा.)
कोडिपहम्मपुहुत्तं, पमत्तइयरा हवन्ति उ सजोगी ।
कोडिपुहुत्तं सेमछ-गुणठाणगया सयपुहुत्तं ॥६८॥ (ही.भा.)
मज्झिमजुत्ताणंता-ऽजोगी सिद्धा पवेसगेगाई ।
जाव उवसामगा चउ-वण्णाऽडुत्तरसयं खवगा ॥६९॥ (ही.भा.)
हुन्ति उवसामगा-ऽप्पा, पवेसगा ताउ दुगुणिआ खवगा ।
ताउ कमा संखगुणा, अजोगिचउउवसमगखवगा ॥१००॥ (ही.भा.)
ताउ कममो सजोगिअ-पमत्तइयरा तओ असंखगुणा ।
देसा तो सासाणा, तो मीसा संखियगुणा वा ॥१०१॥ (ही.भा.)
ताउ असंखेज्जगुणा, अविरयसम्मा तओ अणंतगुणा ।
सिद्धा ताओ मिच्छा, तो अजयाई कमा-ऽऽमहिया ॥१०२॥ (ही.भा.)
अहवुवसंता-ऽप्पा तो, खीणा संखियगुणा तओऽऽमहिया ।
सुहमनियट्ठिअपुव्वा, तुल्लाऽण्णोण्णं तओ कममो ॥१०३॥ (ही.भा.)
जोगिअपमत्तइयरे, संखगुणा तो कमा असंखगुणा ।
देसतिदुइआइगुणा, णवरि व संखियगुणा मीसा ॥१०४॥ (ही.भा.)
तोऽणंतगुणा सिद्धा, ताउ विसेमाहिया अजोगीओ ॥ (ही.भा.)
मिच्छाऽत्थि अणंतगुणा, तो अजयाई कमाऽऽमहिया ॥१०५॥

३२] मुनिश्चीवीरशेखरविजयरचितं [हीरसौभाग्यभाष्यम्

जीवा असंखसेढी, णिरय-ऽज्जणिरय-दुक्कप्प-भवणेसुं ।

सेढिअसंखंसोऽण्णछ-णिरय-छक्कप्प-णर-तदसमत्तेसुं ॥१०६॥

(गीतिः) (ही.भा.)

तिरिये सव्वेगिदिय-णिगोअवणकाउरालियदुगेसुं ।

कम्मणपुमकोहाइग-दुअणाणा-ऽजयअचक्खुसुं ॥१०७॥ (ही.भा.)

तिकुलेसामिच्छभविय-अमणाहारेसु तह अणाहारे ।

मज्झिमणंताणंतग-माणा ऽणंता मुण्येव्वा ॥१०८॥ (ही.भा.)

सव्वपणिंदितिरि-विगल-पणिदि-तस-देव-वंतरदुगेसुं ।

बायरपज्जत्तेसुं, भूदगपत्तेअकायेसुं ॥१०९॥ (ही०भा०)

पणमणवयणविउवदुग-थीपुरिसविभंगणाणणयणेसुं ।

सुतिलेसासणीसुं, पयरस्स असंखयमभागो ॥११०॥ (ही.भा.)

दुमणुयसव्वत्थेसुं, संखेज्जा सेसमुरतिणाणेसुं ।

देसोहीसु तहुवसम-वेअगसासाणमीसेसुं ॥१११॥ (ही.भा.)

पल्लासंखियभागो, बायरपज्जत्ततेउवाऊसुं ।

हुन्ति कमा देसूणा, घणावली लोगसंखंसो ॥११२॥ (ही.भा.)

णेया असंखलोगा, सेसेसु छवीसकायभेएसुं ।

हुन्ति सहस्सपुहुत्तं, आहारदुगम्मि परिहारे ॥११३॥ (ही.भा.)

सिद्धपमाणाऽणता, अवेअअकसायकेवलदुगेसुं ।

सम्मखइएसु चउसुं, कोडिपुहुत्तं तहि भवत्था ॥११४॥ (ही.भा.)

गयवेए अकसाए, छुउमत्था उ हविरे सयपुहुत्तं । (ही.भा.)

पल्लासंखियभागो, दुविहा अवि सम्मखइएसुं ॥११५॥ (गीतिः)

हीरसौभाग्यभाष्यम्] सत्ताविद्वाणं तत्थ मूलपयडिसत्ता [३३

कोडिसहस्सपुहुत्तं, मणणाणे संजमे समइए य ।

कोडिसयपुहुत्तं उण, छेए सुहमे सयपुहुत्तं ॥११६॥(ही.भा.)

कोडिपुहुत्तं णेया, अहखाए तत्थ खलु सयपुहुत्तं ।

छउमत्था जीवा लहु-जुत्ताणंता अभवियम्मि॥११७॥(ही.भा.)

^१सुहमे जीवा थोवा. ^२तो छउमत्था समा व अकसाये ।

अहखाए हुन्ति ^३तओ, विसेसअहिया अवेए ^४तो ॥११८॥

संखगुणाऽऽहारदुगे, परिहारे ^५ताउ केवलदुगम्मि ।(ही.भा.)

तणुधारी ^६तोऽब्भहिया, अकसाये तह अहखाए ॥११९॥

^७ताउ भवत्था-ऽवेए, ^८तत्तो छेअम्मि संखियगुणा ^९-^{१०}तो ।

मणणाणसमइएसुं, कमा ^{११}तओ संजमे-ऽब्भहिया ॥१२०॥

(ही.भा.)

^{१२}तो संखगुणा दुमणुय-सव्वत्थेसुं ^{१३}तओ असंखगुणा ।

पज्जच्चायरऽणत्ते, ^{१४}ताउ चउअणुत्तरसुरेसुं ॥१२१॥(ही.भा.)

^{१५}-^{१६}ताउ कमा-ऽऽणयकप्पं, जा संखगुणा तओ असंखगुणा ।

देसे ^{१७}तो सासाणे, ^{१८}ताउ उवसमम्मि संखगुणा॥१२२॥(ही.)

^{१९}तत्तो मीसे संखिय-गुणा अमंखियगुणा व विण्णोया ।

^{२०}ताउ खइए भवत्था,असंखियगुणा ^{२१}तओ णोया॥१२३॥(ही.)

ओहिदुगवेअगेसुं, ^{२२}तओ विसेसाहिया मुण्यच्चा ।

मइसुअणाणेसुं ^{२३}तओ,हुन्ति भवत्था उ सम्मत्ते ॥१२४॥(ही.भा.)

^{२४}-^{२५}ताउ असंखगुणा-ऽन्तिम णारगपमुहऽट्टमाइकप्पाणं ।

दुदुएगेगेगे-गदुएगेसुं कमेण कमा ॥१२५॥ (ही.भा.)

^{५८}ताउ अपज्जत्तणरे, ^{५९}तओ विसेसाहिया णरे^{६०-६१}तत्तो ।
 दुइअ-पढमकपेसुं, कमा असंखगुण-संखियगुणा^{६२-६३}तो ॥
 भवण-पढमणिरयेसुं, कमा असंखियगुणा^{६४}तओ णिरये ।
 अब्भहिया अत्थि^{६५}तओ, सुवकाअ असंखियगुणा^{६६-६७}तो ॥
 कमसो पउम-तिरिक्खी-वंतरपुमथीसु संखियगुणा^{६८-६९}तो ।
 कमसोऽब्भहिया जोइस-तेउ-सुर-विभंग-सण्णीसुं ॥१२८॥
^{७०}ता चउइंदियपज्जे, संखगुणा^{७१-७२}तो कमा विसेसहिया॥(गी.)
 पज्जपणिंदितिरिपणिंदिणयणपज्जगबित्तिंदियेसु^{७३}तओ ॥१२९॥
 पज्जतसे संखगुणा, ^{७४}ताउ अपज्जगपणिंदितिरियम्मि । (ही.)
 हुन्ति असंखगुणा^{७५}तो-ऽब्भहिया-ऽपज्जगपणिंदिये^{७६-७७}तत्तो॥
 तिरियपणिंदि-पणिंदि-अ-पज्जोघचउतिविइंदियेसु कमा । (ही.)
^{७८}ताउ अपज्जत्ततसे, संखगुणा^{७९}तो तसेऽब्भहिया ॥१३१॥
^{८०-८१}तो पत्तेअपुहविदग-ऽणिलपज्जेसुं कमा असंखगुणा । (ही.)
^{८२-८३}ताउ अपज्जोहेसुं, कमा असंखगुणअब्भहिया ॥१३२॥
 कमसोऽत्थि बायरागणि-पत्तेअवणपुहवीदगऽणिलेसुं । (ही. भा.)
^{८४}ताउ असंखेज्जगुणा, हुन्ति अपज्जसुहमग्गिम्मि ॥१३३॥
^{१००-१०१}ताउ अपज्जसुहम-भू-दग-वाउसु कमा विसेसहिया ।
^{१०३}तत्तो पज्जत्तसुहम-तेउम्मि हवेज्ज संखगुणा॥१३४॥(ही. भा.)
^{१०४}ताउ विसेसहिया-ऽगणि-सुहमे ^{१०५}ताउ अगणिम्मि ^{१०६ ११४}ताउ कमा ।
 हुन्ति सुहमपज्ज-सुहम-ओहेसु कमेण भू-दग-ऽणिलेसुं ॥१३५॥

हीरसौभाग्यभाष्यम्] सत्ताविहाणं तत्थ मूलपयडिसत्ता [३५

११४ ११६

ताउ कमाऽणंतगुणा, अभवियकेवलदुगेसु ताउ कमा ।

११७ १२०

णेया विसेसअहिया, अकसायअवेअखइअसम्मेषुं ॥१३६॥ (गीतिः)

१२१ ताउ अणंतगुणा खलु, णेया पज्जत्तवायरणिगोए । (ही.)

१२२ ताओ हवेज्ज वायर-पज्जेगिंदियम्मि अब्भहिया ॥१३७॥

१२३

थूलअपज्जणिगोए, तओ असंखियगुणा तओऽब्भहिया ।

१२४ १२६

वायरअपज्जिगिंदिय-णिगोअएगिंदियेसु कमा ॥१३८॥ (ही. भा.)

१२७ १२८

तो कम्मे-ऽणाहारे, कमा असंखियगुणा-ऽहिया तत्तो । (गीतिः)

१२९

सुहमअपज्जणिगोए, असंखियगुणा^{१३०} तओ विसेसहिया ॥१३९॥

सुहमापज्जेगवखे, ^{१३१} तत्तो संखियगुणा वुग्लमीसे । (ही. भा.)

१३२ तत्तो संखेज्जगुणा, माणे^{१३३-१३५} ताओ विसेसहिया ॥१४०॥

कमसो कोहे माया-लोहेसुं काउ-णील-किण्हासुं ।

१३६ ताओ संखेज्जगुणा, उग्ले^{१४०} तत्तो विसेसहिया ॥१४१॥ (ही.)

पज्जगसुहमणिगोए, ^{१४१} ताउ सुहमपज्जिगिंदियम्मि^{१४२} तओ ।

आहारे^{१४३-१४४} ताउ सुहम-णिगोअ-एगिंदियेसु कमा ॥१४२॥

१४५ १४६

ताउ कमा भविय-पणग-वणि-गिंदिय-काय अमण-णपुमेसुं ।

१४७ १४८

ताउ कमा तिरि-मिच्छ-दु-अण्णाणा-ऽजय-अचक्खूसुं ॥१४३॥

मज्झम्मि सुक्कलेसा-पज्जगचउइंदियाण जहठाणं ।

बारसजोगप्पवहू, सयं सठाणे उणो एवं ॥१४४॥ (ही. भा.)

थोवाऽत्थि विउवमीसे, ताओ संखियगुणा कमा णेया ।

सच्चअसच्चगमीस-व्ववहारेसु मणजोगेसु ॥१४५॥ (ही. भा.)

ताउ मणेऽब्भहिया तो, कमसो सच्चियरमोसवयणेसुं । (गीतिः)
 संखगुणा तो विउवे, तो ववहारे तओ वये-ऽब्भहिया ॥१४६॥
 मज्झिमणंताणंतग-माणा मिच्छेवमजयपमुहावि ।
 पल्लासंखंसो चउ-सासाणाइगुणठाणगया ॥१४७॥ (ही.भा.)
 कोडिमहस्मपुहुत्तं, पमत्तइयरा हवन्ति उ सजोगी ।
 कोडिपुहुत्तं सेसछ-गुणठाणगया सयपुहुत्तं, ॥१४८॥ (ही.भा.)
 एए गुरुओ ऽत्थि पढम-तुरिआइचउक्तेरसगुणत्था । (ही.भा.)
 लहुओ वि तत्तिआ खलु, एगो सेसगुणठाणगओ ॥१४९॥
 मज्झिमजुत्ताणंता-ऽजोगी सिद्धा जहणणउक्कोसा । (ही.भा.)
 सव्वह लहुओ एगो, पवेसगा णिग्गमाऽत्थि गुरुओ उ ॥१५०॥
 पल्लासंखंसो पण-पढमाइगुणेसु अण्ह उ संखा । (गीतिः)
 तहि वि उवसामगा चउ-वणणा-ऽहुत्तरसयं खवगसिद्धा ॥१५१॥ (ही.)
 अणुओगप्पणवणा-जीवसमासपमुहाहिपाएण ।
 जीवा असंखसेढी, हवेज्ज णिरयज्जणिरयेसुं ॥१५२॥ (ही.भा.)
 अंगुलसूइदुइअवग्गमूलगुणिअ-ऽज्जवग्गमूलमिआ । (ही.भा.)
 अहवा अंगुलसूई-सेटिदुइअवग्गमूलघणमाणा ॥१५३॥ (गीतिः)
 ● अह पंचसंगहाइसु, मूलगुणिअसूइअंगुलपमाणा । (ही.भा.)
 उअ सूइअंगुलपढम-मूलघणमिआ-ऽत्थि सेढीओ ॥१५४॥
 णिअवारसदसमऽट्टम-छट्टतइअदुइअवग्गमूलेहिं । (ही.भा.)
 भज्जा सेढी कमसो, अत्थि छुदुइआइणिरयेसुं ॥१५५॥

हीरस्त्रीभाग्यभाष्यम्] सत्ताविहाणं तत्थ मूलपयडिसत्ता [३७

तिरिये सव्वेगिंदियणिगोअवणकायुरालियदुगेसुं ।
कम्मणपुमकोहाइग्-दुअणाणाजयअचक्खुसुं ॥१५६॥ (ही.)
तिकुलेमामिच्छभविय-अमणाहारेसु तह अणाहारे ।
मज्झिमणंताणंतग माणा-ऽणंता मुण्येव्वा ॥१५७॥ (ही.भा.)
समजीवणंतभागा, तिरिवाणगिंदियणिगोअकायेसुं । (ही.भा.)
णुमदुअणाणाजय-अचक्खुमविमिच्छअमणेसुं ॥१५८॥
समजीवअसंखंसा, सुहमेगिंदियणिगोअआहारेसुं । (आर्यागीतिः)
पज्जगसुहमेगिंदिय णिगोअउरलेसु सयलजयसंखंसा ॥१५९॥ (ही)
समजीवअसंखंसा, बायरिगिंदियणिगोअतिगे । (ही.भा.)
कम्माणाहारेसुं, दससु सयलजीवसंखंसा ॥१६०॥ (उपगीतिः)
स वि लोहेऽब्भहिओ चउ-भागो ऊणो कसायतिगे । (उद्गीतिः)
क्किण्हाएऽब्भहिओऽत्थि ति-भागो हीणो अ णीलकाउसुं ॥१६१॥
जीवा पणिंदियतिरिय-विगलपणिंदितसतदसमत्तेसुं ।
पज्जत्तबायरेसुं, भूदगपत्तेअहरिएसुं ॥१६२॥ (ही.भा.)
भज्जं पयरं अंगुल-असंखभागेण भाइअं पयरं । (गीतिः)
संखेज्जजोयणसयग वग्गेण तिरिच्छिदंतरेसुं च ॥१६३॥ (ही.)
पज्जत्तपणिंदितिरिय-विगलपणिंदितसदुवयचक्खुसुं ।
पयरं भाइअमत्थि उ, अंगुलसंखेज्जभागेण ॥१६४॥ (ही.भा.)
तइअगुणिअ-ऽज्जसूई-अंगुलमूलेण भाइआ सेढी ।
अत्थि णरे रूवूणा, पज्जणरूणा अपज्जणरे ॥१६५॥ (ही.भा.)

३८] मुनिश्रीवीरशेखरविजयरचितं [हीरसौभाग्यभाष्यम्

संखेज्जकोडिकोडी, गुणतीसेका व तइअजमलोप्पिं ।
तुरिअजमलहेट्ठा व दु-णरेसु संखा य सव्वत्थे ॥१६६॥ (ही.भा.)
छप्पणदुमयसूअ-अंगुलवग्गेण भाइअं पयरं ।
जोइसिए पणवणा-अणुओगहारपमुहेसुं ॥१६७॥ (ही०भा०)
वग्गो ण पंचसंगह-जीवसमासेसु देवसण्णीसुं । (गीतिः)
एमेव णवरिणेयो, किंचूणो भायगो मयदुगे वि ॥१६८॥ (ही.भा.)
भवणे पणवणाए, सूअंगुलपढमवग्गमूलस्स ।
संखंसो अणुओगे, अमंखभागो अमंखसेढीओ ॥ १६९॥ (गीतिः)
भवणेऽज्जवग्गमूला-हयसूअअंगुलप्पमिअसेढी ।
शोया जीवसमासे, गंथे उण पंचमंगहे भवणे ॥१७०॥ (गीतिः)
△ सेढीओ दुइअगुणिअ-सूअंगुलपढमवग्गमूलमिआ ।
★ सेढी तइअहयदुइअ-सूअंगुलमूलमज्जकप्पदुगे ॥१७१॥ (गीतिः)
तइअसुरदुगे सेगारवग्गमूलेण भाइआ सेढी ।
वम्हाइसुरचउक्के, सणवसगपणचउवग्गमूलेहिं ॥१७२॥ (गीतिः)
पल्लासंखियभागो, विण्णोया सेमसुरतिणाणेसुं ।
देसोहीसु तहुवमम-वेअगसामाणमीसेसुं ॥१७३॥ (ही.भा.)
ऊणा घणावली उण, वायरपज्जत्ततेउकायम्मि ।
वायरपज्जत्ताणिल-काये उण लोपसंखंसो ॥१७४॥ (ही.भा.)
शोया असंखलोगा, सेसेसु छवीसकायभेएसुं ।
सुरसंखंसो पणमण-तिवयविउवमीसपुरिसेसुं । १७५॥ (ही.भा.)

हीरसौभाग्यभाष्यम्] सत्ताविहाणं तत्थ मूळपयडिसत्ता [३३

मूला-ऽज्जाऽसंखगुणा, सेढी विउवथिविभंगलेसतिगे ।
अत्थि सहस्सपुहुत्तं, आहारदुग्गमि परिहारे ॥१७६॥ (ही.भा.)
सिद्धपमाणाऽणंता, अवेअअकसायकेवलदुगेसुं ।
सम्मखइएसु चउसुं, कोडिपुहुत्तं तहि भवत्था ॥१७७॥
गयवेए अकसाए, छउमत्था उ हविरे सयपुहुत्तं ।
पल्लासंखियभागो, दुविहा अवि सम्मखइएसुं ॥१७८॥ (गीतिः)
कोडिसहस्सपुहुत्तं, मणणाणे संजमे समइए य ।
कोडिसयपुहुत्तं उण, छेए सुहमे सयपुहुत्तं ॥१७९॥ (ही.भा.)
कोडिपुहुत्तं शेया, अहखाए तत्थ खलु सयपुहुत्तं ।
छउमत्था जीवा लहु-जुत्ताणंता अभवियम्मि ॥१८०॥ (ही.
एए जाणेयच्चा, उक्कोसाओ जहण्णओ मणुए ।
पज्जत्तमणुस्ससमा, संखेज्जा खलु मुणेयच्चा ॥१८१॥ (ही.)
एगो पुणो हवेज्जा, अपज्जमणुए विउव्वमीसे य ।
आहारदुगे सुहमे, उवसममीसेसु सासाणे ॥१८२॥ (ही.भा.)
छउमत्था-ऽऽमिज्जेगो, अवेअअकसायगाहखायेसुं । (गीतिः)
छेए परिहारे सय-मूणा गुरुओऽण्णहिं कहिं चि समा ॥१८३॥
शेया जहण्णजेट्ठा, एए सामण्णओ विसेसा उ ।
अत्थि पढमगुणठाणं, जहि तहि सव्वत्थ एमेव ॥१८४॥ (ही.)
ओघव्व दुइअआइग-चउदसअंतगुणठाणगयमिद्धा ।
जत्थ ऽत्थि तत्थ शेया, × कहिं चि उण किंचि सविसेसा ॥१८५॥

तहि वि तिणरेसु संखा, दुइआइचउगुणठाणगा दुविहा ।
 सोघव्व सगुणठाणे, सव्वत्थाहारगदुगेसुं ॥१८६॥ (ही.भा.)
 अहवेगिंदियभूदग-तब्बायरपज्जवायरेसु वणे । (ही.भा.)
 पत्तेए तप्पज्जे, विगलेसुं पज्जविगलअमणेसुं ॥१८७॥ (गीतिः)
 लहुओ एगो दुइए, गुणठाणम्मि गुरुओ पुणो शेया ।
 पलियासंखियभागो, उअ आवलिआअसंखंसो ॥१८८॥ (ही.)
 एगो जद्धणओ खलु, अत्थि उरलमीसविउवमीसेसुं ।
 तुरिअगुणठाणवत्ती गुरुओ संखा उरलमीसे ॥१८९॥ (ही.भा.)
 कम्माणाहारेसुं, लहुओ एगो-ऽत्थि तुरियगुणठाणे । (गीतिः)
 लहुओ एगो तेग्ग-गुणठाणे-ऽत्थि गुरुओ सयपुहुत्तं ॥१९०॥
 सोघव्व दुहा छेए, परिहारे छट्ठसत्तमगुणेसुं ।
 दुविहा शेया संखा, खइए पंचमगुणठाणे ॥१९१॥ (ही.भा.)
 लहुओ तुरिआइचउग-गुणठाणगयाऽत्थि उवसमे एगो ।
 णत्थि खवगा पुणो गुण-ठाणेसुं अट्ठमाईसुं ॥१९२॥ (ही.)
 सव्वह गुणसिद्धेसुं, पवेसगा णिग्गमा-ऽत्थि ओघव्व ।
 णवरि तिणरेसु संखा, पणपटमाइगुणठाणगया ॥१९३॥ (ही.)
 असमत्तपणिदितिरिय-मणुयपणिदितस-ऽणुत्तरेसु तहा ।
 सव्वेसुं एगिंदिय-विगलिंदियपंचकायेसुं ॥१९४॥ (ही.भा.)
 आहारदुगे सुहमे, देसाभविमीससासणेसु तहा ।
 मिच्छत्तासणीसुं, पवेसगा णिग्गमा णत्थि ॥१९५॥ (ही.)

हीरसौभाग्यभाष्यम्] सत्ताविद्वाणं तत्त्व मूलपयडिसत्ता [४१

तत्त्व वि मयंतरेणं, पवेसगा-ऽज्जेऽत्थि णिग्गमा बीए ।

एगिंदियभूगत-ब्बायरतप्पज्जेमेएसुं ॥१६६॥ (ही.भा.)

वणकाये पत्तेए, तप्पज्जे तह असण्णम्मि । (उपगीतिः)

सिद्धन्तमए उ विगल तप्पज्जेसु वि य एमेव ॥१९७॥

आइमपवेसगदुइअ-णिग्गमुगलमीसविउवमीसेसुं ।

कम्मे अण्णाणतिगे-ऽणाहारे विण परे णत्थि ॥१९८॥ (ही.)

केवलदुगे उ तेरस-गुणेऽत्थि ण पवेसगा खइए । (ही.भा.)

दुमु तुरिआइगुणेसुं, पवेसगा णिग्गमा संखा ॥१९९॥ (उपगीतिः)

मग्गणपवेसगियरा, असंखसूअं गुलज्जमूलमिआ । (ही.भा.)

सेढी असंखसूअं गुलमाणा व णिरयज्जणिग्गयेसुं ॥२००॥ (गीतिः)

मयदुगमेवं भवणे, वच्चासा छदइआणिग्गयेसुं । (ही.भा.)

मणुए अज्जमणुए, असंखगुणसेट्ठिपढममूलमिआ ॥२०१॥

संखा-ऽत्थि दुग्गर-आणय पहुडिगुराहारदुगअवेएसुं ।

अकमाए मण्णाणे, केवलदुगसंजमेसु तहा ॥२०२॥ (ही.भा.)

समइअछेएसु तहा, परिह रम्मि मुहमे अहक्खाए ।

अणयणभविखइएसुं, णवरं णो णिग्गमा हुन्ति ॥२०३॥ (ही.)

केवलदुगखइएसुं, पवेसगा णत्थि अणयणे मव्वे ।

कप्पदुगे ऽज्जे अं गुल-विअमूल असंखगुणसेढी ॥२०४॥ (ही.भा.)

तइआईसु दुमु दसम-मूल असंखगुण भाइआ सेढी । (गीतिः)

चउसु कमा-ऽडुछचउतिस-मूल असंखगुण भाइआ सेढी ॥२०५॥

समजीव असंखंमो, एगवखणिगो अछगुरल दुगेमुं ।
 कम्मकसाय चउगतिअ-सुहलेसाहारगियरेसुं ॥२०६॥ (ही. भा.)
 बायरपज्जरहि अभू-दगऽग्गिवाउछगवणणिगो एमुं ।
 पत्तेए तदपज्जे, असंखलोगा मुण्येव्वा ॥२०७॥ (ही. भा.)
 पल्लासंखंमो पज्जबायरऽग्गितिदुणाणइयरेसुं । (ही. भा.)
 देसाजयोहिसम्भुव-समवेअगमीससाणमिच्छेसुं ॥२०८॥ (गी.)
 लोगासंखियभागो, बायरपज्जाणिले ण उ अभव्वे ।
 णिअपढमवग्गमूलअ-संखगुआ-ऽण्णामु सेढीओ ॥२०९॥ (ही.)
 एए गुरुओऽणंतअ-संखियलोगमिअरासिमंतामुं । (ही. भा.)
 लहुआ वि तत्तिआ चिअ. किंवृणाऽण्णह पुणो एगो ॥२१०॥
 अत्थि पढमगुणठाणं, जहि ताहि मग्गणपवेसणिग्गमगा । (गी.)
 गुणठाणेऽज्जे एवं, णवरि अणयणे भवे ण णिग्गमगा ॥२११॥
 जहि अत्थि उ दुइअपहृडि-गुणेसु लहुआ उ एग तहि गुरुओ ।
 पल्लासंखंमो-ऽज्जे, चउगे सेसणवगे संखा ॥२१२॥ (ही. भा.)
 तइअगुणे विण पणमण-वयउगलविउवकमायचउगाणि ।
 अजयछलेसा मिस्सं, पवेसगा णिग्गमा णत्थि ॥२१३॥ (ही.)
 ण पवेसगा-ऽखिलणिरय-दुपणिदितसणयणंयरभवीसुं । (ही. भा.)
 सण्णिम्मि य दुइअगुणे, ण णिग्गमा ऽन्तणिरयम्मि तहा ॥२१४॥
 दुपणिदितसेसु तहा, उरालमीसे विउव्वमीसे य ।
 दुअणाणेसुं अजए, चक्खुअचक्खुभविसण्णीसुं ॥२१५॥ (ही. भा.)

हीरसौभाग्यभाष्यम्] सत्ताविहाणं तत्थ मूलपयडिसत्ता [४३

अहवेगिंदियभूदग-उत्तब्बायरपज्जबायरेसु वणे (ही.भा.)
पत्तेए तप्पज्जे, विगलेसुं पज्जविगलअमणेसुं ॥२१६॥ (गीतिः)
हुन्ते पवेसगियरा, दुपणिंदितसेसु णयणसण्णीसुं ।
पल्लासंखियभागो, उअ आवलिआअसंखंसो ॥२१७॥ (ही.भा.)
सयमुज्झा दुइअगुणे पवेसगा मग्गणाअ उ णपुंसे ।
पल्लासंखियभागो, उअ आवलिआअसंखंसो ॥२१८॥ (ही.भा.)
तिणराणयाइगेमुं, दुइए संखा पवेसणिग्गमगा । (ही.भा.)
तुरिए णिरयतिणिरयति णराणयाइसुरउरलमीसेसुं ॥२१९॥
तिरिदुपणिंदितिरिणपुम-थीखइएमुं पवेसगा संखा । (गीतिः)
तुरिए दुइआइणिरय-भवणतिगेसु ण व ण उ तिरिच्छीए ॥२२०॥
चरमणिरयदुपणिंदिय-तमचक्खुअचक्खुमव्वसण्णीसुं (ही.भा.)
ण दुहा संखा-उण्णणिरय-सुरेसू खलु णिग्गमा ण पुण खइए ॥२२१॥
पंचमगुणठाणे चउ-तिरिक्खतिणरदुपणिंदियतसेसुं ।
वेअतिगे णयणेयर-भविसण्णीसु तह आहारे ॥२२२॥ (ही.भा.)
ण पवेसगा-उत्थि संखा, खइए तिणरेसु णिग्गमा संखा । (ही.)
ण उ दुपणिंदितसणयण-इयरमवियखइअमण्णीसुं ॥२२३॥
ण पवेसगा णरतिगे, छट्ठपमुदणवगुणंमु एत्थ तहा ।
संजमअहखायेसुं, ण णिग्गमा बारमाइदुगे ॥२२४॥ (ही.भा.)
दुपणिंदितसणयणियर-भदिसण्णीसुं पवेसगा णत्थि ।
छट्ठाइससगुणेसुं ण णिग्गमेवं विणा ससंतगुणं ॥२२५॥ (ही.)

४४] मुनिश्रीबीरशेखरविजयरचितं [हीरसौभाग्यभाष्यम्

ण पवेसगा हवन्ते, वेअतिगे तीसु छट्ठपमुहेसुं । (ही.भा.)
पुरिसे ण णिग्गमा वि य, दुविहा विण अट्ठमे कमायेसुं ॥२२६॥
गयवेए अकसाए, अहखाए विण ससज्जगुणठाणं । (ही.भा.)
ण पवेसगा अवेए, अकसाए णिग्गमा ण खीणतिगे ॥२२७॥
ण पवेसगा-ऽट्ठमाइग-गुणेसु णाणतिगओहिदुक्कामुं ।
एमेव णिग्गमा वि य, णवरि विणा संतगुणठ णं ॥२२८॥ (ही.)
ण पवेसगा-ऽट्ठमाइग गुणेसु मणणाणसंजमेसुं च ।
केवलदुगे पवेसा, चरमे ण ण णिग्गमा-ऽतदुगे ॥२२९॥ (ही.)
ण पवेसगा-ऽट्ठमगुणे, समइअछेएसु अट्ठमाईसुं ।
सम्मखइउवसमेसुं, पवेसगा णिग्गमा णत्थि ॥२३०॥ (ही.)
खइए ण णिग्गमा दुसु, छट्ठाईसु ण पवेसगा-ऽऽहारे । (गीतिः)
सत्तसु बारसमे उण, ण णिग्गमा णंतिमे अणाहारे ॥२३१॥
ओहे गुणठाणे-ऽज्जे-ऽणंता उववज्जमाणमिज्जंता । (गीतिः)
दुइअतुरिएसु पल्ला-ऽसंखंसा पंचमे मरंता च्च ॥२३२॥ (ही.)
मिज्जंता चिअ संखा, छट्ठाइछगे गुणे चउदसमे ।
एए गुरुओ णेया, दुइआईसु लदुओ एगो ॥२३३॥ (ही.भा.)
मग्गणपवेसणिग्गमगव्व कप्पुववज्जमाणमिज्जंता ।
सव्वासु मग्गणासुं, ओहसजोग्गगुणठाणेसुं ॥२३४॥ (ही.)
'णवरं पणमणवयुरल-वेउव्वाहारदुगअवेएसुं । (गीतिः)
अकसाए मणणाणे, केवलदुगसंजमेसु सामइए ॥२३५॥ (ही.)

छेए परिहारे तह, मुहमे अइखायदेसमीसेमुं ।
 णत्थि उववज्जमाणा, ओहसजोग्गगुणठाणेसुं ॥२३६॥ (ही. भा.)
 २ उववज्जंता-ऽण्णह वि य, णत्थि तइअपंचमाइमगुणेसुं (गी.)
 ओघव्व ३ सव्वह वि उ ण, मिज्जंता तइअवारसदुगेसुं ॥२३७॥
 ४ मिज्जंता ण विउवमीसकम्ममीसेमु ओहसगुणेसुं ।
 ५ समयमाहारगमीसे, णेयं ६ तुरिए णुरलमीसे ॥२३८॥ (ही. भा.)
 ७ हुन्ति अणंता जीवा, अणंतरामीसु अट्ठतीमाए ।
 ओहे-ऽज्जे गुणठाणे, उववज्जंता य मिज्जंता ॥२३९॥ (ही.)
 तत्थ वि णेयोहे तह, चउदसमे संखिया अणाहारे ।
 मिज्जंता णत्थि पढम-दुइअ-चउत्थगुणठाणेसुं ॥२४०॥ (ही.)
 ८ दुपणिंदितसणयणियर-भविसण्णीसु दुइआइगगुणेसुं । (ही. भा.)
 ओघव्वऽत्थि दुहा- ९ ऽट्ठम-पहुडीसुं सम्मखइएसुं ॥२४१॥
 १० विउवे तुरिए णेया; मिज्जंता संखिया गुणट्ठाणे ।
 ११ चउदसमे गयवेए, अकसाए केवलदुगे य ॥२४२॥ (ही.)
 १२ मिज्जंतोघव्व पुमे, छट्ठपमुहगुणतिगे १३ कसाएसुं ।
 अट्ठमगुणे तह १४ गुणे, बीए दुअणाणअजएमुं ॥२४३॥ (ही.)
 १५ ओघव्व तिणाणावहि-सुक्कासुं चउमु अट्ठमाईसुं ।
 मिज्जंता १६ संखेज्जा, चउतुरिआईसु उण खइए ॥२४४॥
 १७ (i) किण्हाए णीलाए, णुप्पज्जंताऽत्थि तुरिअगुणठाणे ।
 (ii) काऊअ संखिया (iii) तिसु मिज्जंता (iv) तिसु ण पंचमाइदुगे ॥
 ॥२४५॥ (गीतिः)

सुक्काए तहुवसमे, संखा उववज्जमाणमिज्जंता ।
 ओहे तह जहजोगं, सप्पाउग्गुणठाणणेसुं ॥२४६॥ (ही.)
 कालं तु वट्टमाणं, पडुच्च खेत्ते परूवणा णेया ।
 आसिज्ज अईअद्धं, परूवणा उण फरिसणाए ॥२४७॥ (ही.)
 केवलिआणं खेत्तं, असंखमागो हवेज्ज लोगस्स ।
 लोगस्स असंखेज्जा, भागा वा सव्वलोगो वा ॥२४८॥ (ही.)
 ओहस्स तिविहमवि तह, तिरियेगक्खपणकायपणमाणं ।
 सव्वमुहमकायउरल-दुगक्कम्मणपुंसचउकमायाणं ॥२४९॥ (गी.)
 दुअणाणाजयअणयण-अमुहतिलेसमविअमविमिच्छाणं । (गी.)
 अमणाहारियराणं, सठाणमासिज्ज खित्तमखिलजगं ॥२५०॥
 ऊणजगमिगक्खपवण-तिगाण-सेमाण जगअसंखंसो । (गी.)
 उववायसमुग्घाया, पडुच्च खित्तं तहेव जाणऽत्थि ॥२५१॥
 णवरि दुविहमखिलजगं, एगक्खणिगोअवायरतिगाणं ।
 बायरपुहवाइचउग-पत्तेआण तयपज्जाणं ॥२५२॥ (ही. भा.)
 तिणरदुपंचिदियतस-अवेअकसायकेवलदुगाणं ।
 संजमअहखायाणं, सुक्काए सम्मखइअसण्णीणं ॥२५३॥ (गी.)
 केवलखित्तपमाणं, अत्थि समुग्घायखित्तमासिज्ज ।
 मरणसमुग्घायं पुण, पंचदसण्हऽत्थि जगअसंखंसो ॥२५४॥
 ओहस्सऽत्थि सठाणुव-वाअसमुग्घायखेत्तओ फुसणा ।
 तिविहा वि सव्वलोगो, गमणागमणेण अह भागा ॥२५५॥

हीरसौभाग्यमाख्यम्] सराविहानं तत्थ मूलपयडिसत्ता [४०

सव्वत्थ एत्थ गंथे फुसणादारम्मि भागसद्देणं
जाणोयव्वो भागो, तसणाडीए चउइसमो ॥ २५६ ॥ (ही. भा.)
अह सव्वमग्गणाणं, सठाणफुसणा सठाणखित्तव्व । (गीतिः)
छेगाई णिरयदुइअ-णिरयाईणं कमोववाएणं ॥ २५७ ॥ (ही. भा.)
सुरणाणतिगोहिपउम-सम्मत्तगवेअगाण पण भागा । (गीतिः)
दुदुएगेगिगिगपढम-कप्पाइगतेउसासणाण कमा ॥ २५८ ॥ (ही.)
सद्धिगसद्धुमद्धति-चउसद्धचउपगसद्धिगगार ।
लोगामंखियभागो, पढमणिरयसेसदेवाणं । २५९ ॥ (ही. भा.)
वेउव्वियमीससुइल-खइअउवसमाण अह विभंगस्स ।
एगारस वारस वा, भागा केसिं चि णेव भवे ॥ २६० ॥ (ही.)
णत्थि पणमणवयउरल-वेउव्वाहारदुगअवेआणं ।
अकसायतुरिअणाणदु-केवलसंजमसमइआणं ॥ २६१ ॥ (ही. भा.)
छेअगपरिहागणं, सुहमाहक्खायदेसमीसाणं ।
उववाएण फरिसणा-ऽण्णपंचणवईअ सव्वजगं ॥ २६२ ॥ (ही.)
अत्थि समुग्घाएणं, फुसणा णिरय-दुइआइणिरयाणं । (ही.)
छेगो दोणिण य तिणिण य, चउरो पंच छ कमा भागा ॥ २६३ ॥
पढमणिरयगेविज्जय-पमुहसुराहारतुरिअणाणाणं ।
समइअपरिहारसुहम-छेआणं जगअसंखंसो ॥ २६४ ॥ (ही. भा.)
णव सुगईसाणावहि-तेऊण छ आणयाइदेवाणं । (गीतिः)
सेससुरतिणाणावहि-पउमुवसमवेअगाण अड भागा ॥ २६५ ॥

४८] मुनिश्रीवीरशेखरविजयरचितं [हीरसौभाग्यभाष्यम्

तेर पण बार भागा, वेउव्विय-देस-सासणाण कमा ।
ण दुमीसजोगमीसा-णियरेसिं होइ सन्वजगं ॥२६६॥
लोगासंखंसो उ अ-वेअकसायविरयाहखायाणं । (गीतिः)
मरणसमुग्घाएणं, सुक्काए छ अड सम्मखइआणं ॥२६७॥
गमणागमणेणं अड, सुर-ऽट्ठमंतदुपणिदियतसाणं ।
पणमणवयकायविउव थीपुरिसकसायचउगाणं । २६८॥(ही.)
णाणइयरतिगअजयति-दंसणपणलेसभवियअमवीणं । (गीतिः)
सम्मखइअवेअगउव-समसासणमीसमिच्छसण्णीणं ॥२६९॥(ही.)
तह आहारस्सऽत्थि छ, भागा चउआणयाइ-सुक्काणं ।
सेसाण ण अत्थि असुह-लेसाण वि णत्ति बिंति परे ॥२७०॥(ही.)

इति

मुनिश्रीवीरशेखरविजयरचितं

सत्ताविधानं

(सत्ताविधानं)

तत्थ

मूलपयडिसत्ता

(मूलप्रकृतिसत्ता)

तत्र

हीरसौभाग्यभाष्यं

समाप्तम्

॥ श्री शङ्खेश्वरपाश्वनाथाय नमः ॥
॥ श्री आत्म-कमल-वीर-दान-प्रेम-हीरसूरीश्वरसद्गुरुभ्यो नमः ॥

मुनिश्रीवीरशेखरविजयरचितं

सत्ताविहाणं

(सत्ताविधानं)

तत्थ

स्वोपज्ञ—

हीरसौभाग्यभाष्यसंवलित्ता

मूलपयडिसत्ता

(मूलप्रकृतिसत्ता)

सत्ताविहाणमुक्कं, सिरिवीरं णमिअ सपरसेयत्थं ।
जहसुत्तं वोच्छं गुरु-किवाअ सत्ताविहाणमिणं ॥१॥
तत्थ चउविहा सत्ता, शेया पयडिठिरसपएसत्तो ।
एक्केका उण दुविहा, मूलुत्तरपयडिभेअत्तो ॥२॥
पणमिय सिरिणवखण्डा-पासपहुं गुरुकिवाअ जहसुत्तं ।
भासेमि सुबोहत्थं, भासं विसयीकरणरूवं ॥१॥ (ही.भा.)
णाणस्स दंसणस्स य, आवरणं वेअमोहआऊणि ।
णामं गोअं विग्घं, एआ मूलपयडि अट्ठ ॥२॥ (ही.भा.)

तेसिं उत्तरपयडी, कमसो पंचणव दोणिण अडवीसं । (ही.भा.)

चउरो तिजुअमयं दो, पणऽत्थि सन्वा-ऽडवणणसयं ॥३॥

मइसुअऽवहिमणकेवल-णाणावरणं ति पंचहा पढमं ।

णयरेयरोहिकेवल-दंसणआवरणगं शेयं ॥४॥ (ही.भा.)

णिदा णिदाणिदा, पयला पयलपयला य थीणद्धी ।

एवं नवहा बीअं, सायमसायं दुहा तइअं ॥५॥ (ही.भा.)

होएज्ज मोहणीयं, दुविहं दंसण-चरित्तमेआओ ।

दंसणमोहो तिविहो, सम्मं मीसं च मिच्छत्तं ॥६॥ (ही.भा.)

दुविहो चरित्तमोहो, सोलकसायणवणोकसायेहिं ।

तहि कोहमाणमाया-लोहक्खा चउविहकसाया ॥७॥ (ही.भा.)

चउहा पत्तेगमणअ-पच्चक्खाणियरसंजलणमेआ । (गीतिः)

हुन्ति णवणोकसाया, हस्सरई अरइसोगभयकुच्छा ॥८॥ (ही.भा.)

थीपुरिसणपुमवेआ, इह होइ चउत्थमट्टवीसविहं ।

णरयतिरिणरसुराउग-मेएहिं पंचमं चउहा ॥९॥ (ही.भा.)

गइजाइतणुउवंगा, बंधणसंघायणाणि संघयणं ।

संठाणवण्णगंधरसफासअणुपुव्विविहयगई ॥१०॥ (ही.भा.)

पिंडपयडित्ति चउदस, तह अगुरुलहूवघायपरघाया ।

उस्सासआयवुज्जोअनिमिणतित्थमड पत्तेया ॥११॥ (ही.भा.)

तसवायरपज्जत्तं, पत्तेअथिरं सुहं च सुभगं च ।

सुस्सरआइज्जाणि य, जसकित्ती होइ तसदसगं ॥१२॥

थावरदसगं थावर-सुहमअपज्जत्तगाणि साहारं । (ही.भा.)
 अथिरअसुहदुभगाणि य, दुस्सरऽणाइज्जअजमं ति ॥१३॥
 पिंडपयडीण चउपण-पणत्तिगपणग्गसपंचछग्गछक्कं ।
 पणदुपणऽट्टचउदुगं, पणसयगी उत्तग्ग भेआ ॥१४॥ (ही.भा.)
 णिरयतिग्गिणग्गसुरगई. इग्गविअतिगचउपणिदिजाईओ ।
 उग्गलविउग्गवाद्दग्ग-तेअग्गकम्मणग्गमगीग्ग य ॥१५॥ (ही.भा.)
 पढमतितग्गुणुवंग्गा, होज्जा उग्गलाइग्गाण सजुआण ।
 पणबंधणाणि हुन्ते, कम्मणजुत्ताण चत्तारो ॥१६॥ (ही.भा.)
 तिणिण य तेअजुआणं, तेअसकम्मणजुआण तिणिण त्ति ।
 पण्णरहबंधणाइं, तग्गुव्व संघायणाणि पण ॥१७॥ (ही.भा.)
 संघयणं छद्दा वज्जरिसहणारायग्गिणहणारायं ।
 णारायद्दणारायं, कीलियल्लेवद्दगाणि त्ति ॥१८॥ (ही.भा.)
 समचउग्गंसे णिग्गोहसाइकुज्जाणि वामणं हुंढं ।
 संठाणा वण्णा किण्हनीललोहिअहलिद्दसिआ ॥१९॥ (ही.भा.)
 सुरहिदुग्गही रमा पण, तित्तकडुकसायअंघिला महुरो ।
 फामा गुरुलहुमिउखर-सीउण्हसिणिद्दरुक्खद्दा ॥२०॥ (ही.भा.)
 णिरयतिग्गिक्खमणुससुर अणुपुव्वी होज्ज सुहअसुहखगई ।
 छद्दं तिजुअसयविहं, णीउच्चं सत्तमं दुविहं ॥२१॥ (ही.भा.)
 तद्द दाणलाहभोगो-वभोगविरियंतरायगं चरमं ।
 पंचविहं इइ एआ, सव्वा अडवण्णजुत्तसयं ॥२२॥ (ही.भा.)

सत्तं पडुच्च एआ, णेया बंधम्मि वीसजुत्तसयं ।
 उत्तरपयडी उदए, बावीसाहियसयं जम्हा ॥२३॥ (ही.भा.)
 ससरीरन्तरभूया, बंधणसंधायणा उ बंधुदए ।
 वण्णाइचऊ गेज्झा, बंधे णो सम्ममीसाइं ॥२४॥ (ही.भा.)
 इह खलु ओहेण तहा, आएसेण जहसंभवं सत्तं ।
 वोच्छिहिमु मग्गणासुं. चउमत्तरिउत्तरसयम्मि ॥३॥
 गइइंदियाणि कायो, जोओ वेओ कसायणाणाणि ।
 संजमदंसणलेसा, भवसम्मं सण्णिआहारा ॥२५॥ (ही.भा.)
 इइ मूलमग्गणा सिं, भेआ हुन्ति सगचत्तगुणवीसा ।
 बायालऽट्टारसचउ पणअडऽडचउछदुसगदुदुगं ॥२६॥ (ही.भा.)
 णिरयो भूभेआ सग-णिरया तिरियो पणिंदितिरियो से ।
 जोणिमई पज्जियरा, एमेव चउव्विहा मणुसा ॥२७॥ (ही.भा.)
 देवभवणवइवंतर-जोइसपढमाइवारकप्पभवा ।
 पढमाई गेविज्जा, णव पंच अणुत्तरा णेया ॥२८॥ (ही.भा.)
 एगिंदियो तहा से, सुहमियरा होंति ताण पज्जियरा ।
 बित्तिचउपणिंदिया मिं, पज्जत्ता तह अपज्जत्ता ॥२९॥ (ही.भा.)
 एगिंदियव्व पुढवी-दग्गिवाऊ हवंति सत्तविहा ।
 वणकाया होइ दुहा, पत्तेअणिगोअभेअत्तो ॥३०॥ (ही.भा.)
 पत्तेअवणो तस्स य, पज्जत्तो तह भवे अपज्जत्तो । (गीतिः)
 सत्तविहोऽत्थि णिगोओ, पुहविव्व तसो पणिंदियव्व तिहा ॥३१॥

मणवयणा सिं भेआ, चउरो सच्चियरमीसववहारा ।
 कायो भेआ सगुरल-विउवाहारदुगकम्मा से ॥३२॥ (ही.भा.)
 थीपुमणपुमअवेआ, य कोहमयमायलोहअकसाया । (गीतिः)
 मइसुअवहिमणकेवल-णाणं मइसुअअणाणविब्भंगा ॥३३॥ (ही.)
 संजमसामइआइं, छेओ परिहारसुहुमअहखाया ।
 देमअजयाणि णयणे-यरोहिकेवलदरिसणाणि ॥३४॥ (ही.भा.)
 किण्हा नीला काऊ, असुहियरा तेउपम्हसुक्काओ ।
 भविया-ऽभविया सम्मं, खाइयवेअगउवसमा य ॥३५॥ (ही भा)
 मासायणं च मीमं, मिच्छं सण्णी तह अमण्णी । (ही भा.)
 आहाराणाहारा, इइ उत्तरमग्गणा णेया ॥३६॥ (उपगीतिः)
 मूलपयडिसत्ताए, णायन्वा पयडि-ठाण-भूगारा ।
 पयणिकखेवो वट्ठी, पण अहिगारा जहाकमसो ॥४॥
 तेसु पयडिआईसुं, अहिगारेसुं हवन्ति दाराणि ।
 पणरस चउदस तेरस, निण्ण य तेरस जहाकमसो ॥५॥
 अह विण्णेषाणि पयडि-अहिगारम्मि पढमम्मि संतपयं ।
 मामित्तसाइआइं, कालंतरसण्णियासा य ॥६॥
 भंगविचयो उ भागो, परिमाणं खेत्तफोसणा कालो ।
 अंतरभावप्पबहू, पणरस दाराणि जहाकमसो ॥७॥
 अट्ठण्ह वि कम्माणं, सत्ताऽसत्ताऽत्थि केवलदुगम्मि ।
 सत्ताऽत्थि अघाईणं, सेसदुसत्तरिसयेऽट्ठण्हं ॥८॥

तिणरदुपंचिदियतस-तिमणवयणकायुरालियदुगेसुं ।

कम्मम्मि संजमे तह, अहखाये सुकमवियआहारे ॥६॥ (गीतिः)

घाईणऽत्थि असत्ता, दुमणवयणजोगणाणचउगेसुं ।

णयणेयरोहिदंसण-सण्णीसुं अत्थि मोहस्स ॥१०॥

गयवेए अकसाये, मम्मत्तम्मि खइए अणाहारे ।

अट्टण्ह वि कम्माणं, केवलजुगले अघाईणं ॥११॥

जीवा णेया मिच्छा-दिट्ठी सामाणमीसदिट्ठी य ।

अविरयमम्मादिट्ठी, देमपमत्ताऽपमत्तजई ॥३७॥ (ही.भा.)

तहऽपुव्वकरणवत्ती, अणियट्ठी सुहुमसंपगाया य ।

उवसंतखीणमोहा, य सजोगिअजोगिणो सिद्धा ॥३८॥ (ही.भा.)

सव्वणिगयभेएसुं, सुरगेविज्जंतदेवविउवेसुं ।

अजयासुहलेमासुं, मिच्छाई हान्ति मम्मंता ॥३९॥ (ही.भा.)

मिच्छाई देमविरय-अंता तिरियतिपणिंदितिरियेसुं । (गीतिः)

मिच्छादिट्ठीया चिय, असमत्तपणिंदितिरियमणुसेसुं ॥४०॥ (ही.)

सव्वेसुं एगिंदिय-विगलिंदियपचकायभेएसुं ।

अममत्तपणिंदियतस-अभवियमिच्छत्तअमणेसुं ॥४१॥ (ही.भा.)

मिच्छाइअजोगंता, तिमणुमदुपणिंदिदुतसभवियेसुं ।

सम्मादिट्ठीया चिअ, पण-ऽणुत्तरदेवभेएसुं ॥४२॥ (ही.भा.)

तिमणवयणकायेसुं, ओरालम्मि सुइलाअ आहारे ।

मिच्छादिट्ठिप्पभिई, होअन्ति सजोगिपज्जंता ॥४३॥ (ही.भा.)

दुमणवयणजोगेसु', णयणेयरदरिसणेसु सण्णिम्मि ।
 मिच्छादिट्ठीयाई, णायच्चा खीणमोहंता ॥४४॥ (ही.भा.)
 मिच्छत्ती सासाणा, सम्मादिट्ठी सजोगिकेवल्लिणो ।
 ओगलमीमजोगे, कम्मणजोगे य होअन्ति ॥४५॥ (ही.भा.)
 विक्कियमीसे हुन्ते, मिच्छा सासायणा य सम्मत्ती ।
 णेया पमत्तजइणी, आहाराहारमीसेसु' ॥४६॥ (ही.भा.)
 वेअकसायतिगे खलु, मिच्छत्ताइअणियट्ठिपज्जंता ।
 अणियट्ठिवायरई, सिद्धंता अत्थि गयवेए ॥४७॥ (ही.भा.)
 मिच्छाई सुहुमंता, हवन्ति लोहम्मि हुन्ति अकसाए ।
 उवसंतखीणमोहा, य सजोगिअजोगिणो सिद्धा ॥४८॥ (ही.भा.)
 णाणतिगे ओहिम्म य, सम्माई होन्ति खीणमोहंता ।
 होअन्ति पमत्ताई, मणणाणे खीणमोहंता ॥४९॥ (ही.भा.)
 केवलदुगे सजोगी, अजोगिसिद्धा-ऽत्थि मिच्छसासाणा । (गीतिः)
 अण्णाणतिगे हुन्ति अ-जोगंता संजमे पमत्ताई ॥५०॥ (ही.भा.)
 अणियट्ठिवायरंता, समइअछेएसु अप्पमत्तंता ।
 परिहारे देसजई, देसे सुहमा उ सुहुमम्मि ॥५१॥ (ही.भा.)
 उवसंतखीणमोहा, सहजोगअजोगिणो अहक्खाए ।
 तेउपउमासु णेया, मिच्छाई अप्पमत्तंता ॥५२॥ (ही.भा.)
 सम्माई सिद्धंता, सम्मे खइए य अप्पमत्तंता ।
 वेअगसम्मे णेया, उवसंतंता उवसम्मि ॥५३॥ (ही.भा.)

सासाणे सासाणा, मीसे मीमा तहा अणाहारे ।
 मिच्छा सासणसम्मा, सहजोगअजोगिणो सिद्धा ॥५४॥ (ही)
 मोहस्सुवसंतंता, सामी संतस्स खीणमोहंता ।
 घाईण अजोगंतता-ऽण्णोसिमसंतस्स सच्चहिं सेसा ॥१२॥ (गीतिः)
 घाईणं ओघव्व ति-णरदुपणिंदितमतिमणवयणोसुं ।
 कायोरालियसंजम-ऽहखायसुक्कभवियेसु आहारे ॥१३॥ (गीतिः)
 सव्वे वि अघाईणं, दुमणवयणणाणचउगमणीसुं ।
 दंसणतिगे य सव्वे, सत्तण्होघव्व मोहस्स । १४॥
 सव्वे वि अघाईणं, चउण्ह ओरालमीसकम्मेसुं ।
 मिच्छो सामणमम्मा, चउण्ह घाईण विण्णोया ॥१५॥
 अट्टण्होघव्व भवे, अवेअकसायसम्मखइएसुं ।
 केवलदुगे सजोगिअ-जोगी णेया अघाईणं । १६॥
 घाईण मिच्छसासण-सम्मत्ती होइरे अणाहारे ।
 सेसाण सिद्धवज्जा, अण्णह अट्टण्ह सव्वे वि ॥१७॥
 अट्टण्ह वि कम्माणं, सत्ता णेया अणाइधुवअधुवा ।
 साइधुवाऽत्थि असत्ता, अट्टण्होघव्व अणयणे सत्ता ॥१८॥ (गी०)
 चउहा दुअणाणाजय-मिच्छेसुं अभविये अणाइधुवा ।
 भविये अणाइअधुवा, सेमासुं साइअधुवाऽत्थि ॥१९॥
 साइधुवाऽत्थि असत्ता, अवेअकसायकेवलदुगेसुं ।
 सम्मत्तखाइएसुं, सप्पाउग्गाण पयडीणं ॥२०॥

घाईण अणाहारे, साइदुवअदुवा अघाईणं ।
साइधुवाऽत्थि असत्ता, सेसासुं साइसंताऽत्थि ॥२१॥

कायठिई उक्कोसा, णिरयसुराणं विभंगणाणस्स ।
किण्हाए सुक्काए, तेत्तीसा सागरा णेया ॥५५॥ (ही.भा.)
पढमाइगणिरयाणं, कमसो एगो य तिण्णि मत्त दम ।
सत्तरह य बावीसा, तेत्तीसा सागरा णेया ॥५६॥ (ही.भा.)
णेया उ अमंखेज्जा, परिअट्टा पुग्गलाण तिरियस्स ।
एगिंदियहरिआणं, कायणपुंसग असण्णीणं ॥५७॥ (ही.भा.)
तिपणिंदियतिरियाणं, तिणराणं च पलिओवमा तिण्णि ।
अब्भहिया पुव्वाणं, कोडिपुहुत्तेण णायव्वा ॥५८॥ (ही.भा.)
सव्वापज्जत्ताणं, समत्तवायरणिगोअकायस्स ।
पज्जत्तगसुहुमाणं, पणमणवयउरलमीसाणं ॥५९॥ (ही.भा.)
वेउव्वदुगस्स तहा, आहारदुगस्स चउकसायाणं ।
सुहुमुवसममीसाणं, भिन्नमुहुत्तं मृण्येयव्वा ॥६०॥ (ही.भा.)
भवणस्स साहियुदही, पल्लं वंतरसुरस्स विण्णेया ।
पलिओवममब्भहियं, जोइसदेवस्स णायव्वा ॥६१॥ (ही.भा.)
सोहम्माईण कमा, अयरा दो साहिया दुवे सत्त ।
अब्भहिया सत्त य दस, चउदस सत्तरह णायव्वा ॥६२॥ (ही.)
एत्तो एगेगहिया, णायव्वा जाव एगतीसुदही ।
उवरिमगेविज्जस्स उ, तेत्तीसा-णुत्तराण भवे ॥६३॥ (ही.भा.)

अंगुलअसंखभागो, बायरएगिंदियस्स सुहमाणं ।
 तह पुहवाइचउण्हं, णेया लोगा असंखेज्जा ॥३४॥ (ही.भा.)
 बायरपज्जेगिंदिय - भूदगपत्तेअवाउविगलाणं । (गीतिः)
 संखेज्जसहस्ससमा, समत्तवेइंदियस्स संखसमा ॥३५॥ (ही.भा.)
 पज्जत्तगतेइंदिय-बायरतेऊण होइ संखेज्जा ।
 दिवसा संखियमासा, समत्तचउइंदियस्स भवे ॥३६॥ (ही.भा.)
 पंचिंदियचक्खूणऽहि-युदहि-सहस्सं तसस्स तं दुगुणं ।
 पज्जपणिदितमपुरिस-सण्णीणायरसयपुहुत्तं ॥३७॥ (ही.भा.)
 अद्धतइअपरिअट्ठा, भवे णिगोअस्म होइ कम्मठिई ।
 बायरपुहवाइचउग-णिगोअपत्तेअहरिआणं ॥३८॥ (ही.भा.)
 बावीससहस्ससमा, देसूणोरालियस्स विण्णेया ।
 कम्मस्स तिण्णिण समया, पल्लसयपुहुत्तमित्थीए ॥३९॥ (ही.भा.)
 गयवेअकमायाणं, साइअणंता य साइअंता य ।
 दुविहा हवेज्ज दुइआ, भिन्नमुहुत्तं भवे जेट्ठा ॥४०॥ (ही.भा.)
 दुइआ चेव हवेज्जा, छउमत्थस्स य तहा भवत्थस्स ।
 णवरि भवत्थस्स गुरू, कोडी पुव्वाण देसूणा ॥४१॥ (ही.भा.)
 साहियछसट्ठिजलही, तिणाणओहीण वेअगस्स भवे ।
 दुविहा अणाइणंता, अणाइसंता अचक्खुस्स ॥४२॥ (ही.भा.)
 मणणाणसंजमाणं, समइअछेअपरिहारदेसाणं ।
 देसूणा पुव्वाणां, कोडी एगा मुण्येव्वा ॥४३॥ (ही.भा.)

केवलदुग-खइआणं, साइअणंता लहू भवत्थस्स ।
 भिन्नमुहुत्तं केवल-दुगस्स जेट्ठणपुव्वकोडी उ ॥७४॥ (ही.भा.)
 खइअस्स भवत्थस्स य, छउमत्थस्स य लहू मुहुत्तंते ।
 तेत्तीमसागराइं, अब्भहियाइं भवे जेट्ठा ॥७५॥ (ही.भा.)
 दुअणाणाऽजयमिच्छाणऽणाइणंता अणाइसंता य ।
 साइमपज्जवसाणा, तइआ हीणद्वपरियट्ठो ॥७६॥ (ही.भा.)
 देसूणपुव्वकोडी, अहखायस्स हवए भवत्थस्म ।
 एमा गुरुकायठिई, छउमत्थस्स उ मुहुत्तंते ॥७७॥ (ही.भा.)
 णीलाइचउण्ह कमा, अयरा दस तिण्णि दोण्णि अट्ठार ।
 भवियस्स-ऽणाइसंता, अणाइणंता अभवियस्स ॥७८॥ (ही.भा.)
 सम्माणाहारणं, साइअणंता य साइसंता य ।
 सम्मस्सुददिछमट्ठी, अहियाऽण्णस्स समया तिण्णि ॥७९॥ (ही.भा.)
 सम्मस्म भवत्थस्म उ, तह छउमत्थस्स साइसंता च ।
 एवमणाहारे पर-मन्तमुहुत्तं गुरु भवत्थस्स ॥८०॥ (गीतिः) (ही.भा.)
 सामायणस्स गेया, आवलिआओ छ जेट्ठकायठिई ।
 आहारगस्स हवए, अंगुलभागो अमंखयमो ॥८१॥ (ही.भा.)
 केइ उण विति हवए, संखसहस्सवरिसा समत्ताणं ।
 वेइंदियतेइंदिय-चउइंदियबायरऽग्गीणं ॥८२॥ (ही.भा.)
 दो सागरा सहस्सा, समत्तसचक्खुदंसणाण भवे ।
 सत्तरह सत्त अयरा, होइ कमा नीलकाउणं ॥८३॥ (ही.भा.)

कायठिई णायच्चा, जहण्णगा दसमहस्सवासाणि ।
 णिरयपढमणिरयाणं, देवभवणवंतराणं च ॥८४॥ (ही.भा.)
 दुइआइगणिरयाणं, सा पढमाइणिरयाण जा जेट्ठा ।
 खुड्डभवो तिरियतिरिय-पणिदिमणुयतदपज्जाणं ॥८५॥ (ही.भा.)
 पज्जत्तभेअवज्जिअ-सेसिंदियकायभेमणणीणं ।
 अमणस्स जाणियच्चा, आहारस्स तिसमयहीणो ॥८६॥ (ही.भा.)
 भिन्नमुहुत्तं तु सयल-पज्जत्तगजोणिणीण कायस्स ।
 मीसदुजोगपुमाणं, तिकमायाणं मइसुआणं ॥८७॥ (ही.भा.)
 अण्णाणदुगस्स तहा, देमाजयचक्खुसव्वलेमाणं ।
 सम्मत्तवेअगाणं, उवमममीसाण मिच्छस्स ॥८८॥ (ही.भा.)
 पलियस्स अट्ठभागो, जोइमिअस्स पलिओवमं शेया ।
 सोहम्मसुरस्स भवे, ईसाणस्सअब्भहियपल्लं ॥८९॥ (ही.भा.)
 दोणिण हवेज्जा जलही, सणंकुमारस्स दोणिण अब्भहिया ।
 माहेंदस्स हवेज्जा, सत्त भवे बम्मदेवस्स ॥९०॥ (ही.भा.)
 लंतगदेवाईणं, सा बम्हसुगइगाण जा जेट्ठा । (गीतिः)
 सव्वत्थकेवलजुगल-अचक्खुभविअभविखाइआणं णो ॥९१॥ (ही.)
 समयोऽत्थि पणमणवयण-उरलदुगाहारविउवक्कमाणं ।
 इत्थीणपुंसगाणं, अवेअलोहाक्कसायाणं ॥९२॥ (ही.भा.)
 मणणाणोहिदुगविभंगसंजमसमइअछेअसुहुमाणं ।
 परिहाराहक्खायग-सासणऽणाहारगाणं च ॥९३॥ (ही.भा.)

अणो तिकमायाणं, समयो मणणाणओहिजुगलाणं ।
 संजमपरिहाराणं, भिन्नमुहुत्तं ति कायठिई ॥६४॥ (ही.भा.)
 सत्ताअ अत्थि दुविहो, अणाइणंतो अणाइमंतो य ।
 कालो अट्टण्ह भवे, साइअणंतो असत्ताए ॥२२॥
 गयवेए अकसाये, अहखाये य समयोऽत्थि अट्टण्हं ।
 कालो संतस्स लहू, घाईण गुरू मुहुत्तंतो ॥२३॥
 देखणपुव्वकोडी, अघाइचउगस्स केवलदुगे से ।
 भिन्नमुहुत्तं हस्सो, भवे गुरू पुव्वकोडंतो ॥२४॥
 'सम्मत्तखाइएसुं', अट्टण्ह लहू भवे मुहुत्तंतो ।
 जेट्ठोऽत्थि कमाऽब्भहिया, उदही छासट्ठितेचीसा ॥२५॥
 अट्टण्ह अणाहारे, लहू खणोऽण्णो तिखणअजोगिमितो ।
 घाइइयराण कमसो-ऽण्णह दुविहो सलहुजेट्ठिई ॥२६॥
 मत्वासु मग्गणासुं, शेयो सत्ताअ घाइइयरेसिं ।
 लहुगुरुकालो लहुगुरु-छउमत्थभवत्थकायठिई ॥२७॥
 तिमणुयदुपणिंदियतस-संजमअहखायसुकमवियेसुं ।
 आहारे घाईणं, भिन्नमुहुत्तं लहू असत्ताए ॥२८॥ (गीतिः)
 देखणपुव्वकोडी, जेट्ठो तिमणवयकायउरलेसुं ।
 घाईण लहू समयो, शेयो जेट्ठो मुहुत्तंतो ॥२९॥
 मोहस्स लहू समयो, दुमणवयेसुं गुरू मुहुत्तंतो ।
 घाईण उरलमीसे, लहू खणो दुसमया जेट्ठो ॥३०॥

घाईण कम्मणे खलु, समया तिण्णि दुविहो मुहुत्ततो ।
 णाणचउगदंसणतिग-सण्णीसु हवेज्ज मोहस्स ॥३१॥
 केवलदुगे चउण्हं, अवेअकसायसम्मखइएसुं ।
 अट्टण्होघव्व अणा-हारे कम्मव्व वि चउण्हं ॥३२॥
 अट्टण्ह वि कम्माणं, संतअसंताण अंतरं णत्थि ।
 एमेव मुणेयव्वं, सप्पाउग्गाण सव्वासुं ॥३३॥
 छण्ह णियमाऽज्जसंते, सत्ताऽत्थि सिआ चउत्थकम्मस्स ।
 दुइअचरमाण एवं, णियमाऽण्णेसिं तुरिअसंते ॥३४॥
 णियमिगअघाइसंते, तिअघाईणं मिआऽण्णचउगस्स । गीतिः)
 घाइतिगस्स अमत्ता-ऽज्जअसंतम्मि णियमा सिआऽण्णेसिं ॥३५॥
 दुइअचरमाण एवं, तुरिअसंते सिआऽण्णमत्तण्हं ।
 एगअघाइअसंते, णियमा सेसाण सत्तण्हं ॥३६॥
 संतस्स सण्णियासो, अट्टण्होघव्व अत्थि तिणरेसुं ।
 दुपणिंदितसेसुं तह, तिमणवयणकायजोगेसुं ॥३७॥
 ओरालिये अवेए, अकसाये संजमे अहक्खाये ।
 सुक्काए भविये तह, सम्मे खइअम्मि आहारे ॥३८॥
 दुमणवयणचउणाणति-दंसणसण्णीसु मोहसत्ताए ।
 अण्णेसिं णियमाऽण्णिग-संते छण्ह तुरिअस्स सिआ ॥३९॥
 णियमेगअघाइसंते, सत्तण्हऽण्णाण उरलमीसम्मि ।
 कम्माणाहारेसुं, अघाइचउगस्स ओघव्व ॥४०॥

सेसासु एगसंते, णियमाऽण्णेसिं भवे असंतस्स ।
 अट्ठण्होघव्व भवे, अवेअअकसायसम्मखइएसुं ॥४१॥ (गीतिः)
 तिमणुयदुपणिंदियतस-तिमणवयणकायउरलजोगेसुं ।
 संजमअहखायेसुं, सुक्काभवियेसु आहारे ॥४२॥
 मोहअसंते तिण्हं, सिआ असत्ता हवेज्ज घाईणं ।
 सेमिगघाइअसंते, सेसतिघाईण णियमाऽत्थि ॥४३॥
 णियमिगघाइअसंते, घाइतिगम्सुगलमीसकम्मेसुं ।
 एमेव केवलदुगे, अघाइचउगस्सऽणाहारे ॥४४॥
 णियमिगघाइअसंते-ऽण्णतिघाईणं सिआ अघाईणं ।
 एगअघाइअसंते, णियमाऽण्णेसिं ण सेसासुं ॥४५॥
 अट्ठण्ह संतकम्मा, असंतकम्मा हवेज्ज नियमाओ ।
 अट्ठण्ह संतकम्मा, अपज्जणरविउवमीसेसुं ॥४६॥
 आहारदुगे छेए, परिहारे सुहमउवसमेसु तहा ।
 सासायणमीसेसुं, भजणीआ खलु मुण्येव्वा ॥४७॥
 गयवेए अकसाये, अहखायेऽत्थि णियमा अघाईणं । (गीतिः)
 अधुवाऽण्णेसिं केवल-दुगे चउण्ह णियमाऽण्णहऽट्ठण्हं ॥४८॥
 णियमा असंतकम्मा, अवेअअकसायसम्मखइएसुं ।
 तहऽणाहारेऽट्ठण्हं, केवलजुगले अघाईणं ॥४९॥
 तिमणुयदुपणिंदियतस-तिमणवयणकायउरलजोगेसुं ।
 संजमअहखायेसुं, सुक्काभवियेसु आहारे ॥५०॥

णियमा घाईण उरल-मीसे कम्मे हवन्ति भजणीआ ।
 दुमणवयणचउणाणति-दंसणसणीसु मोहस्स ॥५१॥
 भयणीअपयस्स दुवे, भंगेगाणेगजीवमेआओ !
 तेचिअ तिगुणा दुजुआ, पयपयवड्डीअ कायव्वा॥९५॥ (ही. मा.)
 शेया अधुवपयसमा, ठविअतिसंखा परोप्परऽब्भत्था ।
 भंगा धुवसहिआणं, ते धुवरहिआण एगूणा ॥६६॥ (ही. मा.)
 अट्ठण्ह संतकम्मा, अणंतभागा हवेज्ज अवसेसा ।
 सव्वह असंतकम्मा, एवं शेया अणाहारे ॥६२॥
 णरदुपणिदितसतिमण-वयसुक्कासु हविरे असंखंसा ।
 घाईण संतकम्मा, अघाहचउगस्स णो भागो ॥५३॥
 घाईणं संखंसा, अत्थि दुणरसंजमेसु णऽण्णेसिं ।
 मोहस्स संखभागा, मणणाणे णत्थि सेसाणं ॥५४॥
 दुमणवयणजोगेसुं, तहा तिणाणोहिचक्खुसणीसुं ।
 मोहस्स असंखंसा, हवेज भागो ण सत्तण्हं ॥५५॥
 काये ओरालदुगे, कम्मणजोगभवियेसु आहारे ।
 घाईण अणंतंसा, भागो ण भवे अघाईणं ॥५६॥
 अट्ठण्ह अणंतंसो, अवेअअकसायसम्मखइएसुं ।
 केवलदुगम्मि णेया, अणंतभागो अघाईणं ॥५७॥
 घाईण अहक्खाये, संखंसो अणयणे अणंतंसा ।
 मोहस्स ण अण्णेसिं, दोसु वि सेसासु णऽट्ठण्हं ॥५८॥

स्वोपज्ञहीरसौभाग्यभाष्यसंवलितः मूलपयडीसत्ता [६५

इह मग्गणाऽहिकाउं, अट्ठण्हं संतकम्मइयरेसिं ।
उत्तो भागो वुच्चइ, पडुच्च उण सव्वजीवा सिं ॥५६॥
तिरिये तह एगिंदिय-णिगोअवणकायजोगणपुमेसुं ।
दुअणाणाजयअणयण-भविमिच्छेसुं असणिम्मि ॥६०॥
अट्ठण्ह संतकम्मा, अणंतभागा असंखभागाऽत्थि ।
बायरसव्वेगिंदिय-णिगोअकम्मणअणाहारे ॥६१॥
णया असंखभागा, सुहुमेगिंदियणिगोअआहारे ।
पज्जसुहुमएगिंदिय-णिगोअउरलेसु संखंसा ॥६२॥
सुहुमापज्जेगिंदिय-णिगोउरलमीसगेसु संखंसो ।
तिकसायेसुं द्वीणो, चउभागो साहिओ लोहे ॥६३॥
क्किहाएऽत्थि तिभागो-ऽब्भहियो ऊणो य णीलकाऊसुं । (गीतिः)
सेसासु अणंतंसो, असंतकम्माऽत्थि जाण जहि तहि सिं ॥६४॥
मज्झिमणंतानंतग-माणा मिच्छेवमजयपमुहावि ।
पल्लासंखंसो चउ-सासाणाइगुणठाणगया ॥९७॥ (ही.भा.)
कोडिसहस्सपुहुत्तं, पमत्तइयरा हवन्ति उ सजोगी ।
कोडिपुहुत्तं सेसछ-गुणठाणगया सयपुहुत्तं ॥६८॥ (ही.भा.)
मज्झिमजुत्ताणंता-ऽजोगी सिद्धा पवेसगेगाई ।
जाव उवसामगा चउ-वणणाऽहुत्तरसयं खवगा ॥६९॥ (ही.भा.)
हुन्ति उवसामगा-ऽप्पा, पवेसगा ताउ दुगुणिआ खवगा ।
ताउ कमा संखगुणा, अजोगिचउउवसमगखवगा ॥१००॥ (ही.भा.)

ताउ कमसो सजोगिअ-पमत्तइयरा तओ असंखगुणा ।
 देसा तो सासाणा, तो मीसा संखियगुणा वा ॥१०१॥ (ही.भा.)
 ताउ असंखेज्जगुणा, अविरयसम्मा तओ अणंतगुणा ।
 सिद्धा ताओ मिच्छा, तो अजयाई कमा-ऽब्भहिआ ॥१०२॥ (ही.भा.)
 अहवुवसंता-ऽप्पा तो, खीणा संखियगुणा तओऽब्भहिआ ।
 सुहमनियट्ठिअपुच्चा, तुल्लाऽण्णोण्णं तओ कमसो ॥१०३॥ (ही.भा.)
 जोगिअपमत्तइयरे, संखगुणा तो कमा असंखगुणा ।
 देसतिदुइआइगुणा, णवरिव संखियगुणा मीसा ॥१०४॥ (ही.भा.)
 तोऽणंतगुणा सिद्धा, ताउ विसेसाहिआ अजोगीओ ॥ (ही.भा.)
 मिच्छाऽत्थि अणंतगुणा, तो अजयाई कमाऽब्भहिआ ॥१०५॥
 जीवा असंखसेठी, णिरय-ऽज्जणिरय-दुकप्प-भवणेसुं ।
 सेट्ठिअसंखंसोऽण्णछ-णिरय-छकप्प-णर-तदसमत्तेसुं ॥१०६॥
 (गीतिः) (ही.भा.)

तिरिये सव्वेगिंदिय-णिगोअवणकाउरालियदुगेसुं ।
 कम्मणपुमकोहाइग-दुअणाणा-ऽजयअचक्खुसुं ॥१०७॥ (ही.भा.)
 तिकुलेसामिच्छभविय-अमणाहारेसु तह अणाहारे ।
 मज्झिमणंताणंतग-माणा-ऽणंता मुणेयच्चा ॥१०८॥ (ही.भा.)
 सव्वपणिंदितिरि-विगल-पणिंदि-तस-देव-वंतरदुगेसुं ।
 बायरपज्जत्तेसुं, भूदगपत्तेअकायेसुं ॥१०९॥ (ही.भा.)
 पणमणवयणविउवदुग-थीपुरिसविभंगणाणणयेसुं ।
 सुतिलेसासणीसुं, पयरस्स असंखयमभागो ॥११०॥ (ही.भा.)

दमणुयसन्वत्थेसुं, संखेज्जा सेसमुत्तिणणेसुं ।
 देमोहीसु तद्वसम-वेअगसासाणमीसेसुं ॥१११॥ (ही.भा.)
 पल्लामंखियभागो, वापरपज्जत्ततेउवाउसुं ।
 हुन्ति कमा देसणा, घणावली लोभमंसो ॥११२॥ (ही.भा.)
 णेया असंखलोगा, सेसेसु छवीसकायभेएसुं ।
 हुन्ति महस्सपुहुत्तं, आहारदुग्गमि परिहारे ॥११३॥ (ही.भा.)
 मिद्धपमाणाऽणंता, अवेअकमायकेवलदुग्गेसुं ।
 सम्मखइएसु चउसुं, कोडिपुहुत्तं तहि भवत्था ॥११४॥ (ही.भा.)
 गयवेए अकसाए, छउमत्था उ हविरे सयपुहुत्तं । (ही.भा.)
 पल्लामंखियभागो, दुविदा अवि सम्मखइएसुं ॥११५॥ (मीतिः)
 कोडिसहस्सपुहुत्तं. मणणाणे संजमे समइए य ।
 कोडिसयपुहुत्तं उण, छेए सुहमे सयपुहुत्तं ॥११६॥ ही.भा.)
 कोडिपुहुत्तं णेया, अहखाए तत्थ खलु सयपुहुत्तं ।
 छउमत्था जीवा लहु-जुत्ताणंता अभवियम्मि ॥११७॥ (ही.भा.)
 'सुहमे जीवा थोवा, 'तो छउमत्था समा व अकसाये ।
 अहखाए हुन्ति 'तओ, विसेसअहिया अवेए 'तो ॥११८॥
 संखगुणाऽऽहारदुग्गे, परिहारे 'ताउ केवलदुग्गमि । (ही.भा.)
 तणुधारी 'तोऽब्भहिया, अकसाये तह अहखाए ॥११९॥
 'ताउ भवत्था-ऽवेए, 'तत्तो छेअम्मि संखियगुणा 'तो ।
 मणणाणसमइएसुं, कमा 'तओ संजमे-ऽब्भहिया ॥१२०॥ (ही.)

^{१२}तो संखगुणा दुमणुय-सव्वत्थेसु^{१३}तओ असंखगुणा ।
 पज्जत्तवायरऽणत्ते, ^{१४}ताउ चउअणुत्तरसुरेसुं ॥१२१॥ (ही.भा.)
^{१५-१७}ताउ कमा ऽऽणयकप्पं, जा संखगुणा तओ अमंखगुणा ।
 देसे^{१६}तो सासाणे, ^{१७}ताउ उवसमम्मि संखगुणा ॥१२२॥ (ही.)
^{१८}तत्तो मीसे संखिय-गुणा अमंखियगुणा व विण्णोया ।
^{१९}ताउ खइए भवत्था, असंखियगुणा^{२०}तओ रोया ॥१२३॥ (ही.)
 ओहिदुगवेअगेसुं, ^{२१}तओ विसेसाहिया मुणेयच्चा ।
 मइसुअणाणेसुं^{२२}तओ, हुन्ति भवत्था उ सम्मत्ते ॥१२४॥ (ही.भा.)
^{२३-२५}ताउ असंखगुणा-ऽन्तिम णारगपमुहऽट्टमाइकप्पाणं ।
 दुदुएगेगेगेगे-गदुएगेसुं कमेण कमा ॥१२५॥ (ही.भा.)
^{२६}ताउ अपज्जत्तणरे, ^{२७}तओ विसेसाहिया णरे^{२८-२९}तत्तो ।
 दुइअ-पढमकप्पेसुं, कमा असंखगुण-संखियगुणा^{३०-३१}तो ॥
 भवण-पढमणिरयेसुं, कमा असंखियगुणा^{३२}तओ णिरये । (ही.)
 अब्भहिया अन्थि^{३३}तओ, सुक्काअ असंखियगुणा^{३४-३५}तो ॥
 कमसो पउम तिरिक्खी-वंतरपुमथीसु संखियगुणा^{३६-३७}तो ।
 कमसोऽब्भहिया जोइस-तेउ-सुर-विभंग-सणीसुं ॥१२८॥
^{३८}ता चउइंदियपज्जे, संखगुणा^{३९-४०}तो कमा विसेसाहिया ॥ (गी.)
 पज्जपणिदितिरिपणिदिणयणपज्जगवित्तिदियेसुं^{४१}तओ ॥१२९॥
 पज्जतसे संखगुणा, ^{४२}ताउ अपज्जगपणिदितिरियम्मि । (ही.)
 हुन्ति असंखगुणा^{४३}तो-ऽब्भहिया-ऽपज्जगपणिदिये^{४४-४५}तत्तो ॥

तिरियपणिदि-पणिदि-अ-पज्जोघचउतिविहंदिसेसु कमा । (ही.)

^{८५}ताउ अपज्जत्तसे, संखगुणा^{८५}तो तसेऽब्भहिया ॥१३१॥

^{८५}तो पत्तेअपुहविदग-ऽणिलपज्जेसु^{८५} कमा असंखगुणा । (ही.)

^{८६}ताउ अपज्जोहेसु^{८६}, कमा असंखगुणाब्भहिया ॥१३२॥

कममोऽन्थि बायरगणि-पत्तेअवणपुहवीदगऽणिलेसु^{८६} । (ही.भा.)

^{८६}ताउ असंखेज्जगुणा, हुन्ति अपज्जसुहमग्गिम्मि ॥१३३॥

^{१००}ताउ अपज्जसुहम-भू-दग-वाऊसु^{१०२} कमा विसेसहिया ।

^{१०३}तत्तो पज्जत्तसुहम-तेउम्मि हवेज्ज संखगुणा ॥१३४॥ (ही.भा.)

^{१०४}ताउ विसेमहिया-ऽगणि-सुहमे^{१०५} ताउ अगणिम्मि ताउ कमा । (गी.)
^{१०६} ११४

हुन्ति सुहमपज्ज-सुहम-ओहेसु कमेण भू-दग-ऽणिलेसु^{१०६} ॥१३५॥

^{११२} ११६ ताउ कमाऽणंतगुणा, अभवियकेवलदुगेसु ताउ कमा ।
^{११७} १२०

णेया विसेमअहिया, अकसायअवेअखइअसम्मेसु^{११७} ॥१३६॥ (गीतिः)

^{१२१}ताउ अणंतगुणा खलु, णेया पज्जत्तबायरणिगोए । (ही.)

^{१२२}ताओ हवेज्ज बायर-पज्जेगिदिम्मि अब्भहिया ॥१३७॥

^{१२३}भूलअपज्जणिगोए, तओ असंखियगुणा तओऽब्भहिया ।
^{१२४} १२६

बायरअपज्जिगिदिय-णिगोअएगिदियेसु कमा ॥१३८॥ (ही.भा.)

^{१२७} १२८ तो कम्मे-ऽणाहारे, कमा असंखियगुणा-ऽहिया तत्तो । (गीतिः)
^{१२९}

सुहमअपज्जणिगोए, असंखियगुणा^{१३०} तओ विसेसहिया ॥१३९॥

सुहमापज्जेगववे^{१३१} तत्तो सांखियगुणा वुरलमीसे । (ही.भा.)

^{१३२}तत्तो संखेज्जगुणा, माणे^{१३३} १३५ तओ विसेसहिया ॥१४०॥

कमसो कोहे माया-लोहेसुं काउ-णील-किण्हासुं ।

^{१४४}ताओ संखेज्जगुणा, उरल ^{१४०}तत्तो विसेसहिया ॥१४१॥ (ही.)

पज्जगसुहमणिगोए, ^{१४१}ताउ सुहमपज्जिगिंदियम्मि ^{१४२}तओ ।

आहारे ^{१४३}१४४ ताउ सुहम-णिगोअ एगिदयेसु कमा ॥१४२॥

^{१४५} १४६

ताउ कमा भविय-पणग-वणि-गिंदिय-काय अमण-णपुमेसुं ।

^{१४७} १४८

ताउ कमा निगि-मिच्छ-दु-अण्णाणा-ऽजय-अचस्खूसुं ॥१४३॥

मज्झम्मि सुकनेसा, पज्जगचउहंदियाण जहठाणं ।

बारसजोगप्पवह. मयं सटाणे उणो एवं ॥१४४॥ (ही. मा.)

थोवाऽत्थि विउवमीसे, ताओ संखियगुणा कमा णेया ।

सच्चअमच्चगमीस-व्ववहारेसु मणजोगेसु ॥१४५॥ (ही. मा.)

ताउ मणेऽब्भहिया तो, कमसो मच्चियग्गीमययणेसुं । (गीतिः)

संखगुणा तो विउवे, तो व्वहारे तओ वये-ऽब्भहिया ॥१४६॥

मज्झिमणंताणंतग-माणा मिच्छेवमजयपमुहावि ।

पल्लासंखंसो चउ-मामाणाऽगुणठणगया ॥१४७॥ (ही. मा.)

कोडिसहस्सपुहुत्तं, पप्रत्तउयगा हवन्ति उ सजोगी ।

कोडिपुहुत्तं सेसछ-गुणठाणगया सयपुहुत्तं ॥१४८॥ (ही. मा.)

एए गुरुओ ऽत्थि पढम-तुरिआइचउक्कतेरसगुणत्था । (ही. मा.)

लहुओ वि तत्तिआ खलु, एगो सेसगुणठाणगओ ॥१४९॥

मज्झिमजुत्ताणंता-ऽजोगी सिद्धा जहण्णउक्कोसा । (गीतिः)

सव्वह लहुओ एगो, पवेसगा णिग्गमाऽत्थि गुरुओ उ ॥१५०॥

पल्लासंखंसो पण-पढमाइगुणेषु अण्ह उ संखा । (गीतिः)
तहि वि उवसामगा चउ-वण्णा-ऽहुत्तरसयं खवगसिद्धा ॥ १५१ ॥ (ही.)

अण्णो गप्पणवणा-जीवसमासपमुहाहिपाएण ।

जीवा अमंससेढी, हवेज्ज णिरयज्जणिरयेसुं ॥ १५२ ॥ (ही. भा.)

अंगुलसूइदुइ अवग्गमूलगुणिअ-ऽज्जवग्गमूलमिआ । (ही. भा.)

अहवा अंगुलसूई-सेदिदुइ अवग्गमूलघणमाणा ॥ १५३ ॥ (गीतिः)

● अह पंचसंगहाइसु, मूलगुणिअसूइअंगुलपमाणा । (ही. भा.)

उअ सूइअंगुलपढम-मूलघणमिआ-ऽत्थि सेढीओ ॥ १५४ ॥

णिअवारमदसमऽट्टम-छट्टतइअदुइअवग्गमूलेहिं । (ही. भा.)

भज्जा सेढी कममो, अत्थि छुदुइआइणिरयेसुं । १५५ ॥

तिरिये सव्वेगिंदिय-णिगोअवणकायुगालियदुगेसुं ।

कम्मणपुमकोहाइग-दुअणाणाजयअचक्खूसुं ॥ १५६ ॥ (ही.)

तिकुलेसामिच्छभविय-अमणाहारेसु तह अणाहारे ।

मज्झिमणंतानंतग-माणा-ऽणंतं मुण्येव्वा ॥ १५७ ॥ (ही. भा.)

समजीवणंतभागा, तिरिवणिगिंदियणिगोअकायेसुं ॥ (ही. भा.)

णपुमदुअणाणाजय-अचक्खुभविमिच्छअमणेसुं ॥ १५८ ॥

समजीवअसंखंसा, सुहमेगिंदियणिगोअआहारेसुं । (आर्यागीतिः)

पज्जगसुहमेगिंदिय-णिगोअउरलेसु सयलजियसंखंसा ॥ १५९ ॥ (ही.)

समजीवअसंखंसो, बायरिगिंदियणिगोअतिगे । (ही. भा.)

कम्माणाहारेसुं, दससु सयलजीवसंखंसो ॥ १६० ॥ (उपगीतिः)

स वि लोहेऽब्भहिओ चउ-भागो ऊणो कसायतिगे। (उद्गीतिः)
 किण्हाएऽब्भहिओऽन्थि ति-भागो हीणो अ णीलकाउसुं ॥१६१॥
 जीवा पणिदियतिरिय-विगलपणिदितसतदसमत्तेसुं ।
 पज्जत्तवायरेसुं, भूदगपत्तेअहरिएसुं ॥१६२॥ (ही.भा.)
 भज्जं पयरं अंगुल-प्रसंखभागेण भाइअं पयरं । (गीतिः)
 संखेज्जजोयणमयग-वग्गेण तिरिच्छिदंतरेसुं च ॥१६३॥ (ही.)
 पज्जत्तपणिदितिरिय-विगलपणिदितसदुवयचवखूसुं ।
 पयरं भाइअमन्थि उ, अंगुलसंखेज्जभागेण ॥१६४॥ (ही.भा.)
 तइअगुणिअ-ऽज्जसूई-अंगुलमूलेण भाइआ सेढी ।
 अन्थि णरे रूवृणा, पज्जणरूणा अपज्जणरे ॥१६५॥ (ही.भा.)
 संखेज्जकोडिकोडी, गुणतीसंका व तइअजमलोप्पिं ।
 तुरिअजमलहेट्ठा व दु-णरेसु संखा य सव्वत्थे ॥१६६॥ (ही.भा.)
 छप्पणदुमयसूइअ-अंगुलवग्गेण भाइअं पयरं ।
 जोइमिए पणवणा-अणुओगद्दारपमुहेसुं ॥१६७॥ (ही०भा०)
 वग्गो ण पंचसंगह-जीवममासेसु देवसण्णीसुं । (गीतिः)
 एमेव णवरि णेयो, किंचूणां भायगो मयदुगे वि ॥१६८॥ (ही.भा.)
 भवणे पणवणाए, सूअंगुलपढमवग्गमूलस्स ।
 संखंसो अणुओगे, अमंखभागो अमंखसेढीओ ॥१६९॥ (गीतिः)
 भवणेऽज्जवग्गमूला-हयसूइअंगुलप्पमिअसेढी ।
 णेया जीवसमासे, गंथे उण पंचसंगहे भवणे ॥१७०॥ (गीतिः)

△ सेढीओ दुइअगुणिअ-सूअं गुलपढमवग्गमूलमिआ ।

★ सेढी तइअहयदुइअ-सूअं गुलमूलमज्जकप्पदुगे ॥१७१॥ (गीतिः)

तइअसुरदुगे सेगारवग्गमूलेण भाइआ सेढी ।

बम्हाइसुरचउक्के, सणवसगणचउवग्गमूलेहिं ॥१७२॥ (गीतिः)

पल्लासंखियभागो, विण्णेया सेससुरतिणाणेसुं ।

देसोढीसु तहुवसम वेअगसासाणमीसेसुं ॥१७३॥ (ही.भा.)

ऊणा घणावली उण, बायरपज्जत्ततेउकायम्मि ।

बायरपज्जत्ताणिल-काये उण लोगसंखंमो ॥१७४॥ (ही.भा.)

णेया असंखलोगा, सेसेसु छवीसकायभेएसुं ।

सुरसंखंमो पणमण-तिवयविउवमीसपुरिसेसुं । १७५॥ (ही.भा.)

मूला-ऽज्जाऽमंखगुणा, सेढी विउवथि(विभंगलेसतिगे ।

अत्थि सहस्सपुहुत्तं, आहारदुगम्मि परिहारे ॥१७६॥ (ही.भा.)

सिद्धपमाणाऽणंता, अवेअअकसायकेवलदुगेसुं ।

सम्मखइएसु चउसुं, कोडिपुहुत्तं तहि भवत्था ॥१७७॥

गयवेए अकमाए, छउमत्था उ हविरे सयपुहुत्तं ।

पल्लासंखियभागो, दुविहा अवि सम्मखइएसुं ॥१७८॥ (गीतिः)

कोडिसहस्सपुहुत्तं, मणणाणे संजमे समइए य ।

कोडिसयपुहुत्तं उण, छेए सुहमे सयपुहुत्तं ॥१७९॥ (ही.भा.)

कोडिपुहुत्तं णेया, अहखाए तत्थ खलु सयपुहुत्तं ।

छउमत्था जीवा लहु-जुत्ताणंता अभवियम्मि ॥१८०॥ (ही.)

एए जाणेयन्वा, उक्कोसाओ जहण्णओ मणुए ।
 पज्जत्तमणुस्ससमा, संखेज्जा खलु मुणेयन्वा ॥१८१॥ (ही.)
 एगो पुणो हवेज्जा, अपज्जमणुए विउव्वमीसे य ।
 आहारदुगे सुहमे, उवसममीसेसु सासाणे ॥१८२॥ (ही. भा.)
 छउमत्था-ऽऽसिज्जेगो, अवेअअकसायगाहखायेसुं । (गीतिः)
 छेए परिहारे सय-मूणा गुरुओऽण्णहिं कहिं चि समा ॥१८३॥
 शेया जहण्णजेट्ठा, एए सामण्णओ विसेमा उ ।
 अत्थि पढमगुणठाणं, जहि तहि सन्वत्थ एमेव ॥१८४॥ (ही.)
 ओघन्व दुइअआइग-चउदमअ तगुणठाणगयमिद्धा ।
 जत्थ ऽत्थि तत्थ शेया, × कहिं चि उण किंचि मविसेमा ॥१८५॥
 तहि वि तिणरेसु संखा दुइआइचउगुणठाणगा दुविहा ।
 सोघन्व सगुणठाणे. सन्वत्थाहारगदुगेसुं ॥१८६॥ (ही. भा.)
 अहवेगिदियभूदग-तब्बायरपज्जवायरेसु वणे । (ही. भा.)
 पत्तेए तप्पज्जे, विगलेसुं पज्जविगलअमणेसुं ॥१८७॥ (गीतिः)
 लहुओ एगो दुइए, गुणठाणम्मि गुरुओ पुणो शेया ।
 पलियासंखियभागे. उअ आवलिआअसंखंमो ॥१८८॥ (ही.)
 एगो जहण्णओ खलु, अत्थि उरलमीसविउव्वमीसेसुं ।
 तुरिअगुणठाणवत्ती, गुरुओ संखा उरलमीसे ॥१८९॥ (ही. भा.)
 कम्माणाहारेसुं, लहुओ एगो-ऽत्थि तुरियगुणठाणे । (गीतिः)
 लहुओ एगो तेरस-गुणठाणे-ऽत्थि गुरुओ सयपुहुत्तं ॥१९०॥

सोघव्व दुहा छेए, परिहारे छट्टसत्तमगुणोसुं ।
 दुविद्धा खेया संखा, खइए पंचमगुणट्ठाणे ॥१६१॥ (ही.भा.)
 लहुओ तुरिआइउग-गुणठाणगयाऽत्थि उवसमे एगो ।
 णत्थि खवगा पुणो गुण-ठाणेसुं अट्टमाईसुं ॥१९२॥ (ही.)
 सव्वह गुणसिद्धेसुं, पवेसगा णिग्गमा-ऽत्थि ओघव्व ।
 णवरि तिणरेसु संखा, पणपट्टमाइगुणठाणगया । १९३। (ही.)
 असमत्तपणिदितिरिय-मणुयपणिदितस-ऽणुत्तरेसु तहा ।
 सव्वेसुं एगिदिय-विगल्लिदियपंचकायेसुं ॥१९४॥ (ही.भा.)
 आहारदुगे सुहमे. देसाभविमीससासणेसु तहा ।
 मिच्छत्तासणीसुं, पवेसगा णिग्गमा णत्थि ॥१९५। (ही.)
 तत्थ वि मयंतरेणं, पवेसगा-ऽज्जेऽत्थि णिग्गमा बीए ।
 एगिदियभूदगत-व्वायरतप्पज्जेमेएसुं ॥१६६॥ (ही. भा.)
 वणकाये पत्तेए, तप्पज्जे तह असण्णिम्मि (उपगीतिः)
 सिद्धन्तमए उ विगल-तप्पज्जेसु वि य एमेव ॥१९७॥
 आइमपवेसगदुइअ-णिग्गमुरलमीसविउवमीसेसुं ।
 कम्मं अण्णाणतिगे-ऽणाहारे विण परे णत्थि ॥१९८॥ (ही.)
 केवलदुगे उ तेरस-गुणेऽत्थि ण पवेसगा खइए । (ही.भा.)
 दुसु तुरिआइगुणेसुं, पवेसगा णिग्गमा संखा ॥१९९॥ (उपगीतिः)
 मग्गणपवेसगियरा, असंखसूअं गुलज्जमूलमिआ । (ही.भा.)
 सेढी असंखसूअं गुलमाणा व णिरयज्जणिरयेसुं ॥२००॥ (गीतिः)

मयदुग्मेवं भवणे, वच्चासा छदुइआइणिरयेसुं । (गीतिः)
 मणुए अपज्जमणुए, असंखगुणसेट्ठिपढममूलमिआ ॥२०१॥
 संखा—ऽत्थि दुणर-आणयं पढुडिसुराहारदुग्मवेएसुं ।
 अकसाए मणणाणे, केवलदुगसंजमेसु तथा ॥२०२॥ (ही.भा.)
 समइअछेएसु तथा, परिहारम्मि मुहमे अहक्खाए ।
 अणयणभविखइएसुं, णवरं णो णिग्गमा हुन्ति ॥२०३॥ (ही.)
 केवलदुगखइएसु, पवेसगा णत्थि अणयणे भव्वे ।
 कप्पदुगे ऽज्जे अंगुल-विअमूलअसंखगुणसेही ॥२०४॥ (ही.भा.)
 तइआईसु दुमु दसम-मूलअसंखगुणभाइआ सेही । (गीतिः)
 चउसु कमा ऽट्ठिछचउत्तिम—मूलअसंखगुणभाइआ सेही ॥२०५॥
 समजीवअसंखंसो, एगक्खणिगोअग्गुरलदुगेसुं ।
 कम्मकसायचउगतिअ-मुहत्तेसाहारगियरेसुं ॥२०६॥ (ही.भा.)
 वायरपज्जरहिअभू-एगऽग्गिवाउछगवणणिगोएसुं ।
 पत्तेए तदपज्जे, असंखलोगा मुणेयव्वा ॥२०७॥ (ही.भा.)
 पत्तासंखंसो पज्जवायरऽग्गितिदुणाणइयरसुं । (ही.भा.)
 देसाज्जयोहिंसम्मव-समवेअगमीमसाणमिच्छेसुं । २०८॥ (गी.)
 लोगासंखियभायो, वायरपज्जाणिते ण उ अभव्वे ।
 णिअपढमवग्गामूलअ-संखगुआ-ऽण्णामु सेहीओ ॥२०९॥ (ही.)
 एए गुरुओऽणंतअ-संखियलोगमिअरासिमंतामुं । (ही.भा.)
 लहुआ वि तत्तिआ चिअ. किंचूणाऽण्ह पुणो एगो ॥२१०॥

अत्थि पढमगुणठाणं, जहि तहि मग्गणपवेसणिग्गमगा । (गी.)

गुणठाणेऽज्जे एवं, णवरि अणयणे भवे ण णिग्गमगा ॥२११॥

जहि अत्थि उ दुइअपहुडि-गुणंसे लहुओ उ एग तहि गुरुओ ।

पल्लासंखंमो-ऽज्जे, चउगे सेमणवगे संखा ॥२१२॥ (ही.भा.)

तइअगुणे विण पणमण-वयउरलविउवकमायचउगाणि ।

अजयछलेसा मिसं, पवेसगा णिग्गमा णत्थि ॥२१३॥ (ही.)

ण पवेसगा-ऽखिलणिरय-दुपणिदितसणयणेयरभवीसुं । (ही.भा.)

सणिणम्मि य दुइअगुणे, ण णिग्गमा ऽन्तणिरयम्मि तहा ॥२१४॥

दुपणिदितसेसु तहा, उरालमीसे विउन्वमीसे य ।

दुअणाणंसे अजए, चक्खुअचक्खुभविसणणीसुं ॥२१५॥ (ही.भा.)

अहवेगिंदियभूदग-ऽतब्बायरपज्जबायरेसु वणे (ही.भा.)

पत्तेए तप्पज्जे, विगलेसुं पज्जविगलअमणेसुं ॥२१६॥ (गीतिः)

हुन्ते पवेसगियरा, दुपणिदितसेसु णयणसणणीसुं ।

पल्लासंखियभागो, उअ आवलिआअसंखंमो ॥२१७॥ (ही.भा.)

सयमुज्झा दुइअगुणे, पवेसगा मग्गणाअ उ णपुंसे ।

पल्लासंखियभागो, उअ आवलिआअसंखंसो ॥२१८॥ (ही.भा.)

तिणराणयाइगेसुं, दुइए संखा पवेसणिग्गमगा । (गीतिः)

तुरिए णिरयतिणिरयति-गराणयाइसुरउरलमीसेसुं ॥२१९॥

तिरिदुपणिदितिरिणपुम-थीखइएसुं पवेसगा संखा । (गीतिः)

तुरिए दुइआइणिरय-भवणतिगेसु ण व ण उ तिरिच्छीए ॥२२०॥

चरमणिरयदुपणिदिय-तमचक्खुअचक्खुभवसण्णीसुं (गीतिः)
 ण दुहा संखा-ऽणणिरय-सुरेसु खलु णिग्गमा ण पुण खइए ॥२२१॥
 पंचमगुणठाणे चउ-तिरिक्खतिणरदुपणिदियतसेसुं ।
 वेअतिगे णयणेयर-भविसण्णीसु तह आहारे ॥२२२॥ (ही.भा.)
 ण पवेसगा-ऽत्थि संखा, खइए तिणरेसु णिग्गमा संखा । (ही.)
 ण उ दुपणिदितसणयण-इयरभवियखइअसण्णीसु ॥२२३॥
 ण पवेसगा णरतिगे, छट्ठपमुहणवगुणेसु एत्थ तहा ।
 संजमअहखायेसुं, ण णिग्गमा बारसाइदुगे ॥२२४॥ (ही.भा.)
 दुपणिदितसणयणियर-भविसण्णीसुं पवेसगा णत्थि । (गीतिः)
 छट्ठाइससगुणेसुं ण णिग्गमेवं विणा मसंतगुणं ॥२२५॥ (ही.)
 ण पवेसगा हवन्ते, वेअतिगे तीसु छट्ठपमुहेसुं । (गीतिः)
 पुरिसं ण णिग्गमा वि य, दुविहा विण अट्ठमे कमायेसुं ॥२२६॥
 गयवेए अकसाए, अहखाए विण ससज्जगुणठाणं । (गीतिः)
 ण पवेसगा अवेए, अकसाए णिग्गमा ण खीणतिगे ॥२२७॥
 ण पवेसगा-ऽट्ठमाइग-गुणेसु णाणतिगओहिसुक्कासुं ।
 एमेव णिग्गमा वि य, णवरि विणा संतगुणठाणं ॥२२८॥ (ही.)
 ण पवेसगा-ऽट्ठमाइग-गुणेसु मणणाणसंजमेसुं च ।
 केवलदुगे पवेसा, चरमे ण ण णिग्गमां-ऽतदुगे ॥२२९॥ (ही.)
 ण पवेसगा-ऽट्ठमगुणे, समइअछेएसु अट्ठमाईसुं ।
 सम्मखइउवसमेसुं, पवेसगा णिग्गमा णत्थि ॥२३०॥ (ही.)

खइए ण णिग्गमा दुसु, छट्ठाईसु ण पवेसगा—ऽऽहारे । (गीतिः)
 मत्तसु बाग्गमे उण, ण णिग्गमा णंतिमे अणाहारे ॥२३१॥
 ओहे गुणठाणे-ऽज्जे-ऽणंता उववज्जमाणमिज्जंता । (गीतिः)
 दुइअतुरिएसु पल्ला ऽसंखंसो पंचमे मरंता च्च ॥२३२॥ (ही.)
 मिज्जंता चिअ संखा, छट्ठाइछगे गुणे चउदसमे ।
 एए गुरुओ णेया, दुइआईसु लहुओ एगो ॥२३३॥ (ही.भा.)
 मग्गणपवेसणिग्गमगव्व कमुववज्जमाणमिज्जंता ।
 सव्वासु मग्गणामुं, ओहसजंग्गगुणठाणेसुं ॥२३४॥ (ही.)
 'णवरं पणमणवयुरल-वेउव्वाहारदुगअवेएमुं' । (गीतिः)
 अकसाए मणणाणे, केवलदुगसंजमेसु सामइए ॥२३५॥ (ही.)
 छेए परिहारे तह, सुहमे अहखायदेसमीसेसुं ।
 णत्थि उववज्जमाणा, ओहसजोग्गगुणठाणेसुं ॥२३६॥ (ही.भा.)
 'उववज्जंता-ऽण्णह वि य, णत्थि तइअपंचमाइसगुणेसुं' (गी.)
 ओघव्व 'सव्वह वि उ ण, मिज्जंता तइअवारसदुगेसुं' ॥२३७॥
 'मिज्जंता ण विउवमीसकम्ममीसेसु ओहसगुणेसुं' ।
 'सयमाहारगमीसे, णेयं 'तुरिए एरलमीसे ॥२३८॥ (ही.भा.)
 'हुन्ति अणंता जीवा, अणंतरासीसु अट्ठतीसाए ।
 ओहे-ऽज्जे गुणठाणे, उववज्जंता य मिज्जंता ॥२३९॥ (ही.)
 तत्थ वि णेयोहे तह, चउदसमे संखिया अणाहारे ।
 मिज्जंता णत्थि पढम-दुइअ-चउत्थगुणठाणेसुं ॥२४०॥ (ही.)

‘दुपणिदितसणयणियर भविसण्णीसु दुइआइगुणेसु’ (ही.भा.)
ओघव्वऽत्थि दुहा—^८ऽट्टम पडुडीसुं सम्मखइएसुं ॥२४१॥

‘विउवे तुरिए णेया, मिज्जंता संखिया गुणट्ठाणे ।

‘चउदसमे गयवेए, अकसाए केवलदुगे य ॥२४२॥ (ही.)

‘मिज्जंतोघव्व पुमे, छट्ठपमुहगुणतिगे ‘कसाएसुं ।

अट्टमगुणे तह ‘गुणे, बीए दूअणाणअजएसुं ॥२४३॥ (ही.)

‘ओघव्व तिणाणावहि-सुक्कासुं चउसु अट्टमाईसुं ।

मिज्जंता ‘संखेज्जा, चउतुरिआईसु उण खइए ॥२४४॥

‘^{१०}(i) किण्हाए णीलाए, गुप्पज्जंताऽत्थि तुरिअगुणठाणे ।

(ii)काऊअ संखिया (iii) तिसु, मिज्जंता(iv) तिसु ण पंचमाइदुगे ॥

॥२४५॥ (गीतिः)

‘मुक्काएतहुवसमे, संखा उववज्जमाणमिज्जंता ।

ओहे तह जहजोगं, सप्पाउग्गगुणठाणेसुं ॥२४६॥ (ही.)

अट्ठण्ह संतकम्मा, असंतकम्मा य होइरेऽणंता ।

तिरिये सव्वेगिंदिय-णिगोअवणकायजोगेसुं ॥२४७॥

उरलदुगकम्मणणपुम कसायचउगदुअणाणअजएसुं ।

अणयणतिअसुहलेमा-भवियेयरमिच्छअमणेसुं ॥२४८॥

आहारेऽणाहारे, य अणंताऽट्ठण्ह संतकम्माऽत्थि ।

दुमणुयमव्वत्थेसुं, आहारदुगम्मि गयवेए ॥२४९॥

अकसाये मणणाणे, संजमसामइअछेअसुहमेसुं ।

परिहारे अहखाये, संखा केवलदुगे अघाईणं ॥२५०॥ (गीतिः)

अट्टण्ह असंखाऽण्ह, असंतकम्मा अवेअकसाये ।
 केवलदुगसम्मखइअ-ऽणाहारेसुं अणंताऽत्थि ॥६९॥
 दुमणवयणचउणाणति-दंसणसण्णीसु अत्थि मोहस्स ।
 संखेज्जा सेसासुं, बावीसाअ चउघाईणं ॥७०॥
 कालं तु वट्टमाणं, पडुच्च खेत्ते परूवणा णेया ।
 आसिज्ज अईअद्धं, परूवणा उण फरिसणाए ॥२४७॥ (ही.)
 केवलिआणं खेत्तं, असंखभागो हवेज्ज लोगस्स ।
 लोगस्स असंखेज्जा, भागा वा सव्वलोगो वा ॥२४८॥ (ही.)
 ओहस्स तिविहमवि तह, तिरियेगक्खपणकायपणगाणं ।
 सव्वसुहमकायउरल-दुगकम्मणपुंसचउकसायाणं ॥२४९॥ (गी.)
 दुअणाणाजयअणयण-असुहतिलेसभविअभविमिच्छाणं । (गी.)
 अमणाहारियराणं, सठाणमासिज्ज खित्तमखिलजगं ॥२५०॥
 ऊणजगमिगक्खपवण-तिगाण सेसाण जगअसंखंसो । (गी.)
 उववायसमुग्घाया, पडुच्च खित्तं तहेव जाणऽत्थि ॥२५१॥
 णवरि दुविहमखिलजगं, एगक्खणिगोअवायरतिगाणं ।
 वायरपुहवाइचउग-पत्तेआण तयपज्जाणं ॥२५२॥ (ही.भा.)
 तिणरदुपंचिदियत्तस-अवेअकसायकेवलदुगाणं ।
 संजमअहखायाणं, सुक्काए सम्मखइअसण्णीणं ॥२५३॥ (गी.)
 केवलखित्तपमाणं, अत्थि समुग्घायखित्तमासिज्ज । (गीतिः)
 मरणसमुग्घायं पुण, पंचदसण्हऽत्थि जगअसंखंसो ॥२५४॥

अट्टण्ह सच्चलोए-ऽत्थि संतकम्मेयरा-ऽत्थि घाईणं ।
 केवल्लिखेत्ते लोगा-ऽसंखियभागे अघाईणं ॥७१॥
 सयलजगे तिरिसच्चे-गिदिणिगोअवणसेससुहमेसुं ।
 पुहवाईसु चउसु सिं, बायर-बायरअपज्जेसुं ॥७२॥
 पत्तेअवणम्मि तहा, तदपज्जत्तम्मि कायजोगे य ।
 उरलदुगकम्मणणपुम-कसायचउगदुअणाणेसुं ॥७३॥
 अजए अचक्खुतिअसुह-लेसाभविणियरमिच्छअमणेसुं ।
 तह आहारियरेसुं, अट्टण्हं संतकम्माऽत्थि ॥७४॥
 लोगासंखियभागे, तिमणुयदुपणिंदितसअवेएसुं । (गीतिः)
 अकसायसंजमेसुं, अहखाये सुक्कसम्मखइएसुं ॥७५॥
 घाईण अघाईणं, केवल्लिखेत्तम्मि केवलदुगे वि ।
 अट्टण्ह उणलोए, बायरपज्जत्तवाउम्मि ॥७६॥
 लोगासंखियभागे, अण्ह घाईण जगअसंखंसे ।
 णेया असंतकम्मा, तिमणवयउरलदुगेसु आहारे ॥७७॥ (गीतिः)
 दुमणवयणचउणाणति-दंसणसण्णीसु मोहणीयस्स ।
 लोगासंखियभागे, असंतकम्मा मुण्येव्वा ॥७८॥
 लोगासंखंसेसुं, समत्तलोए व कम्मणे णेया ।
 घाईणोघच्च भवे, सप्पाउग्गाण सेसासुं ॥७९॥
 ओहस्सऽत्थि सठाणुव-वाअसमुग्घायखेत्तओ फुसणा ।
 तिविहा वि सच्चलोगो, गमणागमणेण अड भागा ॥८०॥

सव्वत्थ एत्थ गंथे, फुसणादारम्मि भागसहेणं
जाणेयव्वो भागो, तसणाडीए चउदसमो ॥ २५६ ॥ (ही.भा.)
अह सव्वमग्गणाणं, सठाणफुसणा सठाणखित्तव्व । (गीतिः)
छेगाई णिरयदुइअ-णिरयाईणं कमोववाएणं ॥ २५७ ॥ (ही.भा.)
सुरणाणतिगोहिपउम-सम्मत्तगवेअगाण पण भागा । (गीतिः)
दुदुएगेगिगिगपढम-कप्पाइगतेउसासणाण कमा ॥ २५८ ॥ (ही.)
सद्धिगसद्धदुसद्धति-चउसद्धचउपणसद्धिगंगार ।
लोगासंखियभागो, पढमणिरयसेसदेवाणं ॥ २५९ ॥ (ही.भा.)
वेउव्वियमीससुइल-खइअउवसमाण अह विभंगम्मस ।
एगारस बारस वा, भागा केसिं चि णेव भवे ॥ २६० ॥ (ही.)
णत्थि पणमणवयउरल-वेउव्वाहारदुगअवेआणं ।
अकसायतुरिअणाणदु-केवलसंजमसमइआणं ॥ २६१ ॥ (ही.भा.)
छेअगपरिहारानं, सुहमाहक्खायदेसमीसाणं ।
उववाएण फरिसणा-ऽण्णपंचणवईअ सव्वजगं ॥ २६२ ॥ (ही.)
अत्थि समुग्घाएणं, फुसणा णिरय-दुइआइणिरयाणं । (ही.)
छेगो दोणिण य तिणिण य, चउरो पंच छ कमा भागा ॥ २६३ ॥
पढमणिरयगेविज्जय-पमुहसुराहारतुरिअणाणाणं ।
समइअपरिहारसुहम-छेआणं जगअसंखंसो ॥ २६४ ॥ (ही.भा.)
णव सुरईसाणावहि-तेउण छ आणयाइदेवाणं । (गीतिः)
सेससुरतिणाणावहि-पउमुवसमवेअगाण अड भागा ॥ २६५ ॥

तेर पण बार भागा, वेउव्विय-देस-सासणाण कमा । (ही.)
 ण दुमीसजोगमीसा-णियरेसिं होइ सव्वजगं ॥२६६॥
 लोगासंखंसो उ अ-वेअकसायविरयाहखायाणं । (गीतिः)
 मरणसमुग्घाएणं, सुक्काए छ अड सम्मखइआणं ॥२६७॥
 गमणागमणेणं अड, सुर-ऽट्ठमंतदुपणिंदियतसाणं ।
 पणमणवयकायविउव-थीपुसिकसायचउगाणं । २६८॥ (ही.)
 णाणइयरतिगअजयति-दंसणपणलेसभवियअभवीणं । (गीतिः)
 सम्मखइअवेअगउव-समसासणमीसमिच्छसण्णीणं ॥२६९॥ (ही.)
 तह आहारस्सऽत्थि छ, भागा चउआणयाइ-सुक्काणं ।
 सेसाण ण अत्थि असुह-लेसाण वि णत्ति विति परे ॥२७०॥ (ही.)
 अट्ठण्ह सव्वलोगो, परिपुट्ठो होइ संतकम्मेहिं ।
 इयरेहि वि घाईण अ-घाईणं जगअसंखंसो ॥२७१॥
 णिरयचरमणिरयेसुं, चउआणयपहुडिदेवसुक्कासुं ।
 भागा छ अत्थि फुसिआ, अट्ठण्हं संतकम्मेहिं ॥२७२॥
 णवरि अघाईण सयल-लोगो सुक्काअ होइ परिपुट्ठो ।
 लोगासंखियभागो-ऽज्जणिरयगेविज्जणवगेसुं ॥२७३॥
 पंचसु अणुत्तरेसुं, आहारगदुगविउव्वमीसेसुं ।
 मणणाणसमइएसुं, छेए परिहारसुहमेसुं ॥२७४॥
 दुइआइणिरयपणगे, विउवे देसम्मि सासणे कमसो ।
 इगदुतिचउपण तेरह, पण बारह फोसिआ भागा ॥२७५॥

णव भागाऽत्थि फरिसिआ, सुरईसाणंततेउलेसासुं ।
 सेससुरतिणाणावहि-पम्हवसममीसवेअगेसु अड ॥८५॥ (गीतिः)
 घाईणं गयवेए, अकसाये संजमे अहवखाये ।
 लोगासंखियभागो, अड भागा सम्मखइएसुं ॥८६॥
 छसु वि फुसिअमखिलजगं, अघाइचउगस्स केवलदुगे वि ।
 सेसासु सव्वलोगो, अट्ठण्हं फोसिओ णेयो । ८७॥
 लोगासंखियभागो, तिमणवयउरलदुगेसु आहारे ।
 छुहिओ भवे चउण्हं, घाईण असंतकम्ममेहिं । ८८॥
 दूमणवयणचउगाणति-दंसणसण्णीसु जगअसंखंसो ।
 मोहस्सोघव्वं भवे, सप्पाउग्गाण वीमाए ॥८९॥
 अट्ठण्ह भवे कालो, सव्वद्धा संतकम्मइयरेसि ।
 असमत्तणरम्मि लहू, खुड्डभवो संतकम्माणं ॥९०॥
 भिन्नमुहुत्तं विक्किय-मीसे मीसुवसमेसु समयोऽत्थि । (गीतिः)
 सासाणे होइ पलिअ-असंखभागो उ पंचसु वि जेट्ठो । ९१॥
 होइ लहू आहारे, सुहमे समयो गुरु मुहुत्तंतो ।
 आहारमीसजोगे, दुहा अवेअअकसायेसुं ॥९२॥
 अहखाये घाईणं, समयो हस्सो गुरु मुहुत्तंतो ।
 होइ चउअघाईणं, सव्वद्धा केवलदुगे वि ॥९३॥
 अट्ठतइअसयवासा, छेए अट्ठण्ह होअइ जट्ठणो ।
 जेट्ठो हवेज्ज अयरा, पण्णासं लक्खकोडीओ ॥९४॥

परिहारम्मि जहण्णो, वीसद्धपुहुत्तमत्थि उक्कोसं ।

ऊणा दुपुव्वकोडी. हवेज्ज सेसासु सव्वद्धा ॥१५॥

मोहस्स लहु समयो, असंतकम्माण मणवयदुगेऽण्णो ।

भिन्नमुहुत्तं दुविहो, चउणाणतिदंसणेसु सण्णिम्मि ॥१६॥ (गीतिः)

समयो घाईण उरल-मीसे हम्सोऽत्थि तिसमया कम्मे । (गीतिः)

दोसु गुरु संखवणा, सगकम्माण इयरासु सव्वद्धा ॥१७॥

अट्ठण्ह अंतरं खलु, हवेज्ज णो संतकम्मइयरेसिं ।

अट्ठण्ह अपज्जणरे, मासणमीसेसु संतकम्माणं ॥१८॥ (गीतिः)

समयो हस्सं जेड्डं, अमंखभागो हवेज्ज पल्लस्स ।

समयो विउव्वमीसे, लहुं गुरुं बारह मुहुत्ता ॥१९॥

आहारदुगे समयो, लहुं गुरुं होइ दायणपुहुत्तं ।

घाईण लहुमवेए, अकसाये तह अहक्खाये ॥२०॥

समयो गुरुं छमासा, परमद्धपुहुत्तमत्थि दोसु गुरुं । (गीतिः)

मोहस्स तासु तीसु वि, केवलजुगले य णो अवाईणं ॥२०१॥

छेए परिहारे लहु-मट्ठण्ह कमा सहस्सवासाणि । (गीतिः)

तेवट्ठी चुलमीई, गुरुमयराऽट्ठार कोडिकोडीओ ॥२०२॥

सुहमम्मिलहुं समयो, गुरुं छमासाऽत्थि उवसमे समयो ।

लहुमण्णं सत्त दिणा, ण सेसगुणसट्ठिजुत्तसये ॥२०३॥

दुमणवयणचउणाणति-दंसणसण्णीसु लहु चउत्थस्स । (गीतिः)

घाईण उरलमीसे, कम्मे समयो असंतकम्माणं ॥२०४॥

दुमणवयणाणदंसण-सण्णीसु गुरुं हवेज्ज छम्मासा ।
 वासपुहुत्तमुरालिय-मीसे कम्ममणणाणेसुं ॥१०५॥
 ओहिदुगे अहियसमा, होइ परे बिंति हायणपुहुत्तं ।
 सप्पाउग्गाण भवे, ण चैव सेससगवीसाए ॥१०६॥
 भावेणोदइएणं, सत्ताऽदुण्ह खइएण उ असत्ता ।
 एवं सत्ता-ऽसत्ता, सप्पाउग्गाण सव्वासुं ॥१०७॥
 अदुण्ह अणंतगुणा ऽत्थि संतकम्मा असंतकम्माओ ।
 एमेव अणाहारे-ऽदुण्हं मोहस्स य अणयणे । १०८॥
 कायउरलदुगकम्मण-भवियाहारेसु अत्थि घाईणं ।
 णरदुपणिंदितसतिमण-वयसुककासुं अमंखगुणा ॥१०९॥
 एवं मोहस्स दुमण-वयणतिणाणोहिचक्खुसण्णीसुं । (गीतिः)
 संखगुणा घाईण दु-णरविरईसु तुरिअस्स मणणाणे ॥११०॥
 गयवेए अकसाये, सम्मे खइए य अदुपयडीणं ।
 णेया असंतकम्मा-ऽणंतगुणा संतकम्माओ ॥१११॥
 एमेव अघाईणं, हवेज्ज केवलदुगम्मि घाईणं ।
 संखगुणाऽहक्खाये, सेमासुं णत्थि अप्पवहू ॥११२॥
 थोवा असंतकम्मा, अघाइचउगस्स तो विसेसहिया ।
 तिण्हं घाईण तओ, मोहस्स तओ अणंतगुणा ॥११३॥
 तस्स चिअ संतकम्मा, तत्तो णेया विसेसहिया । (उपगीतिः)
 तिण्हं घाईण तओ, अत्थि चउण्हं अघाईणं ॥११४॥

णरदुपणिंदितसतिमण-वयसुक्कासुं' असंतकम्माऽप्पा ।
 घाईण तिण्ह ताओ, विसेसअहियाऽत्थि मोहस्स ॥११५॥
 तो तस्स संतकम्मा, असंखियगुणा तओ विसेसहिया ।
 तिण्हं घाईण तओ, अघाइचउगस्स विण्णेया ॥११६॥
 मणुयव्वऽप्पाबहुगं, विण्णेयं दुणरसंजमेसु परं ।
 मोहस्स संतकम्मा, संखेज्जगुणा मुण्येव्वा ॥११७॥
 काये ओराले तह, भविया-ऽऽहारेसु होइ मणुयव्व ।
 परमत्थि संतकम्मा, अणंतगुणिआ चउत्थस्स ॥११८॥
 मोहस्स हवेज्ज दुमण-वयणतिणाणोहिचक्खुसुण्णीसुं ।
 थोवा असंतकम्मा, तत्तो णेया असंखगुणा ॥११९॥
 तस्स चिअ संतकम्मा, तओ विसेसाहियाऽत्थि सत्तण्हं ।
 मोहस्स संतकम्मा, अहखायेऽप्पा तओ णेया ॥१२०॥
 घाईणं संखगुणा, तत्तो तेसिं असंतकम्मा तो । (गीतिः)
 मोहस्स विसेसहिया, तओ अघाईण संतकम्माऽत्थि ॥१२१॥
 थोवा असंतकम्मा, घाईणं उरलमीसकम्मेसुं ।
 तो ताण संतकम्मा-ऽणंतगुणा तो विसेसहिया ॥१२२॥
 हुन्ति चउअघाईणं, एवमणाहारगम्मि होइ परं ।
 घाईण अघाईओ, असंतकम्मा विसेसहिया ॥१२३॥
 गयवेए अकसाये, थोवा मोहस्स संतकम्मा तो ।
 घाईण विसेसहिया, तओ अघाईण संखगुणा ॥१२४॥

तत्तो असंतकम्मा, सिमणंतगुणा तओ विसेसहिया ।
 घाईण तिण्ह तत्तो, विण्णेया मोहनीयस्स ॥१२५॥
 मणणाणाचक्खुसुं, दुमणोजोगव्व णवरि णायव्वा ।
 मोहस्स संतकम्मा, कमसो संखगुणऽणंतगुणा ॥१२६॥
 गयवेअव्व हवेज्जा, सम्मत्तम्मि ख्हअम्मि अप्पबहू ।
 परमत्थि संतकम्मा, विसेसअहिया अघाईणं ॥१२७॥
 थोवाऽत्थि संतकम्मा, अघाइचउगस्स केवलदुगम्मि ।
 ताउ अणंतगुणा से, असंतकम्मा ण सेसासुं ॥१२८॥
 बीए खलु अहिगारे, सत्ताठाणम्मि हुन्ति संतपयं ।
 सामित्तसाइआई, कालंतरमेमजीवस्स ॥१२९॥
 भंगविचयो उ भागो, परिमाणं खेत्तफोसणा कालो ।
 अंतरभावऽप्पबहू, चउदम दाराणि जहकमसो ॥१३०॥
 अत्थि अड सत्त चउरो, तिसंतठाणाणि मूलपयडीणं ।
 एमेव खलु तिमणुयदु-पणिदितसतिमणवयणेसुं ॥१३१॥
 कायुरलअवेएसुं, अकसाये संजमे अहक्खाये ।
 सुक्कभविष्यसम्मेसुं, ख्हआहारेसु णेयाणि ॥१३२॥
 दुमणवयणचउणाणति-दंसणसण्णीसु अट्ट सत्तऽत्थि ।
 अड चउरो अत्थि उरल-मीसे कम्मे अणाहारे ॥१३३॥
 चत्तारि केवलदुगे, अड सेसासु अडसंतठाणस्स । (गीतिः)
 ओहेणाएसेण वि, सामित्ताईसु मोहसंतव्व ॥१३४॥

णवरं भागदुआरे, संखंसो अट्टसंतठाणस्स । (गीतिः)
 गयवेए अकसाये, असंखमागाऽत्थि सम्मखइएसुं ॥१३५॥

अत्थि सजोगिअजोगी, चउठाणस्सऽत्थि सत्तठाणस्स ।
 खीणकमायो सव्वह, सगठाणस्सऽत्थि ओघव्व ॥१३६॥

तिमणवयकायुरलदुग-कम्मणसुक्कासु आहारे । (उपगीतिः)
 चउठाणस्स सजोगी, सत्तरसऽण्णासु ओघव्व ॥१३७॥

साइअधुवाणि सग-चउ-सत्ताठाणाणि अत्थि एमेव ।
 सव्वासुं णेयाइं, सप्पाउग्गाणि ठाणाणि ॥१३८॥

कालो भिन्नमुहुत्तं, सगठाणस्स दुविहो तह जहण्णो ।
 चउठाणस्सुककोसो, देसूणा पुव्वकोडी उ ॥१३९॥

समयोऽत्थि लहू पणमण-वयकायुरलेसु सत्तठाणस्स ।
 जेट्ठो भिन्नमुहुत्तं, दुविहो सेसासु ओघव्व ॥१४०॥

चउठाणस्स जहण्णो, समयो तिमणवयकायुरलेसुं । (गीतिः)
 कालो भिन्नमुहुत्तं, जेट्ठो समयो लहू उरलमीसे ॥१४१॥

जेट्ठो दुखणा कम्मे, दुहा तिसमया लहू अणाहारे ।
 जेट्ठो भिन्नमुहुत्तं, दुविहो ओघव्व सेसासुं ॥१४२॥

अंतरमत्थि ण सगचउ-सत्ताठाणाण एवमेव भवे ।
 सगचउठाणाण कमा, छत्तीसाअ गुणतीसाए ॥१४३॥

णियमाऽत्थि संतकम्मा, चउठाणस्स खलु सत्तठाणस्स ।
 भजणीआ भजणीआ, छत्तीसाअ सगठाणस्स ॥१४४॥

भजणीआ ओरालिय-मीसे कम्मे तहा अणाहारे ।
 चउठाणस्स हवेज्जा, णियमा-उण्णासुं छवीसाए ॥१४५॥
 णेया अणंतभागो, मगचउठाणाण संतकम्मेवं ।
 कायउरलदुगकम्मअ- चक्खुभवाहारइयरेसुं ॥१४६॥
 सप्पाउग्गाण दुणर- मणपज्जवमंजमेसु संखंसो ।
 गयवेए अकसाये, अहखाये सत्तठाणस्स ॥१४७॥
 संखंसो संखमा, चउठाणस्सऽत्थि केवलदुगे णो ।
 णेया असंखभागो, सप्पाउग्गाण सेसासुं ॥१४८॥
 संखाऽत्थि संतकम्मा, मगचउठाणाण एवमखिलासु ।
 लोगासंखंसे मग-ठाणस्सेवं छतीसाए ॥१४९॥
 चउठाणस्स हवेज्जा, केवलखेत्तम्मि संतकम्मा उ ।
 तिमणवयुरलदुगेसुं, आहारे जगअसंखंसे ॥१५०॥
 णेया लोगामंखिय-भागेसुं अहव सव्वलोगम्मि ।
 कम्माणाहारेसुं, ओघव्व हवेज्ज सेसासुं ॥१५१॥
 लोगासंखियभागो, मगठाणस्सऽत्थि संतकम्मेहिं ।
 फुमिओ एवं सव्वह, चउठाणस्स य मयल्लोगो ॥१५२॥
 लोगासंखियभागो, तिमणवयुरलदुगेसु आहारे ।
 चउठाणस्स फरिसिओ, हवेज्ज अण्णह अखिल्लोगो ॥१५३॥
 कालो भिन्नमुहुत्तं, दुविहो सत्तण्ह संतकम्माणं ।
 एवं सव्वासु णवरि, लहू खणो बारजोगेसुं ॥१५४॥

सव्वद्धा चउठाण-स्सेवं सव्वह परं उरलमीसे ।
 कम्मे षाइअसंत-व्व दुहिगजीवव्व-अणाहारे ॥१५५॥
 सगठाणस्स उ समयो, लहुमंतरमत्थि संतकम्माणं ।
 छम्मासा होइ गुरुं, चउठाणस्संतरं णत्थि ॥१५६॥
 सव्वासु लहुं समयो, सगठाणस्सअत्थि संतकम्माणं ।
 जेट्ठं वासपुहुत्तं, माणुस्सी-तुरिअणाणेसुं ॥१५७॥
 ओहिदुगे बोद्धव्वं, वासपुहुत्तमहवा अहियवासो ।
 छम्मासा सेमासुं, बत्तीसाए मुण्येयव्वं ॥१५८॥
 तीसु खणो चउठाणस्स लहुसुरलमीसकम्मणेसु गुरुं ।
 वासपुहुत्तं मासा, छ अणाहारे ण सेमासुं ॥१५९॥
 भावेणोदइएणं, सगचउठाणाण अत्थि सत्तेवं ।
 सगचउठाणाण कमा, छत्तीसाअ गुणतीसाए ॥१६०॥
 थोवाअत्थि संतकम्मा, सगठाणस्स खलु ताउ संखगुणा ।
 चउठाणस्सअत्थि तओ, अट्ठाणस्स य अणंतगुणा ॥१६१॥
 मणुयदुपणिदियतसति-मणवयसुक्कासु सम्मखइएसुं ।
 सगचउअट्ठाणाणं, कमाअप्पसंखियअसंखगुणा ॥१६२॥
 दुमणुस्सअंजमेसुं, णरव्व परमत्थि अट्ठाणस्स ।
 संखगुणोघव्व भवे, कायुरलभवीसु आहारे ॥१६३॥
 सगठाणस्स खलु दुमण-वयणतिणाणोहिचक्खुमण्णासुं ।
 थोवा ताओ णेया, असंखियगुणाअट्ठाणस्स ॥१६४॥

चउठाणस्स उरालिय-मीसे कम्मे तहा अणाहारे ।
 थोवा हवन्ति ताओ, अडठाणस्स य अणंतगुणा ॥१६५॥
 सगठाणस्स अवेए, अडठाणस्स अकमायअहखाये ।
 थोवा ताओ कमसो, संखगुणाऽणचउठाणाणं ॥१६६॥
 सगठाणा मणणाणे, संखगुणा अणयणे अणंतगुणा ।
 होअन्ति संतकम्मा, अडठाणस्स ण उ सेसासुं ॥१६७॥
 तइए भूओगारे, अहिगारम्मि हविरे दुआराइं ।
 तेरस संतपयं तह, सामी कालंतराईं च ॥१६८॥
 भंगविचयो य भागो, परिमाणं खेत्तफांसणाउ तहा ।
 कालो अंतरभावा, अप्पाचहुगं जहाकमसो ॥१६९॥
 मूलपयडीण सत्ता, अप्पयराऽवट्ठिआऽत्थि तिणरेसुं । (गी.)
 दुपणिंदियतसपणमण-वयकायउरलअवेअअकसाये ॥१७०॥
 णाणचउगदंमणतिग-संजमअहखायसुक्कभविसम्मे । (गीतिः)
 खाइअसण्णाहारे, ओघव्व अवट्ठिआ च्च सेसासुं ॥१७१॥
 सामित्ताईसु तइअ-संतव्व अवट्ठिआअ होइ परं । (गीतिः)
 तइअम्मि कालदारे, ओहे भविण य साइसंतो वि ॥१७२॥
 भिन्नमुहुत्तं हस्सो, जेट्ठो देसुणपुव्वकोडी सो ।
 दुविहो भिन्नमुहुत्तम-णयणे समयो लहू काये ॥१७३॥
 तुरिए अंतरदारे, ओहे छत्तीसतिमणुयाईसुं ।
 जहि अप्पयरा तहि खलु, भवे दुविहमंतरं समयो ॥१७४॥

संखंमा गयवेए, अकसायग्मि अहसायगे जत्थ । (गीतिः)
 तेत्तीसाएऽप्पयरा ऽण्णह अड्ठाणव्व तत्थ णऽण्णासुं ॥१७५॥
 अप्पयराए खीणस-जोगी दुमणवयणाणचउगेसुं ।
 दंसणतिगसण्णीसुं, खयमोहोघव्व सेमासुं ॥१७६॥
 ओहेणाएसेण वि, अप्पयराअ दुविहो खणो कालो ।
 दुविहमवि अंतरं खलु. भिन्नमुहुत्तं मुणेयव्वं ॥१७७॥
 पणमणवयकायउरल-चउणाणतिदंसणेसु सण्णिग्मि ।
 णंतरमोघव्वऽण्णह, सगठाणव्व पणदारेसुं ॥१७८॥
 ओहाएसेहि लहू. कालो समयोऽत्थि संखसमयाऽण्णो ।
 सगठाणव्व हवेज्जा, अंतरभावऽक्खदारदुगे ॥१७९॥
 ओहेणाएसेण वि, छत्तीसाए अवट्ठिआएऽत्थि ।
 भागप्पमाणगुणिआ, अप्पयराओ ण सेमासुं ॥१८०॥
 तुरिए पयणिक्खेवे, अहिगारं तिण्णि हुन्ति दाराइं ।
 संतपयं सामित्तं, अप्पावहुगं ति जहकमसो ॥१८१॥
 मूलपयडीण संते, दुविहा हाणी दुहा अवट्ठाणं ।
 जासुं छत्तीसाए. अप्पयरा तासु एमेव ॥१८२॥
 पढमसमये सजोगी, गुरुहाणिं कुणइ गुरुमवट्ठाणं ।
 दुइअसमये सजोगी, दुमणवयणाणचउगेसुं ॥१८३॥
 दंसणतिगसण्णीसुं, गुरुहाणिं खीणमोहपढमखणे । (गीतिः)
 तयणंतरमवठाणं, ओघव्व गुरुदुपयाण सेमासुं ॥१८४॥

स्वोपज्ञहीरसौभाग्यभाव्यसंवलिता मूलपयडिसत्ता [१५

लहुहाणिमज्जसमये, खीणकसायो लहुं अवट्ठाणं ।

दुइअसमयम्मि सो चिअ, दुपयाणेमेव सव्वासुं ॥१८५॥

हाणि-अवट्ठाणाइं, गुरूणि दोण्णि वि समाणि णेयाणि ।

तुल्लाणि दो लहुणि वि, एमेव भवे छतीसाए ॥१८६॥

वड्डीए णेयाइं, अहिगारे पंचमे दुआराइं ।

तेरस संतपयं तह, सामी कालंतराइं च ॥१८७॥

भंगविचयो य भागो, परिमाणं खेत्तफोसणाउ तहा ।

कालो अंतरभावा, अप्पावहगं जहाकमसो ॥१८८॥

संखेज्जभागहाणी, अवाट्ठा तह कमाऽत्थि वड्डीए ।

भूगारे जहविहिअं, अप्पयराऽवट्ठा सत्ता ॥१८९॥

इति मुनिश्रीवीरशेखरविजयरचितं

सत्ताविधानं

(सत्ताविधानं)

तत्थ

स्वोपज्ञ-

हीरसौभाग्यभाव्यसंवलिता

मूलपयडिसत्ता

(मूलप्रकृतिसत्ता)

समाप्ता

इति
मुनिश्रीवीरशेखरविजयरचितं
सत्ताविधानं
(सत्ताविधानं)

तत्थ
मूलपयडिसत्ता
(मूलप्रकृतिसत्ता)

तथा
तत्र
स्वोपज्ञ-
हीरसौभाग्यभाष्यम्

तथा
स्वोपज्ञ-
हीरसौभाग्यभाष्यसंवलित
मूलपयडिसत्ता
(मूलप्रकृतिसत्ता)

समाप्ता

अथ प्रथमं परिशिष्टम्

मूलगाथाद्यांशाः

प्रकारादिक्रमेण मूलप्रकृतिसत्तामूलगाथाद्यांशाः

अनु. गाथाद्यांशाः गाथाङ्काः

अ	
१ अंतरमत्थि ण सगच्चउ०	१४३
२ अकसाये मणणाणे,	६८
३ अजए अचक्खुतिअसुह०	७४
४ अट्ठण्ह अंतरं खलु,	६८
५ अट्ठण्ह अणंतंसो,	५७
६ अट्ठण्ह अणंतगुणा०	१०८
७ अट्ठण्ह अणाहारे,	२६
८ अट्ठण्ह असंखाऽण्ह,	६९
९ अट्ठण्ह भवे कालो,	६०
१० अट्ठण्ह वि कम्माणं,	३३
११ अट्ठण्ह वि कम्माणं,	१८
१२ अट्ठण्ह वि कम्माणं,	८
१३ अट्ठण्ह संतकम्मा,	६१
१४ अट्ठण्ह संतकम्मा,	५२
१५ अट्ठण्ह संतकम्मा,	६५
१६ अट्ठण्ह संतकम्मा,	४६
१७ अट्ठण्ह सव्वलोए०	७१
१८ अट्ठण्ह सव्वलोगो,	८०
१९ अट्ठण्होघठव भवे,	१६
२० अत्थि अह सत्त चउरो,	१३१
२१ अत्थि सजोगिअजोगी,	१३६

अनु. गाथाद्यांशाः गाथाङ्काः

२२ अद्धतइअसयवासा,	६४
२३ अपयराए खीणस०	१७६
२४ अहखाये घाईणं,	९३
२५ अह विण्णोयाणि पयडि०	६
आ	
२६ आहारदुगे छेए,	४७
२७ आहारदुगे समयो,	१००
२८ आहारेऽणाहारे,	६७
इ	
२९ इइ मग्गणाऽहिकाउं,	५६
३० इह खलु ओहेण तहा,	३
उ	
३१ उरलदुगकम्मणणपुम०	६६
ए	
३२ एमेव अघाईणं,	११२
३३ एवं मोहस्स दुमण०	११०
ओ	
३४ ओरालिये अवेए,	३८
३५ ओहाएसेहि लहू,	१७६
३६ ओहिदुगे अहियसमा,	१०६
३७ ओहिदुगे बोद्धव्वं,	१५८
३८ ओहेणाएसेण वि,	१७७

अनु. गाथाद्यांशाः गाथाङ्काः

३६ ओद्देणाएसेण वि, १८०
क

४० कायउरलदुगकम्मण० १०६

४१ कायुरलअवेएसुं, १३२

४२ काये ओरालदुगे, ५६

४३ काये ओराले तह, ११८

४४ कालो भिन्नमुहुत्तं, १५४

४५ कालो भिन्नमुहुत्तं, १३१

४६ किण्हाएऽत्थि तिभागो० ६४

४७ केवलदुगे चउण्हं ३२

ग

४८ गयवेअव्व हवेज्जा, १२७

४९ गयवेए अकसाये, ४८

५० गयवेए अकसाये, २३

५१ गयवेए अकसाये, १२४

५२ गयवेए अकसाये, ११

५३ गयवेए अकसाये, १११

घ

५४ घाईण अघाईणं, ७६

५५ घाईण अणाहारे, २१

५६ घाईण अहसखाये, ५८

५७ घाईणं ओव्व ति० १३

५८ घाईणं गयवेए, ८६

५९ घाईणं संखंसा, ५४

६० घाईणं संखगुणा, १२१

६१ घाईण कम्मणे खलु, ३१

६२ घाईणऽत्थि असत्ता, १०

६३ घाईण मिच्छसासण- १७

अनु. गाथाद्यांशाः गाथाङ्काः

च

६४ चउठाणस्स उरालिय० १६५

६५ चउठाणस्स जहण्णो, १४१

६६ चउठाणस्स हवेज्जा. १५०

६७ चउहा दुअणाणाजय० १६

६८ चत्तारि केवलदुगे, १३४

छ

६९ छण्ह णियमाऽज्जसंते, ३४

७० छसु वि फुसिअमखिलजगं, ८७

७१ छेए परिहारे लहु० १०२

ज

७२ जेट्ठो दुखणा कम्मे, १४२

ण

७३ णरदुगणिदितसतिमण. ११५

७४ णादुपणिदितसतिमण० ५३

७५ णव भागाऽत्थि करिसिआ, ८५

७६ णवरं भागदुआरे, १३५

७७ णवरि अघाईण सयल० ८२

७८ णाणचउगदंसणणिग० १७१

७९ णियमा असंतकम्मा, ४६

८० णियमा घाईण उरल० ५१

८१ णियमाऽत्थि संतकम्मा. १४४

८२ णियमिगअघाइसंते, ३५

८३ णियमिगअघाइअसंते, ४४

८४ णियमिगअघाइअसंते० ४५

८५ णियमेगअघाइसंते, ४०

८६ णिरयचरमणिरयेसुं, ८१

अनु. गाथाद्यांशाः गाथाङ्काः

- ८७ गोया अणतभागो, १४६
 ८८ गोया असंख्यभागा, ६२
 ८९ गोया लोगासंख्य० १५१
 त
 ९० तद्वै भूओगारे, १६८
 ९१ तत्तो असंतकम्मा, १२५
 ९२ तत्थ चउविहा सत्ता, २
 ९३ तस्स चिअ संतकम्मा, १२०
 ९४ तस्स चिअ संतकम्मा, ११४
 ९५ तिणारदुपंचिदियतस० ६
 ९६ तिमणवयकायुरलदुग. १३७
 ९७ तिमणुयदुपणिदियतस० ४२
 ९८ तिमणुयदुपणिदियतस. ५०
 ९९ तिमणुयदुपणिदियतस- २८
 १०० तिरिये तह एगिदिय० ६०
 १०१ तीसु खणो चउठाणम्स १५६
 १०२ तुरिए अंतरदारे, १७४
 १०३ तुरिए पयणिकखेवे, १८१
 १०४ तेसु पयणिकखेवे, ५
 १०५ तो तस्स संतकम्मा, ११६
 थ
 १०६ थोवा असंतकम्मा, ११३
 १०७ थोवा असंतकम्मा, १२२
 १०८ थोवाऽत्थि संतकम्मा, १२८
 १०९ थोवाऽत्थि संतकम्मा, १६१
 द
 ११० दंसणतिगसण्णीसु, १८४

अनु. गाथाद्यांशाः गाथाङ्काः

- १११ दुइअचरमाण एवं, ३
 ११२ दुइआइणिरयणणे, ८४
 ११३ दुमणवयणचउणाणति. १३३
 ११४ दुमणवयणचउणाणति. ७०
 ११५ दुमणवयणचउणाणति. ८६
 ११६ दुमणवयणचउणाणति. ७८
 ११७ दुमणवयणचउणाणति. ३६
 ११८ दुमणवयणचउणाणति. १०४
 ११९ दुमणवयणजोगेसुं, ५५
 १२० दुमणवयणाणदंसण- १०५
 १२१ दुमणुस्ससंजमेसुं, १६३
 १२२ देसूणपुव्वकोडी, २४
 १२३ देसूणपुव्वकोडी, २६
 प
 १२४ पंचसु अणुत्तरेसुं, ८३
 १२५ पढमसमये सजोगी, १८३
 १२६ पणमणवयकायुरल- १७८
 १२७ पत्तेअवणम्मि तहा, ७३
 १२८ परिहारम्मि जहण्णो, ६५
 ब
 १२९ बीए खलु अहिगारे, १२६
 भ
 १३० भंगविचयो उ मागो, १३०
 १३१ भंगविचयो उ मागो, ७
 १३२ भंगविचयो य मागो, १६६
 १३३ भंगविचयो य मागो, १८८
 १३४ भजणीया ओराळिय. १४५

४]

प्रथम परिशिष्टम्

मूलगाथायांशाः

अनु. गाथायांशाः गाथाङ्काः

१३५ भावेणोदङ्गणं, १६०

१३६ भ वेणोदङ्गणं, १८७

१३७ भिन्नमुहुत्तं विक्कियं ६१

१३८ भिन्नमुहुत्तं हस्सो, १७३

म

१३९ मणणाणाचक्खुसुं, १२६

१४० मग्गुयदुपणिदियतमत्ति, १६२

१४१ मग्गुयव्वड्ढावहुगं, ११७

१४२ मूलपयडिसत्ताए, ४

१४३ मूलपयड्ढीग सत्ते, १८२

१४४ मूलपयड्ढीण सत्ता, १७०

१४५ मोहअसंते ण्हं, ४३

१४६ मोहस्स लहू समयो, ६६

१४७ मोहस्स लहू समयो, ३०

१४८ मोहस्स हवेज्ज दुमणं ११६

१४९ मोहस्सुवसंतंता, १२

ल

१५० लहुहाणिमज्जसमये, १८५

१५१ लोगासंखंसेसुं, ७६

१५२ लोगासंखियभागो, ७७

१५३ लोगासंखियभागो, ७५

१५४ लोगासंखियभागो, १०३

१५५ लोगासंखियभागो, ८८

१५६ लोगासंखियभागो, १५२

व

१५७ वड्ढीए सोयाइं, १८७

स

१५८ संखंसा गयवेए, १७५

१५९ संखंसो संखंसा, १४८

१६० संखाडत्थि संतकम्मा, १४६

१६१ संखेज्जभागहाणी, १८६

अनु. गाथायांशाः गाथाङ्काः

१६२ संतस्स सण्णयासो, ३७

१६३ सगठाणस्स अवेए, १६६

१६४ सगठाणस्स उ समयो, १५६

१६५ सगठाणस्स खलु दुमणं १६४

१६६ सगठाणा मणणाणो, १६७

१६७ सत्ताअ अत्थि दुविहो, २२

१६८ सत्ताविहाणमुक्क, १

१६९ सप्पाउग्गाण दुणां १४७

१७० समयो गुहं छमासा, १०१

१७१ समयो चाईण उरलं ६७

१७२ समयोडत्थि लहू पणमणं १४०

१७३ समयो हस्सं जेट्ठं, ६६

१७४ सम्मत्तखाइसुं, २५

१७५ मयलज्जो तिरिसव्वे ७२

१७६ सव्वद्धा चउठाणं १५५

१७७ सव्वासु मग्गणासुं, २७

१७८ सव्वासु लहुं समयो, १५७

१७९ सव्वे वि अवाईणं, १५

१८० सव्वे वि अवाईणं, १४

१८१ माइअधुवाणि सगचउ. १३८

१८२ साइधुवाडत्थि असत्ता, २०

१८३ सामित्ताईसु तइअ १७२

१८४ सुहमम्मि लहुं समयो, १०३

१८५ सुहुमापज्जेगिंदियं ६३

१८६ सेसासु एगसंते, ४१

ह

१८७ हाणिअवट्ठाणइं, १८६

१८८ हुन्ति चउअवाईणं, १२३

१८९ होइ लहुं आहारे, २९

अथ द्वितीयं परिशिष्टम् भाष्यगाथाद्यांशाः

अकारादिक्रमेण मूलप्रकृतिसत्तासत्कहीरसौभाग्यभाष्यगाथाद्यांशाः

अनु. गाथाद्यांशाः गाथाङ्काः अनु. गाथाद्यांशाः गाथाङ्काः

अ

- १ अंगुलअसंखभागो, ६४
२ अंगुलसूइदुइअवग० १५३
३ अणियट्टिवायरंता, ५१
४ अणुओगप्पणवणा० १५२
५ अण्णाणदुगम्स तहा. ८८
६ अण्णे तिकमायाणं, ६४
७ अत्थि पढमगुणठाणं, २११
८ अत्थि समुग्घाएणं, २६३
९ अद्धतइअपरिअट्टा, ६८
१० अममत्तपणिदितिरिय. १६४
११ अह पंचसंगहाइसु. १५४
१२ अहवुवसंता-ऽण्णा तो, १०३
१३ अहवेगिदियभूदग० १८७
१४ अहवेगिदियभूदग० २१६
१५ अह सत्त्वमग्गणाणं, २५७

आ

- १६ आइमपवेसगदुइअ० १६८
१७ आहारदुगे सुहमे, १६५

इ

- १८ इइ मूलमग्गणा सिं, २६

उ

- १९ उववज्जंता-ऽण्णह वि य, २३७
२० उवसंतस्त्रीणमोहा, ५२

ऊ

- २१ ऊणजगमिगक्खववण० २५१
२२ ऊणा घणावली उण, १७४

ए

- २३ एए गुरुओऽणंतअ० २१०
२४ एए गुरुओऽत्थि पढम. १४६
२५ एए जाणेयठ्ठा, १८१
२६ एगिदियव्व पुढवी० ३०
२७ एगिदियो तहा से, २६
२८ एगो जहण्णओ खलु, १८९
२९ एगो पुणो हवेज्जा, १८२
३० एत्तो एगेगहिया, ६३

ओ

- ३१ ओघव्व तिण्णाणावहि० २४४
३२ ओघव्व दुइअआइग० १८५
३३ ओहस्स तिविहमवि तह २४९
३४ ओहस्सऽत्थि सठाणुव. २५५
३५ ओहिदुगवेअगेसुं, १२४

अनु. गाथायांशाः गाथाङ्काः

३६ ओहे गुणठाणे-ऽउजे, २३२

क

३७ कमसो कोहे माया, १४१

३८ कमसोऽस्थि वायरागणि, १३३

३९ कमसो पउमतिरिक्खी, १२८

४० कम्माणाहारेसु, १९०

४१ कायठिई उक्कोसा, ४४

४२ कायठिई णायव्वा, ८४

४३ कालं तु वट्टमाणं, २४७

४४ किण्हाए णीलाए, २४५

४५ किण्हा नीला काऊ, ३५

४६ केइ उण वित्ति हवए, ८२

४७ केवलदुगखइआणं, ७४

४८ केवलदुगखइएसुं, २०४

४९ केवलदुगे उ तेरस० १६९

५० केवलदुगे सजोगी, ५०

५१ केवलिआणं खेत्तं, २४८

५२ केवलिखित्तापमाणं, २४४

५३ कोहिपुहुत्तं गोया, ११७

५४ कोहिपुहुत्तं गोया, १८०

५५ कोडिमहस्सपुहुत्तं, ६८

५६ कोडिमहस्सपुहुत्तं, १४८

५७ कोडिमहस्सपुहुत्तं, ११६

५८ कोडिमहस्सपुहुत्तं, १७६

ख

५९ खइअस्स भवत्थस्स य, ७५

अनु. गाथायांशाः गाथाङ्काः

६० खइएण णिगमा दुसु, २३१

ग

६१ गइइंदियाणि कायो, ०५

६२ गइजाइतणु उयंणा, १०

६३ गमणागमणेणं अड, २६८

६४ गयवेअकसायाणं, ७०

६५ गयवेए अकसाए, २२७

६६ गयवेए अकसाए, ११५

६७ गयवेए अकसाए, १७८

च

६८ चउहा पत्तेगमणअ० ८

६९ चरमणिरयदुपणिदिय, २२१

छ

७० छउमत्था-ऽऽसिउजेगो, १८३

७१ छपणणदुमयमूइअ० १६७

७२ छेअगपरिहारणं, २६२

७३ छेए परिहारे तह, २३६

ज

७४ जहि अत्थि उ दुइअपहुडि, २१२

७५ जीवा असंखसेढी, १०६

७६ जीवा गोया भिच्छा० ३७

७७ जीवा पणिदियतिरिय, १६२

७८ जोगिअपमत्तइयरे, १०४

ण

७९ णत्थि पणमणवयउरल० २६१

८० ण पवेसगा-ऽखिलणिरय, २१४

८१ ण पवेसगा-ऽदुमगुणे, २३०

अनु. गाथाद्यांशाः गाथाङ्काः

८२ ण पवेसगा-ऽट्टमाङ्ग०	२२८
८३ ण पवेसगा-ऽट्टमाङ्ग०	२२९
८४ ण पवेसगा णरतिगे	२२४
८५ ण पवेसगा-ऽत्थि संखा,	२२३
८६ ण पवेसगा हन्ते,	२२६
८७ णवरं पगमणवयुरल०	२३५
८८ णवरि दुविहमखिलजगं,	२५२
८९ णव सुरईसाणावहि०	२६५
९० णाणइयरतिगअजयति०	२६९
९१ णाणतिगे ओहिम्मि य,	४९
९२ णाणम्म दंसणस्स य,	२
९३ णिअबारसदसमऽट्टम०	१५५
९४ णिहा णिहाणिहा,	५
९५ णिरयतिरिक्खमणुससुर०	२१
९६ णिरयतिरिणरसुरगई,	१५
९७ णिरयो भूभेआ सग०	२७
९८ णीलाइचउण्ह कमा,	७८
९९ णेया अधुवपयसमा,	१६
१०० णेया असंखलोगा,	१७५
१०१ णेया असंखलोगा,	११३
१०२ णेया उ असंखेज्जा,	५७
१०३ णेया जहण्णजेट्ठा,	१८४

त

१०४ तइअगुणिअ-ऽज्जसूई० १६५

१०५ तइअगुणे विण पणमण० २१३

अनु. गाथाद्यांशाः गाथाङ्काः

१०६ तइअसुरदुगे सेगार०	१७२
१०७ तइआईसुदुसु दसम०	२०५
१०८ तत्तो मीसे संखिय०	१०३
१०९ तत्थ वि णेयोहे सह,	२४०
११० तत्थ वि मयंतरेणं,	१६६
१११ तसवायरपज्जत्तं,	१२
११२ तह आहारस्सऽत्थि छ,	२७०
११३ तह दाणलाहभोगो०	२२
११४ तहऽपुअकरणत्ती,	३८
११५ तहि वि तिणारेसु संखा,	१८६
११६ ताउ अणंतगुणा खलु,	१३७
११७ ताउ अपज्जत्तणरे,	१२६
११८ ताउ अपज्जसुहमभू०	१३४
११९ ताउ असंखगुणा-ऽन्तिम०	१२५
१२० ताउ असंखेज्जगुणा,	१०२
१२१ ताउ कमसो सज्जोगिअ०	१०१
१२२ ताउ कमा-ऽणंतगुणा,	१३६
१२३ ताउ कमा-ऽणयकप्पं,	१२२
१२४ ताउ कमा भविय-पणग०	१४३
१२५ ताउ भवत्था-ऽवेए,	१२०
१२६ ताउ मणे-ऽअभहियातो,	१४६
१२७ ताउ विसेसहिया-ऽगणि०	१३५
१२८ ताउ चउईदियपज्जे,	१२९
१२९ तिकुलेसामिच्छभविय०	१०८
१३० तिकुलेसामिच्छभविय०	१५७

अनु. गाथाद्यांशाः गाथाङ्काः
 १३१ तिणरदुपंचिदियतस. २५३
 १३२ तिणागणयाइगेसुं, २१६
 १३३ तिणिण य तेअजुभाणं, १७
 १३४ तिपणिदियतिरियाणं, ५८
 १३५ तिमणवयणकायेसुं, ४३
 १३६ तिरिदुपणिदितिरिणपुम. २२०
 १३७ तिरियपणिदि-पणिदि-अ. १३१
 ३३८ तिरिये सव्वेगिंदियं १०७
 १३९ तिरिये सव्वेगिंदियं १५६
 १४० तेर पण बार भागा, २६६
 १४१ तेसि उत्तरपयडी, ३
 १४२ तो कम्मे-ऽणाहारे, १३९
 १४३ तोऽणंतगुणा सिद्धा, १०५
 १४४ तो पत्तेअपुहबिदग. १३२
 १४५ तो संखगुणा दुमणुयं १२१
 थ
 १४६ थावरदसगं थावरं १३
 १४७ थीपुमणपुमअवेआ, ३३
 १४८ थीपुरिसणपुमवेआ, ९
 १४९ थूलअपज्जणिगोए, १३८
 १५० थोवा-ऽत्थि विउवमीसे, १४५
 व
 १५१ दुअणाणाजयअणयण. २५०
 १५२ दुअणाणाजयमिच्छाण ७६
 १५३ दुइआइगणिरयाणं, ८५
 १५४ दुइआ चेव हवेज्जा, ७१
 १५५ दुपणिदितसणयणियर. २२५

अनु. गाथाद्यांशाः गाथाङ्काः
 १५६ दुपणिदितसणयणियर. २४१
 १५७ दुपणिदितसेसु तहा, २१५
 १५८ दुमणवयणजोगेसुं, ४४
 १५९ दुमणुयसव्वत्थेसुं, १११
 १६० दुविहो चरित्तमोहो, ७
 १६१ देवभणवइवंतरं २८
 १६२ देसूणपुव्वकोडी, ७७
 १६३ दोणिण हवेज्जा जलही, ६०
 १६४ दो सागरा सहस्सा, ८३
 प
 १६५ पंचमगुणठाणे चउं २२२
 १६६ पंचिदियचवखूणऽहिं ६७
 १६७ पज्जगसुहमणिगोए, १४२
 १६८ पज्जतसे संखगुणा, १३०
 १६९ पज्जत्तगतेइंदियं ६६
 १७० पज्जत्तपणिदितिरियं १६४
 १७१ पज्जत्तमेअवज्जिअं ८६
 १७२ पढमणिरयगेविज्जयं २६४
 १७३ पढमतितणूबंगा, १६
 १७४ पढमाइगणिरयाणं, ५६
 १७५ पणमणवयणविउवदुगं ११०
 १७६ पणमिय सिरिणवखण्डां १
 १७७ पत्तेअवणो तस्स य, ३१
 १७८ पल्लियस्स अट्टभागे, ८६
 १७९ पल्लासंखंसो पज्जं २०८
 १८० पल्लासंखंसो पणं १५१
 १८१ पल्लासंखियभागे, ११२

अनु. गाथाद्यांशाः गाथाङ्काः

१८२ पल्लासंख्यभागो, १७३

१८३ पिण्डपयडित्ति चउदस, ११

१८४ पिण्डपयडिण चउपण० १४

व

१८५ बायरपज्जरहिअभू० २०७

१८६ बायरपज्जेगिंदिय० ६५

१८७ बावीससहस्ससमा, ६६

भ

१८८ भज्जं पयरं अंगुल० १६३

१८९ मयणीअपयस्स ठुवे, ६५

१९० भवण-पद्मणिारयेसुं, १२७

१९१ भवणस्स साहियुदही, ६१

१९२ भवणो-उज्जवग्गमूला. १७०

१९३ भवणे पण्णवणाए, १६६

१९४ भिन्नमुहुत्तं तु सयल० ८७

म

१९५ महसुअडवहिमणकेवल० ४

१९६ मग्गणपवेसगियरा, २००

१९७ मग्गणपवेसणिग्गमग्गठवर३४

१९८ मज्झिम्मि सुक्कलेसा० १४४

१९९ मज्झिमजुत्ताणंता० ६९

२०० मज्झिमजुत्ताणंता० १५०

२०१ मज्झिमणंताणंतग० ९७

२०२ मज्झिमणंताणंतग० १४७

२०३ मणणाणसंजमाणं, ७३

अनु. गाथाद्यांशाः गाथाङ्काः

२०४ मणणाणोहिदुगविभंग० ६३

२०५ मणवयणा सिं भेआ, ३२

२०६ मयदुगमेवं भवणो, २०१

२०७ मिच्छत्ती सासाणा, ४५

२०८ मिच्छाईअजोगंता, ४२

२०९ मिच्छाईदेसविरय० ४०

२१० मिच्छाई सुहमंता, ४८

२११ मिज्जंता चिअ संखा, २३३

२१२ मिज्जंताण विउवमीस० २३८

२१३ मिज्जंतोघठव पुमे, २४३

२१४ मूला-उज्जाउसंखगुणा, १७६

ल

२१५ लंतगदेवाईणं, ९१

२१६ लहुओ एगो दुइए, १८८

२१७ लहुओ तुरिआइचउग० १६२

२१८ लोगासंखंसो उ अ० २६७

२१९ लोगासंखियभागो, २०९

व

२२० वग्गो ण पंचसंगह० १६८

२२१ वणकाये पत्तोए, १९७

२२२ विउवे तुरिए सोया, २४२

२२३ विक्कियमीसे हुन्ते, ४६

२२४ वेअकसायतिगे खलु, ४७

२२५ वेउठवदुगस्स तहा, ६०

२२६ वेउठवियमीसमुइल० २६०

अनु. गाथायांशाः गाथाङ्काः

स

२२७ खंखगुणाऽऽहारदुगे.	११६
२२८ संखाऽत्थि दुणर-भाणय.२०२	
२२९ संखेज्जकोडिकोडी,	१६६
२३० संघयणं छद्धा वज्ज०	४८
२३१ संजमसामइभाइ,	३४
२३२ सत्तं पडुच्च एआ,	२३
२३३ सद्धिगसद्धदुसद्धति०	२५६
२३४ समइभच्छेएसु तहा,	२०३
२३५ समचउरंसं णिगोह०	१६
२३६ समजीवअसंखंसा,	१५९
२३७ समजीवअसंखंसो,	२०६
२३८ समजीवअसंखंसो,	१६०
२३९ समजीवणंतभागा,	१५८
२४० समयोऽत्थि पणमणवयण.६२	
२४१ सम्मस्स भवत्थस्स उ, ८०	
२४२ सम्माई सिद्धंता,	५३
२४३ सम्माणाहाराणं,	७६
२४४ सयमुज्झा दुइअगुणे, २१८	
२४५ स वि लोहे-ऽन्वहियो १६१	
२४६ सव्वणिरयभेएसुं,	३६
२४७ सव्वत्थ एत्थ गंथे,	२५६
२४८ सव्वपणिदितिरि-विगळ १०६	

अनु. गाथायांशाः गाथाङ्काः

२४९ सव्वह गुणसिद्धेसुं,	१६३
२५० सव्वापज्जत्ताणं,	५६
२५१ सव्वेसुं एगिदिय०	४१
२५२ ससरीरन्तरभूया,	२४
२५३ सामाणे सामाणा,	५४
२५४ सासायणं च मीसं,	३६
२५५ सासायणस्स गेया,	८१
२५६ साहियछसट्टिजलही,	७२
२५७ सिद्धपमाणाऽणंता,	११४
२५८ सिद्धपमाणाऽणंता,	१७७
२५९ सुक्काए तहुवसमे,	२४६
२६० सुरणाणतिगोहिपउम० २५८	
२६१ सुरहिदुरही रसा पण,	२०
२६२ सुहमापज्जेगक्खे,	१४०
२६३ सुहमे जीवा थोवा,	११८
२६४ सेढीभो दुइअगुणिअ० १७१	
२६५ सोघव्व दुहा छेए,	१९१
२६६ सोहम्माईण कमा,	६२
ह	
२६७ हुन्ति अणंता जीवा,	२३६
२६८ हुन्ति उवसामगा-ऽप्पा, १००	
२६९ हुन्ते पवेसगियरा,	२१७
२७० होएज्ज मोहणीयं,	६

शुद्धिपत्रकम्

पृष्ठम्	पङ्क्तिः	अशुद्धिः	शुद्धिः
२	१	०विज ०	०विजय०
४	१४	अट्टण्ह साइणंतो,	केवलदुगे चउण्हं,
४	१५	तहण्णाहारे णेयो,	अट्टण्होघव्व अणा-हारे
केवलजुगले अघाईणं॥ कम्मव्व वि चउण्हं॥			
७/१०	८/१३	इह/	इइ/(गीतिः)
१६	२१	(गीतिः)	
१८/२१	१०/१३	/आवरण (गीतिः)/आवरणं	
२६/३०	२१/१७	किण्ह्वाए/मण्णाणो०	किण्हाए/मणणाणो०
३१	१	सत्ताविहाण	सत्ताविहाणं
३२/३३/३३	१९/१५/२१	णता/तओ/३६	णता/२८तओ/३६
३४	३/८/१७	टुइअ०/३६/३६	टुइअ०/६६/६६
३४	१८/२०/२२	०वाऊसु/१०६	०वाऊसु/१०६/(गीतिः)
३५	८/१७/२१	तआ/१४९/१५६	तओ/१४२/१५६
३६/३८	११/१९	/बायरपज्जत्ता-(गीतिः)/पज्जत्तबायरा०	
३९	६	२७९	१७९
४१/४२/४२	१३/२/९	/०दुगेसं/०गुआ- (गीतिः)/दुगेसुं/०गुणा-	
४२/४३	२०/१७	दुपणिदि०	दुपणिदि०
४३	९/१३/२१	(गीतिः)	
४४	३/५	(गीतिः)	
५०/५४/५७	१/१६/५	मुमि०/पच०/किण्ह्वाए	मुनि०/पंच०/किण्हाए
६४/६८	१५/४	मोह्ण०/तओ	मोह०/२८तओ
६८	१०/१८	३६/३६	३६/६६
७३	६	बायरपज्जत्ता०	पज्जत्तबायरा०
७६	१९	०गुआ-	।०गुणा-
८०/८७	१३/१	०एतहु०/संवतिता	०ए तहु०/संवलिता
७	२५	ताउ	ता

इति
मुनिश्रीवीरशेखरविजयरचितं
सत्ताविधानं
(सत्ताविधानं)
तत्थ

मूलपयडिसत्ता
(मूलप्रकृतिसत्ता)

तथा

तत्र

स्वोपज्ञ-

हीरसौभाग्यभाष्यम्

तथा

स्वोपज्ञ—

हीरसौभाग्यभाष्यसंवलित

मूलपयडिसत्ता
(मूलप्रकृतिसत्ता)

परिशिष्टद्वयोपेता

समाप्ता

